संक्षेप

साहित्य अकादेमी की द्विमासिक समाचार पत्रिका

नवम्बर-दिसम्बर 2015

झलकियाँ

बाल साहित्य पुरस्कार समारोह
•
युवा पुरस्कार समारोह
•
लेखक सम्मिलन
•
युवा पुरस्कार विजेता सम्मिलन
•
राष्ट्रीय/ क्षेत्रीय संगोष्ठी
•
परिसंवाद
•
लेखक से भेंट
•
साहित्य मंच
•
कथा/कवि संधि
•
सांस्कृतिक विनिमय
•
कार्यक्रम सूची
•
नये प्रकाशन

अकादेमी पुरस्कार की घोषणा

सचिव की क़लम से...

नवंबर का महीना साहित्य अकादेमी के दो बड़े आयोजनों का गवाह हुआ है। अकादेमी द्वारा बाल साहित्य पुरस्कार अर्पण समारोह 14 नवंबर को मुंबई में किया गया। पुरस्कार अर्पण समारोह के साथ ही बाल साहित्यकारों के सम्मिलन का भी आयोजन हुआ। 18 नवंबर को दिल्ली में युवा लेखक पुरस्कार अर्पण समारोह तथा युवा लेखक सम्मिलन का आयोजन अकादेमी द्वारा किया गया। साहित्य अकादेमी का सदैव प्रयास रहा है कि अकादेमी के आयोजनों में हर पीढ़ी के रचनाकार सहभागी हों तथा श्रोता उनसे लाभान्वित हों। जहाँ युवा रचनाकार शब्दों के नायक हैं, वहीं बच्चे किसी भी सभ्यता और समाज की रीढ़ होते हैं। नवंबर-दिसंबर 2015 के दौरान साहित्य अकादेमी द्वारा देश भर में संगोष्ठियों, परिसंवाद, जैसे महत्त्वपूर्ण कार्यक्रम के साथ ही लेखक से भेंट, साहित्य मंच तथा अकादेमी के नियमित कार्यक्रमों की एक झलक यहाँ देखी जा सकती है, जिससे हम ऊर्जावान बने रहते हैं और यह सब लेखकों, कवियों, विद्वानों एवं विचारकों के सहयोग से ही संभव हो पाता है।

साहित्य अकादेमी ने 23 भारतीय भाषाओं में अपने वार्षिक साहित्य अकादेमी पुरस्कार और कालजयी व मध्यकालीन साहित्य (पश्चिम) के क्षेत्र में योगदान हेतु भाषा सम्मान की घोषणा की। इनमें छह कविता-संग्रह, छह कहानी-संग्रह, चार उपन्यास, दो निबंध-संग्रह, दो नाटक, दो समालोचना और एक संस्मरण के लिए साहित्य अकादेमी पुरस्कार घोषित किए गए। बाङ्ला का पुरस्कार बाद में घोषित किया जाएगा। पुरस्कृत रचनाकारों को हमारी शुभकामनाएँ।

साहित्य अकादेमी का यह सौभाग्य है कि सभी भारतीय भाषाओं के रचनाकारों का सदैव सहयोग बना रहता है इसीलिए हम उत्साहपूर्वक आगे बढ़ रहे हैं।

आप सभी को नववर्ष की शुभ कामनाएँ।

डॉ. के. श्रीनिवासराव

संपादक की ओर से

रचनाकार की समाज में महत्त्वपूर्ण भूमिका होती है। समाज में जो कुछ भी घटित हो रहा होता है रचनाकार उसे अपनी रचनाओं में चित्रित करता है। शब्दों में अगर सच्चाई हो तो उसका प्रभाव निश्चित ही पढ़ने वाले पर होता है, किंतु यदि शब्दों में सच्चाई न हो, रियाकारी हो तो वे शब्द निरर्थक हो जाते हैं। आज का रचनाकार ऐसे समाज में जी रहा है जहाँ हर तरफ़ विरोधाभास है। रचनाकार की ज़िम्मेदारी आज और भी बढ़ गई है। उसे विरोधाभासों से बचते हुए समाज को सच का आईना दिखाना होता है। यह तभी संभव है जब शब्द सच्चे हों। सच की गति धीमी ज़रूर होती है लेकिन अंत में कामयाबी सच की ही होती है।

इतिहास जहाँ ख़ामोश होता है, वहाँ साहित्य हमारी मदद करता है। कभी-कभी इतिहासकार से जो बातें इतिहास में दर्ज होने से रह जाती हैं, सतर्क रचनाकार उन्हें अपनी रचना में दर्ज कर चुका होता है।

हमारा वर्तमान संघर्ष में और भविष्य अंधेरे में कहीं छुपा होता है। अपनी ज़िंदगी का आग़ाज़ ही हम जीने के लिए संघर्ष से कर रहे हैं, आपा-धापी में जी रहे हैं। जो जहाँ है अशांत है। हम भागे जा रहे हैं, लेकिन कहाँ तक? हमें खुद पता नहीं है। हम क्या कुछ पा लेना चाहते हैं, हमें खुद भी पता नहीं।

प्रस्तुत अंक में नवंबर-दिसंबर 2015 की अकादेमी की साहित्यिक गतिविधियाँ प्रस्तुत हैं। आशा है, यह अंक आपको पसंद आएगा।

आप सभी को नया साल मुबारक हो।

संपादक : डॉ. ख़ुर्शीद आलम
ई-मेल : po.ho1@sahitya-akademi.gov.in

बाल साहित्य पुरस्कार अर्पण समारोह

14 नवंबर 2015, मुंबई

साहित्य अकादेमी द्वारा बाल साहित्य पुरस्कार अर्पण समारोह का आयोजन रवींद्र नाट्य मंदिर, प्रभादेवी, मुंबई में 14 नवंबर 2015 को किया गया जिसके मुख्य अतिथि थे श्री चंद्रकांत सेठ तथा अकादेमी के अध्यक्ष प्रो. विश्वनाथ प्रसाद तिवारी ने अध्यक्षता की। अकादेमी के सचिव डॉ. के. श्रीनिवासराव ने पुरस्कृत लेखकों एवं अतिथियों का स्वागत किया। उन्होंने याद दिलाया कि बच्चे किसी की सभ्यता की रीढ़ होते हैं, उनके लिए समृद्ध साहित्य का उपयोग किया जाना चाहिए। अकादेमी के अध्यक्ष प्रो. विश्वनाथ प्रसाद तिवारी ने अपने अध्यक्षीय वक्तव्य में कहा कि अकादेमी हर 16 घंटे में एक पुस्तक का प्रकाशन करती है तथा हर 19 घंटे में एक साहित्यिक आयोजन करती है। यह दर्शाता है कि अकादेमी साहित्य के क्षेत्र में कितनी सक्रिय है। अकादेमी का मुख्य उद्देश्य समृद्ध साहित्य एवं साहित्यकार का सम्मान करना है। उन्होंने इस बात पर बल दिया कि अन्य दूसरी संस्थाओं द्वारा भी पुरस्कार दिए जाते हैं तथा अकादेमी द्वारा भी पुरस्कृत किया जाता है, लेकिन मैं इसे पुरस्कार नहीं बल्कि सम्मान कहता हूँ। उन्होंने समृद्ध साहित्य की रचना के लिए सभी लेखकों के प्रति आभार व्यक्त किया। भारतीय साहित्य एक संयुक्त परिवार को बढ़ावा देता है। इस अवसर पर 24 भाषाओं में पुरस्कृत लेखकों को सम्मानित किया गया।

मुख्य अतिथि गुजराती के लब्धप्रतिष्ठ लेखक चंद्रकांत शेठ ने कहा कि एक बच्चा भगवान का मानव रूप होता है। एक बच्चे की भाषा बिलकुल अलग होती है जो किसी भी गंदगी या प्रदूषण से मुक्त होती है। उन्होंने कहा कि बच्चे की भाषा का मुख्य स्रोत कृष्ण लीला है, पंचतंत्र और रामचरितमानस, महाकाव्य भी बाल साहित्य का चित्रण करते हैं। जीवन की दिन प्रतिदिन की दिनचर्या में इनका अद्वितीय महत्त्व है।

अध्यक्षीय भाषण देते हुए
अकादेमी के अध्यक्ष विश्वनाथ प्रसाद तिवारी

अकादेमी के सचिव डॉ. के. श्रीनिवासराव ने धन्यवाद ज्ञापन किया।

बाल साहित्य पुरस्कार अर्पण समारोह का दृश्य

लेखक सम्मिलन

15 नवंबर 2015, मुंबई

पुरस्कार अर्पण समारोह के दूसरे दिन लेखक सम्मिलन का आयोजन किया गया, जिसमें सभी पुरस्कृत लेखकों ने अपने अनुभव श्रोताओं से साझा किए। सम्मिलन की अध्यक्षता अकादेमी के गुजराती परामर्श मंडल के संयोजक शितांशु यशश्चंद्र ने किया। उन्होंने कहा कि भारत विविधताओं का देश है। बाल भाषा अद्वितीय तथा अन्य सभी भाषाओं से अलग होती है। यह राज्य, क्षेत्र या प्रांत के साथ अलग नहीं होती है।

असमिया के अली अहमद ने कहा कि सभी जातियों और समुदायों की अपनी भाषा होती है। बच्चे सबसे पहले गीत, लोरी, कहानियाँ अपनी मातृभाषा में सुनते हैं। बाङ्ला के कार्तिक घोषाल ने कहा कि बाङ्ला साहित्य में बाल साहित्य का एक बड़ा हिस्सा है। बाङ्ला में रवींद्रनाथ टैगोर से लेकर उपेंद्रकिशोर राव चौधुरी तक सभी ने बच्चों के लिए लेखन किया है। बोडो के तिरेन बोरो के अनुसार शब्दों के रूप में विचारों की अभिव्यक्ति को साहित्य के रूप में जाना जाता है लेकिन विचार सभी के लिए स्वीकार्य होना चाहिए। डोगरी के ताराचंद कलंद्री ने उन घटनाओं के बारे में बताया जिससे उन्हें एक साहित्यकार बनने का प्रोत्साहित मिला। उन्होंने अपनी पहली पुस्तक 2010 में लिखी और अब तक 100 से अधिक बाल कविताओं की रचना की।

अंग्रेज़ी के सौम्य राजेंद्रन ने कहा कि दुनिया में कोई जगह ऐसी नहीं है जहाँ बच्चों की ख़ामोशी बर्दाश्त की जाती हो। उन्हें बोलना चाहिए, उन्हें पूछना चाहिए और उन्हें कभी शांत नहीं रहना चाहिए।

हिन्दी के शेरजंग गर्ग ने कहा कि वर्तमान समय में बच्चों का बहुत-सा साहित्य मौजूद है। आकर्षक कवर और रेखाचित्र बच्चों को पुस्तकें पढ़ने के लिए आकर्षित करती हैं जो कि एक सकारात्मक लक्षण है। कन्नड के टी. एस. नागराज शेट्टी ने कहा कि बाल साहित्य मानव संस्कृति का फल है। आधुनिक साहित्य एक वृक्ष के समान है जहाँ बाल साहित्य अंकुर और फूल की तरह है, जिसके बिना पेड़ एक झाड़ है। कोंकणी के रामनाथ जी गवडे ने कहा कि कोंकणी साहित्य में पहली कहानी संस्कृत कहानी का अनुवाद थी। हम रामायण, महाभारत, पंचतंत्र के आधार पर लिखते हैं। हमें बच्चों के लिए भी लिखना चाहिए। मैथिली के रामदेव झा का कहना था कि एक बच्चे को पहली बार बोलना सिखाया जाता है उसके बाद भाषा, ज्ञान से विभिन्न

स्वागत भाषण करते अकादेमी के सचिव डॉ. के.श्रीनिवासराव तथा लेखक सम्मिलन कार्यक्रम के अध्यक्ष शितांशु यशश्चंद्र

पुस्तकों को पढ़ने की रुचि उत्पन्न होती है। मलयाळम् के एस. शिवदास ने एक लेखक का वर्णन उस ख़ूबसूरत फूल की तरह किया, जो अपनी पंखुड़ियाँ खोलकर अपनी ख़ुशबू बिखेरता है। मणिपुरी के थोङ् चोम थोएबा मेतइ ने मणिपुरी साहित्य के बारे में संक्षेप में बताया। उन्होंने कहा कि बाल साहित्यकारों को मनोरंजक एवं ज्ञानवर्धक साहित्य की रचना करनी चाहिए। नेपाली की मुक्ति उपाध्याय ने कहा कि धरती माँ प्रकृति के सुंदर आकर्षण के साथ धन्य है। उन्होंने आगे कहा कि प्रकृति और जीवन का एक-दूसरे के साथ पूर्ण सामंजस्य है। ओड़िया की स्नेहलता मोहंती का कहना था कि वर्तमान प्रवृत्ति में सकारात्मक दृष्टिकोण नहीं दिख रहा है। बाल साहित्य का भविष्य उज्ज्वल नहीं है।

पंजाबी के सुखदेव मदपुरी ने कहा कि उन्हें बाल साहित्य लिखने की प्रेरणा लोरी, लोककथाएँ सुन कर मिली। शुरू में उन्होंने उर्दू भाषा में बाल साहित्य पढ़ना शुरू किया। अध्यापन के पेशे से जुड़े होने के कारण बच्चों के विचारों का बहुत सूक्ष्मता से अनुभव किया। कृष्ण कुमार 'आशु' (राजस्थानी) का विश्वास था कि राजस्थान में बाल साहित्य के विकास का बहुत सारा काम किया जाना शेष है। संस्कृत के जनार्दन हेगड़े ने कहा कि उन्हें इस बात की चिंता है कि अन्य भारतीय भाषाओं के बाल साहित्य की अपेक्षा संस्कृत में बाल-साहित्य दिन-प्रतिदिन लुप्त होता जा रहा है। सिंधी के जेठो लालवाणी का विचार था कि बाल साहित्य समाज, देश और भाषा का आधार होता है। यह समय का दर्पण होता है। संताली के श्रीकांत सरेन का कहना था कि यदि

एक लेखक सफल होना चाहता है तो उसे लंबी अवधि तक स्वयं को एक अच्छे लेखक के रूप में स्थापित करना होगा। तमिळ के सेल्ला गणपति का विश्वास था कि बाल साहित्य तभी सफल होगा जब उसका सरोकार बच्चों की तरह होगा।

तेलुगु के चोक्कपू वेंकटरमण ने कहा कि कहानी कहना बाल साहित्य की नींव होती है। वरिष्ठ लेखक बाल साहित्य की रचना कर रहे हैं, परंतु युवा लेखकों की इसमें कोई रुचि नहीं है। उर्दू की बानो सरताज ने कहा कि वे अपने गुरु श्रीयत राय के सिद्धांतों का पालन करती हैं जिन्होंने उन्हें उर्दू-हिंदी में बाल लेखन की शिक्षा दी थी।

सम्मिलन का समापन क्षेत्रीय सचिव कृष्णा किंबहुने के धन्यवाद ज्ञापन से हुआ।

युवा पुरस्कार अर्पण समारोह

18 नवंबर 2015, नई दिल्ली

त्रिवेणी कला संगम के सभागार में आयोजित एक भव्य समारोह में साहित्य अकादेमी युवा पुरस्कार 2015, साहित्य अकादेमी के अध्यक्ष डॉ. विश्वनाथ प्रसाद तिवारी द्वारा 23 भारतीय भाषाओं के युवा रचनाकारों को प्रदान किए गए। इस अवसर पर अपना वक्तव्य देते हुए विश्वनाथ प्रसाद तिवारी ने कहा कि कोई भी पुरस्कार या राशि तो वापस की जा सकती है किंतु प्राप्त सम्मान कभी वापस नहीं किया जा सकता। यह स्वयं द्वारा अर्जित होता है और समाज यानी 'लोक' की इसमें महत्त्वपूर्ण भूमिका होता है। लेखक का दायित्व केवल बेहतर लिखना ही होना चाहिए। पुरस्कृत युवा रचनाकारों को बधाई देते हुए उन्होंने कहा कि मैं उनके लेखन में प्रौढ़ता पाता हूँ जो कि बहुत अच्छी बात है लेकिन फिर भी मैं चाहूँगा कि उनके लेखन में उनका युवापन भी प्रतिबिंबित हो।

इस कार्यक्रम के मुख्य अतिथि प्रख्यात मराठी लेखक श्री विश्वास पाटील ने कहा कि लेखक केवल मानवता की आवाज़ को अपने शब्दों में पिरोते हैं और इस तरह वो शब्दों के नायक हैं। उन्होंने अपने अनुभवों को साझा करते हुए कहा कि लेखक हमेशा अपने मन की आवाज़ सुनता है और वही उसकी बड़ी ताक़त है। उन्होंने युवा रचनाकारों के आगे आने वाली चुनौतियों की तरफ़ इशारा करते हुए कहा कि ऐसे में उन्हें अपने मन की ही आवाज़ सुननी चाहिए।

कार्यक्रम के अंत में धन्यवाद ज्ञापन करते हुए साहित्य अकादेमी के उपाध्यक्ष प्रो. चंद्रशेखर कंबार ने कहा कि साहित्य अकादेमी द्वारा दिए जाने वाले युवा पुरस्कार देश की भाषायी विविधता को प्रोत्साहित करने के लिए हैं। उन्होंने युवा लेखकों से अनुरोध किया कि वे आधुनिकता के साथ-साथ परंपराओं और स्थानीयता से भी अपने को जोड़े रहें। उन्होंने इन युवा रचनाकारों का साहित्य अकादेमी परिवार में स्वागत करते हुए कहा कि यह संबंध आगे चलकर हमारे भविष्य की लेखकीय ताक़त बनेगी।

सभी पुरस्कृत रचनाकारों को 50,000 रुपए की राशि और फलक प्रदान किए गए। पुरस्कृत रचनाकारों को साहित्य अकादेमी के उपाध्यक्ष प्रो. कंबार ने पुष्प मालाएँ पहनाई और अध्यक्ष डॉ. विश्वनाथ प्रसाद तिवारी द्वारा पुरस्कार प्रदान किए गए। कार्यक्रम का संचालन और पुरस्कृत रचनाकारों का परिचय अकादेमी के सचिव डॉ. के. श्रीनिवासराव द्वारा प्रस्तुत किया गया।

युवा पुरस्कार 2015 के पुरस्कृत रचनाकारों के साथ के. श्रीनिवासराव, विश्वास पाटील, विश्वनाथ प्रसाद तिवारी एवं चंद्रशेखर कंबार

पुरस्कृत रचना एवं रचनाकार की सूचि

• मृदुल हालै (असमिया)
अकले आछौं (कविता संग्रह)

• सुदीप चक्रवर्ती (बाङ्ला)
प्रेमेर साइज़ बत्रिश (कविता संग्रह)

• लेबेन लाल मोसाहारि (बोडो)
खोमसि हरनि आलारि (कहानी संग्रह)

• संदीप सूफ़ी (डोगरी)
मुस्तक़बिल (कविता संग्रह)

• हांसदा सौमेंद्र शेखर (अंग्रेज़ी)
द मिस्टिरियस एलमेंट ऑफ़ रूपी बास्के
(उपन्यास)

पुरस्कार ग्रहण करते अमीर इमाम

अध्यक्ष विश्वनाथ प्रसाद तिवारी से पुरस्कार ग्रहण करती हुई सुश्री इंदिरा दांगी

• राजेश वाणकर (गुजराती)
मालो (कहानी संग्रह)

• इंदिरा दांगी (हिंदी)
हवेली सनातनपुर (उपन्यास)

• मौनेश बडिगेर (कन्नड)
मायाकोलाहल (कहानी संग्रह)

• श्रीनिशा एकनाथ नायक (कोंकणी)
खंय गेली आली (कविता संग्रह)

• नारायण झा (मैथिली)
प्रतिवादी हम (कविता संग्रह)

• आर्याम्बिका (मलयाळम्)
थोनिया पोलुरु (कविता संग्रह)

• अंगोम सरिता देवी (मणिपुरी)
मी अमसुङ शा (कविता संग्रह)

• 'वीरा' राठोड (मराठी)
सेन सायी वेस (कविता संग्रह)

• सपन प्रधान (नेपाली)
कृति - कीर्ति (समालोचना)

• सुजित कुमार पंडा (ओड़िया)
मानसांक (कहानी संग्रह)

• सिमरन धालीवाल (पंजाबी)
आस अजे बाकी है (कहानी संग्रह)

• ऋतु प्रिया (राजस्थानी)
सपना संजोवती हीरां (कविता संग्रह)

• ऋषिराज जानी (संस्कृत)
समुद्रे बुद्धस्थ नेत्रे (कविता संग्रह)

• सुचित्रा हांसदा (संताली)
बेरा आहला (कविता संग्रह)

• मनोज चावला 'तन्हा' (सिंधी)
पिंजरा (ग़ज़ल संग्रह)

• वीर पांडियान एस. (तमिळ)
परुक्कै (उपन्यास)

• पासुनूरी रवीन्द्र (तेलुगु)
आउट ऑफ़ कवरेज एरिया
(कहानी संग्रह)

• अमीर इमाम (उर्दू)
नक़्शे पा हवाओं के (ग़ज़ल संग्रह)

साहित्य अकादेमी भाषा सम्मान

साहित्य अकादेमी ने कालजयी और मध्यकालीन साहित्य (पश्चिमी) के क्षेत्र में योगदान हेतु लेखक/विद्वान प्रो. श्रीकांत बाहुलकर को भाषा सम्मान प्रदान करने की घोषणा की है। भाषा सम्मान के अंतर्गत पुरस्कार विजेता को 100000/- रुपये नकद, एक उत्कीर्ण ताम्र फलक तथा प्रशस्ति-पत्र प्रदान किया जाता है। यह सम्मान भविष्य में कोई तिथि निर्धारित कर एक विशेष समारोह में साहित्य अकादेमी के अध्यक्ष द्वारा प्रदान किया जाएगा।

प्रो. श्रीकांत बाहुलकर संस्कृत भाषा में शिक्षा और शोध के क्षेत्र में एक सुपरिचित नाम है। वैदिक संस्कृत से लेकर आधुनिक संस्कृत तक की युगों की विकास यात्रा, वेद अध्ययन, बौद्ध अध्ययन और शास्त्रीय संस्कृत साहित्य आपके शोध के क्षेत्र हैं। साथ ही आप पालि, प्राकृत तथा शास्त्रीय संस्कृत से प्रायः भिन्न बौद्ध तांत्रिक संस्कृत, बौद्ध हाइब्रिड संस्कृत के भी ज्ञाता हैं। संप्रति आप मराठी भाषा में बौद्ध हाइब्रिड संस्कृत रीडर तैयार कर रहे हैं, जो बौद्ध साहित्य के अध्येताओं के लिए उपयोगी होगी। आप भंडारकर ओरिएंटल रिसर्च इंस्टीट्यूट के कार्यकारी मंडल के अध्यक्ष तथा वहाँ की पत्रिका *अन्नाल्स* के संपादक हैं।

युवा पुरस्कार लेखक सम्मिलन

19 नवंबर 2015, नई दिल्ली

23 भाषाओं के पुरस्कृत युवा रचनाकारों ने अपने रचनात्मक अनुभवों को पाठकों के साथ साझा किया। मराठी में पुरस्कृत वीरा आर. राठोड ने कहा कि इस पुरस्कार के बहाने शायद पहली बार एक बंजारे को अपने मन की बात रखने का अवसर मिला है। वर्ना जन्म से गुनहगार ठहराया गया समुदाय जो आज़ादी के बाद आज तक अपने होंठो को सी कर, दुखभरी सिसकियों को सीने में दफनाए व्यवस्था की मार सहते आया है जिसे वे बेचारे अपना देश कहते हैं, इसी देश में जिन्हें आम भारतीय नागरिकों की तुलना में 'पाँच साल सोलह दिन' के अंतराल बाद केवल नाम की आज़ादी मिली है।

बोडो में पुरस्कृत लेबेन लाल मोसाहारि ने अपने वक्तव्य में कहा कि बोडो भाषा में लेखक बनना बहुत मुश्किल है। बहुत सारे कारणों में एक मुख्य कारण है आसाम में जितने लोग बोडो हैं उन लोगों के बीच में ही बोडो भाषा चलती है। दुख की बात है कि हमारी भाषा में प्रकाशकों की कमी है।

हिंदी में पुरस्कृत इंदिरा दांगी ने कहा कि रचना को कागज़ पर उतारना सरल होता है, वो कठिन नहीं है, असली यातना है उसे जीना और उससे भी आगे, साहित्य बोध को अपना जीवनबोध बना लेना। चीज़ों को देखने का नज़रिया बहुत महत्त्व रखता है और प्रतिभा, अध्ययन, अभ्यास के बाद जो बात लेखक को लेखक बनाती है वो वही है जो भवानी प्रसाद मिश्र कहते हैं, 'कविता मुझको लिखती है', तो मैं कहूँगी कि मेरा सृजन मेरे व्यक्तित्व का अविभाज्य हिस्सा है।

मैथिली में पुरस्कृत नारायण झा ने कहा कि ''जब-जब मेरे अंतर्मन को प्रतिरोध ने संवेदित किया है तब-तब मैं उसे कविता के रूप में व्यक्त करता आया हूँ। मेरी कविता विश्व के मानव समुदाय तक अपने रिश्ते को मज़बूत बनाना चाहती है। इस सारी जद्दोजहद में मेरे लमाण (बंजारा) संस्कृति ने मुझे जो भाषा (बंजारा बोली), लोकसाहित्य, कला, सभ्यता की विरासत सौंपी है, उसके प्रति मैं हमेशा कृतज्ञ रहूँगा। मेरी कविताओं पर हुए इस संस्कृति संस्कार हमेशा मानवहित की माँग करनेवाले हैं।''

पंजाबी में पुरस्कृत सिमरन धालीवाल ने अपने वक्तव्य में कहा कि 'मेरी कहानियाँ उसी संवेदना की बात करती हैं, जो मनुष्य को उसके मनुष्य होने का अनुभूति कराती हैं.. और शायद हाँ ये मेरे अंतर की कोमलता, संवेदनशीलता ही

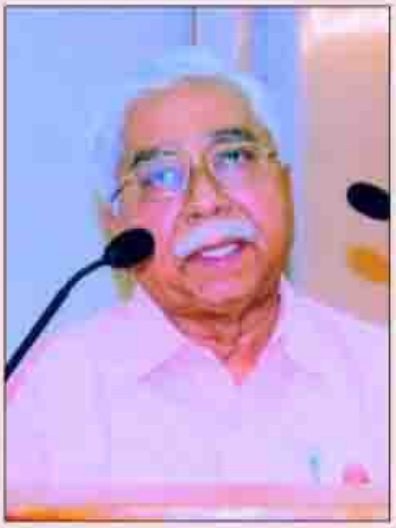

साहित्य अकादेमी के उपाध्यक्ष चंद्रशेखर कंबार अध्यक्षता करते हुए

थी, जिसने मेरा नाता इन शब्दों से जोड़ दिया।'

राजस्थानी में पुरस्कृत ऋतुप्रिया ने कहा कि 'मेरी किताब सपनां संजोवती हीरां की अधिकांश कविताएँ नारी मन की ही व्यथा-कथा है, जिसका संघर्ष माँ की कोख से ही शुरू हो जाता है और वहाँ से यदि वह बच जाती है तो फिर बचपन में माँ-बाप, भाई तथा जवानी में पति और बुढ़ापे में अपने बच्चों के अधीन रहती है।'

संस्कृत में पुरस्कृत ऋषिराज जानी ने कहा कि 'समुद्रे बुद्धस्य नेत्रे' आधुनिक संवेदनाओं का संग्रह है। उनमें वन बंधुओं की व्यथा, दलित-चेतना, उत्तर-आधुनिकतायुक्त संवेदनाएँ, भूमण्डलीकरण आदि की अनुभूतियाँ शब्दबद्ध हुई हैं। आधुनिक संस्कृत में अनुआधुनिकतावादी हैं ये रचनाएँ – जिनका परिचय सांप्रत विश्व के साथ है। यदि कोई मुझसे संस्कृत कविता का विस्तार पूछे तो मैं कह सकता हूँ कि पाँच हज़ार वर्षों से पूर्व यश के साथ मंत्र के रूप में प्रगट हुई यह कविता आज कोस्मोपोलिटन और मेट्रोपोलिटन कल्चर की संवेदनाओं को भी अभिव्यक्त करती है। यह कविता वैश्विक संवेदना की कविता है।

सिंधी में पुरस्कृत मनोज चावला 'तन्हा' ने अपने वक्तव्य में कहा कि 'किसी पर विश्वास जताने के लिए नहीं, खुद में विश्वास पाने के लिए लिखता हूँ, कभी सच की तलाश में तो कभी उसी का सामना करने के लिए लिखता हूँ। लिखना एक आदत, एक तमन्ना, एक ज़ज्बा, एक ज़रूरत है, उदासी का संदेश है तो विश्वास की प्रकृति है, प्रेम है आनंद है तो एक दंड भी है, पर अपराध तो बिलकुल नहीं है! उसी बेबाक निरपराध के लिए लिखता हूँ।'

कन्नड में पुरस्कृत मौनेश बाडीगर ने अपनी रचनाप्रक्रिया के बारे में विचारों और जीवन के अतिव्यापन को महत्त्वपूर्ण बताया।

डोगरी में पुरस्कृत संदीप सूफ़ी ने कहा कि घर में व्याप्त साहित्यिक परिवेश के कारण ही कविता के प्रति मेरा रुझान दिन-प्रतिदिन बढ़ता रहा है। मेरा पहला कविता संग्रह 'मुस्तक़बिल' अकादेमी ने अपनी नवोदय योजना के अंतर्गत वर्ष 2014 में प्रकाशित किया था।

कार्यक्रम की अध्यक्षता अकादेमी के उपाध्यक्ष चंद्रशेखर कंबार ने की।

युवा लेखक उत्सव

19 नवंबर 2015, नई दिल्ली

साहित्य अकादेमी के सभागार में सायं 4.00 बजे प्रख्यात कथाकार चंद्रकांता द्वारा 'युवा लेखक उत्सव' का उद्घाटन किया गया। अपने उद्घाटन वक्तव्य में उन्होंने कहा कि लेखक आशा की संधियाँ पकड़ता है यानी निराशा में आशा की किरण। लेकिन कोई भी समस्या को इकहरी भाषा में व्यक्त नहीं किया जा सकता। प्रत्येक रचनाकार कुछ न कुछ नया खोजता है और उसे अपनी सरल और सहज भाषा में व्यक्त करता है, यही उसकी शैली है। मुझे उम्मीद है कि अपनी शैली को बनाने में युवा रचनाकार कथ्य को दबने नहीं देंगे। युवा पीढ़ी पर बाजार से लेकर हर क्षेत्र में अनेक तरह के दबाव हैं, लेकिन साहित्य के केंद्र में हमेशा मनुष्य ही महत्त्वपूर्ण रहा है और रहेगा। उन्होंने सभी युवा रचनाकारों को बधाई देते हुए कहा कि वे हम वरिष्ठों द्वारा लिखने से छूट गए विषयों को अपनी रचनाओं में प्रस्तुत करेंगे।

अध्यक्षीय व्याख्यान देते हुए साहित्य अकादेमी के अध्यक्ष विश्वनाथ प्रसाद तिवारी ने कहा कि युवा पीढ़ी हम अग्रजों द्वारा छोड़ी गई उन्हीं चीज़ों को ग्रहण करे जो उनके काम की हैं क्योंकि वरिष्ठ लेखकों ने बहुत सी ऐसी चीज़ें छोड़ी हैं जो उन्हें गुमराह कर सकती हैं। उन्होंने रचनाओं में भाव की महत्ता को बताते हुए कहा कि आज हमने भाव की जगह विचार को मुख्य जगह दे दी है जबकि कोई भी रचना बिना भाव के स्पंदित नहीं हो सकती। उन्होंने आगे कहा कि आज का युवा वर्ग संतुलित है और उसे अपने स्वभाव को ही प्राथमिकता देनी चाहिए।

कार्यक्रम में अलकेश कलिता (असमिया), प्रोमिला मन्हास (डोगरी), अच्युतानंद मिश्र (हिंदी), हारिश राशिद (कश्मीरी), चोङथाम दीपू सिंह (मणिपुरी), आन्पा मरांडी (संताली), अरुणा नारदाभाटला (तेलुगु) और जितेंद्र परवाज़ (उर्दू) ने अपनी कविताएँ प्रस्तुत कीं।

धन्यवाद ज्ञापन अकादेमी के उपाध्यक्ष चंद्रशेखर कंबार ने दिया और कार्यक्रम का संचालन अकादेमी के सचिव के. श्रीनिवासराव ने किया।

साहित्य अकादेमी युवा पुरस्कार 2015 अर्पण समारोह के अवसर पर विशेष रूप से आयोजित दो दिवसीय 'युवा लेखक उत्सव' का 20 नवंबर 2015 को समापन हुआ। उत्सव में 23 भारतीय भाषाओं के युवा रचनाकारों ने अपनी रचनाएँ प्रस्तुत कीं।

के. श्रीनिवासराव (माइक पर), विश्वनाथ प्रसाद तिवारी, चंद्रकांता एवं चंद्रशेखर कंबार

युवा लेखक उत्सव कार्यक्रम का एक दृश्य

दूसरे दिन पहले सत्र में प्रख्यात अंग्रेज़ी लेखक राहुल सैनी की अध्यक्षता में कहानियाँ प्रस्तुत की गईं। कहानी प्रस्तुति से पहले कथ्य या विचार में किसको प्रमुखता देनी चाहिए पर विचार विमर्श भी हुआ। सभी का मानना था कि विचार की प्रमुखता ही भाषा के प्रकार को निर्धारित करती है और विचारों की विविधता से ही भाषा अपना स्वरूप बदलती है। सुंदर चंद्र ठाकुर ने 'मनुष्य कुत्ता नहीं है' शीर्षक से अपनी कहानी प्रस्तुत की। ओडिया के शुभ्रांशु पांडा ने भी अपनी कहानी पढ़ी।

अंतिम सत्र की अध्यक्षता वरिष्ठ कवि अरुण कमल ने की और बुद्धेश्वर बोरो (बोडो), कुलदीप कारिया (गुजराती), ज्योति चावला (हिंदी), पांडुरंग गाँवकर (कोंकणी), दीप नारायण विद्यार्थी (मैथिली), वासुदेव पुलामी (नेपाली), गुरसेवक लांबी(पंजाबी), ओम नागर(राजस्थानी), परांबा श्रीयोगमाया (संस्कृत) तथा सुनीता मोहिनानी (सिंधी) ने अपनी कविताएँ प्रस्तुत कीं। अपने अध्यक्षीय वक्तव्य में अरुण कमल ने कहा कि आज इस मंच पर विविध भाषाओं, विविध शिल्पों और विविध विषयों पर लिखी गई कविताएँ सुनने को मिली। भारतीय भाषाओं की इन श्रेष्ठ कविताओं को सुनकर मुझे बिल्कुल निराशा नहीं हुई बल्कि मैं ईर्ष्याग्रस्त हो गया हूँ कि क्या मैं भी इसी तरह लिखता रह पाऊँगा। अंत में उन्होंने अपनी कुछ कविताएँ सुनाईं।

साहित्य अकादेमी पुरस्कार 2015 की घोषणा

साहित्य अकादेमी ने 23 भाषाओं में अपने वार्षिक साहित्य अकादेमी पुरस्कार की घोषणा की। पुरस्कृत रचनाओं में छह कविता-संग्रह, छह कहानी-संग्रह, चार उपन्यास, दो निबंध-संग्रह, दो नाटक, दो समालोचना और एक संस्मरण शामिल हैं। बाङ्ला का पुरस्कार बाद में घोषित किया जाएगा।

अपने कविता-संग्रहों के लिए पुरस्कृत 6 कवि हैं : ब्रजेन्द्र कुमार ब्रह्म (बोडो), ध्यान सिंह (डोगरी), रामदरश मिश्र (हिन्दी), के.वी. तिरुमलेश (कन्नड), क्षेत्री राजन (मणिपुरी) और रामशंकर अवस्थी (संस्कृत)।

अपने कहानी-संग्रहों के लिए पुरस्कृत 6 कहानीकार हैं : कुल सेइकिया (असमिया), मनमोहन झा (मैथिली), गुप्त प्रधान (नेपाली), विभूति पट्टनायक (ओड़िया), माया राही (सिन्धी) और वोल्गा (तेलुगु)।

साइरस मिस्त्री (अंग्रेज़ी), के.आर. मीरा (मलयाळम्), जसविन्दर सिंह (पंजाबी) और मधु आचार्य 'आशावादी' (राजस्थानी) को उनके उपन्यास हेतु पुरस्कृत किया गया।

रसिक शाह (गुजराती) और ए. माधवन (तमिळ) को उनके निबंध के लिए और उदय भेंब्रे (कोंकणी), रबिलाल टुडू (संताली) को नाटक के लिए तथा बशीर भद्रवाही (कश्मीरी), शमीम तारिक (उर्दू) को समालोचना के लिए और अरुण खोपकर (मराठी) को संस्मरण के लिए पुरस्कृत किया गया।

पुरस्कारों की अनुशंसा 23 भारतीय भाषाओं की निर्णायक समितियों द्वारा की गई तथा साहित्य अकादेमी के अध्यक्ष श्री विश्वनाथ प्रसाद तिवारी की अध्यक्षता में आयोजित अकादेमी के कार्यकारी मंडल की बैठक दिनांक 17 दिसंबर में इन्हें अनुमोदित किया गया।

इन पुस्तकों को त्रिसदस्यीय निर्णायक मंडल ने निर्धारित चयन प्रक्रिया का पालन करते हुए पुरस्कार के लिए चुना है। नियमानुसार कार्यकारी मंडल ने निर्णायकों के बहुमत के आधार पर अथवा सर्वसम्मति के आधार पर चयनित पुस्तकों के लिए पुरस्कारों की घोषणा की है। पुरस्कार 1 जनवरी 2009 से 31 दिसंबर 2013 के दौरान पहली बार प्रकाशित पुस्तकों पर दिया गया है।

पुरस्कृत रचना एवं रचनाकार

भाषा	शिर्षक एवं विधा	रचनाकार
असमिया	आकाशर छवि आरु अन्यान्य गल्प (कहानी)	कुल सेइकिया
बोडो	बायदि दैंखो बायदि गाव (कविता)	ब्रजेन्द्र कुमार ब्रह्म
डोगरी	परछामें दी लोऽ (कविता)	ध्यान सिंह
अंग्रेज़ी	करानिकल आफ ए कार्पस बीरर (उपन्यास)	साइरस मिस्त्री
गुजराती	अंते आरंभ (खंड I और II) (निबंध)	रसिक शाह
हिन्दी	आग की हँसी (कविता)	रामदरश मिश्र
कन्नड	अक्षय काव्य (कविता)	के.वी. तिरुमलेा
कश्मीरी	जमिस त कशीरी मंज कशीर नातिया अदबुक तवारिख (समालोचना)	बशीर भद्रवाही
कोंकणी	कर्ण पर्व (नाटक)	उदय भेंब्रे
मैथिली	खिस्सा (कहानी)	मनमोहन झा
मलयाळम्	अराचार (उपन्यास)	के.आर. मीरा
मणिपुरी	अहिङना येकशिल्लिबा मङ (कविता)	क्षेत्री राजन
मराठी	चलत्-चित्रव्यूह (संस्मरण)	अरुण खोपकर
नेपाली	समयका प्रतिविम्बहरू (कहानी)	गुप्त प्रधान
ओड़िया	महिषासुर मुहन (कहानी)	विभूति पट्टनायक
पंजाबी	मात लोक (उपन्यास)	जसविन्दर सिंह
राजस्थानी	गवाड़ (उपन्यास)	मधु आचार्य 'आशावादी'
संस्कृत	वनदेवी (काव्य)	रामशंकर अवस्थी
संताली	पारसी खातिर (नाटक)	रबिलाल टुडू
सिन्धी	मँहगी मुर्क (कहानी)	माया राही
तमिळ	इलक्किया सुवडुकळ (निबंध)	ए. माधवन
तेलुगु	विमुक्त (कहानी)	वोल्गा
उर्दू	तसव्वुफ़ और भक्ति (तनक़ीदी और तक़ाबुली मुतालिया) (समालोचना)	शमीम तारिक़

संगोष्ठी

प्रभु छुगानी वफ़ा जन्मशतवार्षिकी

1-2 नवंबर 2015, मुंबई

साहित्य अकादेमी के क्षेत्रीय कार्यालय मुंबई द्वारा सिंधी ग़ज़ल के अग्रणी प्रभु छुगानी 'वफ़ा' के जन्मशताब्दी के उपलक्षय में 1-2 नवंबर 2015 को एक संगोष्ठी का आयोजन अकादेमी के सभागार में किया गया। क्षेत्रीय सचिव श्री कृष्णा किंबहुने ने प्रतिभागियों एवं अतिथियों का स्वागत करते हुए प्रभु 'वफ़ा' का संक्षिप्त परिचय दिया। सिंधी के लब्धप्रतिष्ठ कवि वासदेव मोही ने अपने उद्घाटन वक्तव्य में 'वफ़ा' को एक रोमांस का शायर बताते हुए उन्हें एक सुर - ताल की तरह बताया। उन्होंने कभी अपने शब्दों के साथ धोखा नहीं किया। उन्होंने ग़ज़ल को एक गीत में तब्दील किया। उनकी कविता सिंधी कवियों के लिए एक विरासत है। अकादेमी के सिंधी परामर्श मंडल के संयोजक श्री प्रेम प्रकाश ने अपने बीज वक्तव्य में संगोष्ठी की रूपरेखा के बारे में बताया। उन्होंने 'वफ़ा' को एक ईमानदार कवि बताया। उन्होंने आगे कहा कि उनकी कविताएँ संवेदनाओं की यात्रा है। उनकी कविताओं को फ़िल्मों में शामिल किया गया है। उद्घाटन सत्र में मोहन गेहाणी द्वारा लिखित प्रभु 'वफ़ा' पर विनिबंध का लोकार्पण किया गया। सत्र में सुश्री कमला गोकलाणी एवं सुश्री विम्मी सदारंगाणी ने 'वफ़ा' की कविताओं का पाठ किया।

प्रथम सत्र की अध्यक्षता श्री अर्जन चावला ने की। श्री मोहन गेहाणी, वीना शृंगी एवं श्री हुंदराज बलवाणी ने अपने आलेख प्रस्तुत किए। श्री मोहन गेहाणी ने 'वफ़ा : जीवन और कविता' विषय पर, सुश्री वीना शृंगी ने वफ़ा की पुस्तक झंकार पर तथा श्री हुंदराज बलवाणी ने 'वफ़ा' के काव्य संग्रह परवाज़ पर अपने आलेख प्रस्तुत किए।

वक्तव्य देते श्री खीमण मुलाणी तथा बायें से श्रीमती माया राही, श्रीमती कमला गोकलाणी एवं सुश्री विम्मी सदारंगाणी

दूसरे सत्र की अध्यक्षता गोवर्धन शर्मा 'घायल' ने की तथा श्री जेठो लालवाणी, संध्या कुंदनानी एवं श्रीमती सरिता शर्मा ने अपने आलेख प्रस्तुत किए। श्री जेठो लालवाणी 'वफ़ा' के काव्य संग्रह सुर्ख गुलाब पर, श्रीमती सरिता शर्मा ने 'वफ़ा' के काव्य संग्रह तूं सागर माँ लहर आगें पर तथा श्रीमती संध्या कुंदनानी 'वफ़ा' के काव्य संग्रह अचतुपी ॐ पर अपने आलेख प्रस्तुत किए।

संगोष्ठी के तीसरे सत्र की अध्यक्षता श्री मोहन गेहाणी ने की तथा श्रीमती मायाराही, मीना रूपचंदानी एवं विनोद आसुदाणी ने अपने आलेख प्रस्तुत किए। श्रीमती मायाराही ने वफ़ा के काव्य संग्रह 'सीजा लहां ते आहे' पर सुश्री मीना रूपचंदानी ने 'वफ़ा' के काव्य संग्रह 'लुच्चे पये चकतारे जी तार' पर तथा विनोद आसुदाणी ने 'वफ़ा' की ग़ज़लों पर अपने आलेख प्रस्तुत किए।

चतुर्थ सत्र की अध्यक्षता श्रीमती मायाराही ने की तथा कमला गोकलाणी, विम्मी सदारंगाणी एवं श्री खीमण मूलाणी ने प्रभु वफ़ा के ग़ज़लों एवं नज़्मों पर अपने आलेख प्रस्तुत किए।

पाँचवें सत्र में लक्ष्मण दूबे, अर्जन चावला, गोवर्धन शर्मा 'घायल', नंद छुगानी ने आलेख प्रस्तुत किए, जबकि विनोद आसुदाणी ने सत्र की अध्यक्षता की। श्री प्रेम प्रकाश के धन्यवाद ज्ञापन से संगोष्ठी का समापन हुआ।

ओड़िया उपन्यास

8 नवंबर 2015, कटक

साहित्य अकादेमी के क्षेत्रीय कार्यालय कोलकाता द्वारा सरला साहित्य संसद के सहयोग से 8 नवंबर 2015 को सरला भवन, कटक में 'ओड़िया

द्वीप प्रज्वलित करती डॉ. प्रतिभा रे

संगोष्ठी का एक दृश्य

उपन्यास' पर एक संगोष्ठी का आयोजन किया गया।

अकादेमी के सचिव डॉ. के. श्रीनिवासराव ने प्रतिभागियों और अतिथियों का स्वागत किया। अकादेमी के ओड़िया परामर्श मंडल के संयोजक डॉ. गौर हरिदास ने आरंभिक वक्तव्य दिया तथा प्रतिभागियों का परिचय दिया। विश्वभारती यूनिवर्सिटी के ओड़िया विभाग के प्रोफ़ेसर सबिता प्रधान ने बीज-वक्तव्य दिया। उन्होंने ओड़िया उपन्यासों की प्रवृतियों एवं रुझान के बारे में ऐतिहासिक तथ्यों के साथ विस्तार से चर्चा की। उद्घाटन सत्र की अध्यक्षता सरला साहित्य संसद के अध्यक्ष श्री प्रभाकर स्वाइन ने की तथा ओड़िया की लब्धप्रतिष्ठ कथाकार श्रीमती प्रतिभा रे मुख्य अतिथि के रूप में सम्मिलित हुईं। अकादेमी के कार्यक्रम अधिकारी श्री मिहिर कुमार साहू ने धन्यवाद ज्ञापन किया।

प्रथम सत्र की अध्यक्षता श्री रबि नारायण सेनापति ने की तथा श्री हेमंत कुमार दास श्री प्रेमानंद महापात्र एवं श्रीमती सुलोचना दास ने आलेख प्रस्तुत किए। दूसरे सत्र में श्री प्रसन्न कुमार, श्रीमती सुनामणि राउत ने आलेख प्रस्तुत किए तथा श्री बिपिन बिहारी मिश्र ने सत्र की अध्यक्षता की। समापन सत्र की अध्यक्षता श्री बैरागी चरण जेना ने की तथा श्री वैष्णव चरण सामल ने समापन वक्तव्य दिया तथा श्री संजीत कुमार पटनायक ने धन्यवाद ज्ञापन किया।

ओड़िशा की लोक संस्कृति

13-14 नवंबर 2015, बरहामपुर

साहित्य अकादेमी के क्षेत्रीय कार्यालय कोलकाता द्वारा बरहामपुर यूनिवर्सिटी के ओड़िया विभाग के सहयोग से 'ओड़िशा की लोक संस्कृति' विषय पर दो दिवसीय संगोष्ठी का आयोजन 13-14 नवंबर 2015 को किया गया। बरहामपुर के पोस्ट ग्रेजुएट कौंसिल तथा प्रभारी कुलपति प्रो. प्रसांत कुमार पाध्ये ने संगोष्ठी का उद्घाटन किया। अकादेमी के कार्यक्रम अधिकारी श्री मिहिर कुमार साहू ने प्रतिभागियों एवं अतिथियों का स्वागत किया। अकादेमी के ओड़िया परामर्श मंडल के संयोजक डॉ. गौर हरिदास ने आरंभिक वक्तव्य में कहा कि विदेशी कहानियों की तुलना में भारत की लोक कहानियों में लोक रूपांकन की क़िस्में अधिक मौजूद हैं। बरहामपुर यूनिवर्सिटी के ओड़िया विभाग के प्रो. देवी प्रसन्ना पटनायक ने आधार विषय का सार प्रस्तुत करते हुए यूनिवर्सिटी द्वारा दक्षिण ओड़िशा में लोक संस्कृति के लिए उठाए जा रहे क़दम के बारे में बताया। संगोष्ठी की मुख्य अतिथि डॉ. प्रतिभा रे ने कहा कि लोक संस्कृति लोगों को सपने देखने और नई दुनिया खोज करने के लिए प्रेरित करती है। यह उज्ज्वल भविष्य को बनाने में सहायता करती है। उन्होंने अपील की कि लोग लोक कहानियों के महत्त्व को समझें और समाज को अंधविश्वासों से मुक्त रखें। प्रो. प्रसन्न कुमार ने धन्यवाद ज्ञापन किया।

प्रथम सत्र का विषय था 'लोक नाटक'। डॉ. अशोक कुमार त्रिपाठी, डॉ. मनोरंजन बिसोई, श्री सिद्धार्थ शंकर पाढ़ी ने अपने आलेख प्रस्तुत किए तथा प्रो. कृष्ण चंद्र प्रधान ने सत्र की अध्यक्षता की। डॉ. प्रधान ने अपने अध्यक्षीय वक्तव्य में लोक नृत्य में नैतिकता और विश्वसनीयता पर प्रकाश डालते हुए कुछ नृत्यों के उदाहरण प्रस्तुत किए जो लोक शैली के अंतर्गत आते हैं। दूसरे सत्र में डॉ. द्वारिकानाथ नायक, श्री प्रदीप कुमार मिश्र, डॉ. समीर भोई, श्री रंजन प्रधान ने 'ओड़िया लोकगीत' पर अपने आलेख प्रस्तुत किए तथा विश्वभारती के डॉ. मनोरंजन प्रधान ने सत्र की अध्यक्षता की। डॉ. द्वारिकानाथ नायक ने पश्चिम ओड़िशा के लोक गीतों के बारे में बात की। श्री प्रदीप कुमार मिश्र ने उमरकोट क्षेत्र के कोरापुट में वाड्रा जनजाति के बीच प्रचलित लोक गीतों के बारे में बात की। डॉ. मनोरंजन प्रधान ने अपने अध्यक्षीय वक्तव्य में लोक संस्कृति, लोक साहित्य, लोक कथा, लोक कहानी तथा अन्य के बारे में बात की।

तीसरा सत्र 'ओड़िया लोकाचार' पर आधारित था। श्री अशोक कुमार पटनायक, श्री कृष्णचंद्र निशांक, डॉ. शरत कुमार जेना, डॉ. सीमांचल प्रधान ने अपने आलेख प्रस्तुत किए तथा डॉ. प्रसन्न कुमार स्वाइन ने अध्यक्षता की। डॉ. कृष्णचंद्र प्रधान ने लोक परंपरा और उसकी अमरता के बारे में बात की। विश्वभारती के डॉ. शरत जेना ने याद दिलाया कि जीवन में जो कुछ भी घटित हो रहा है, तथा मृत्यु के बाद भी, इंसान के सारे मानव कर्म लोक परंपरा में शामिल हैं। डॉ. सिमल प्रधान ने कहा कि लोक परंपरा के विभिन्न त्योहार अब भी गंजम में प्रचलित हैं।

चौथे सत्र में श्री आलोक बराल, डॉ. दिलीप कुमार स्वाइन, डॉ. संग्राम केसरी राउत एवं श्री संजय कुमार बाग ने 'ओड़िया लोक कहानी' पर आलेख प्रस्तुत किए तथा डॉ. अश्विनि कुमार पांग ने सत्र की अध्यक्षता की।

समापन वक्तव्य बरहामपुर यूनिवर्सिटी के कुलसचिव डॉ. अशोक कुमार मोहंती ने दिया तथा ओड़िया विभाग के डॉ. देवी प्रसन्न पटनायक ने धन्यवाद ज्ञापन दिया।

बुच्ची बाबू जन्मशतवार्षिकी

15 नवंबर 2015, बेंगळुरु

अकादेमी के क्षेत्रीय कार्यालय बेंगळूरु द्वारा साहिती मित्रुलु इलुरु के सहयोग से प्रसिद्ध तेलुगु कथाकार बुच्ची बाबू के जन्मशतवार्षिकी के अवसर पर दिनांक 15 नवंबर 2015 को बेंगळूरु में एक दिवसीय संगोष्ठी का आयोजन किया गया।

अकादेमी के तेलुगु परामर्श मंडल के संयोजक डॉ. एन. गोपी ने अपने अध्यक्षीय वक्तव्य में कहा कि एक कथाकार के रूप में बुच्ची बाबू ने अपनी कहानियों एवं उपन्यासों से लेखकों की कई पीढ़ियों को प्रभावित किया है। बीज वक्तव्य प्रसिद्ध तेलुगु लेखिका डॉ. कात्यायनी विदमहे वारंगल ने दिया। उन्होंने तेलुगु कथा में बुच्ची बाबू द्वारा रचित बहुमुखी प्रतिभा की कला के अनुमानों को रेखांकित किया। साहिती मित्रुलु के अध्यक्ष श्री लंका वेंकटेश्वरलू ने उद्घाटन वक्तव्य दिया। श्रीमती सिवराजू सुब्बलक्ष्मी सत्र की मुख्य अतिथि थीं।

श्री ए. मोहन रामाराव, श्री के. एन. मल्लेश्वरी, श्री वाय. रामकृष्ण राव, श्री टी. पतंजलि शास्त्री, श्री आर. सीतारामाराव एवं श्रीमती पुतला हेमलता ने अपने आलेख प्रस्तुत किए। समापन सत्र की अध्यक्षता डॉ. एन. गोपी ने की तथा डॉ. वाय. सुधाकर ने समापन वक्तव्य दिया।

बाल साहित्य लेखन : नई चुनौतियाँ

15 नवंबर 2015, मुंबई

साहित्य अकादेमी द्वारा आयोजित बाल साहित्य पुरस्कार अर्पण समारोह के दौरान 15 नवंबर 2015 को 'बाल साहित्य लेखन : नई चुनौतियाँ' विषय पर एक संगोष्ठी का भी आयोजन किया गया। अकादेमी के सचिव डॉ. के. श्रीनिवासराव ने पुरस्कृत लेखकों, प्रतिभागियों एवं अतिथियों का स्वागत करते हुए कहा कि बच्चों की अपनी एक काल्पनिक दुनिया होती है और कोई उनके विचारों की कल्पना नहीं कर सकता। बाल साहित्य एक अनूठी कला है और लेखक का रुख इस साहित्य में मायने रखता है।

अकादेमी के अध्यक्ष डॉ. विश्वनाथ प्रसाद तिवारी ने उद्घाटन सत्र की अध्यक्षता करते हुए कहा कि बाल साहित्य को लोकप्रिय बनाया जाना चाहिए जिसके लिए युवा लेखकों को आगे बढ़कर यह चुनौती स्वीकार करनी चाहिए। उन्होंने पढ़ी गई एक कविता 'एक बूंद की यात्रा' को स्मरण करते हुए साझा किया कि किस प्रकार इस कविता से उनका बाल साहित्य के प्रति झुकाव पैदा हुआ।

अकादेमी के मराठी परामर्श मंडल के संयोजक डॉ. भालचंद्र नेमाडे इस सत्र के मुख्य अतिथि थे। उन्होंने बाल साहित्य की रचना नहीं कर पाने की पीड़ा व्यक्त की। एक लेखक जो बाल साहित्य की रचना करता है उसे बहुत सी

स्वागत वक्तव्य देते डॉ. के.श्रीनिवासराव तथा बायें से श्रीमती नयना अदरकर, सैयद सलाहुद्दीन, भालचंद्र नेमाडे, विश्वनाथ प्रसाद तिवारी, प्रत्यूष गुलेरी, एच.एस.बायकोड, सुश्री रक्षा दवे एवं आनो ब्रह्म

कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है। उद्घाटन सत्र में काव्य गोष्ठी का भी आयोजन किया गया। बोडो के आनो ब्रह्म ने अपनी कविताओं का पाठ किया। गुजराती की रक्षा दवे ने अपनी 'कौन खाये कौन खेले', 'हे दिन दिन बजाता है' शीर्षक कविताओं का पाठ बाल सुलभ ढंग से किया। हिंदी के प्रत्यूष गुलेरी ने 'यह मेरे पापा का घर है', 'चंदा मामा हमें बुलाना', 'हम थे भाई छोटे छोटे' शीर्षक कविताएँ प्रस्तुत कीं। कन्नड कवि एच. एस. बयाकोड ने भी अपनी कविताओं का पाठ किया। कोंकणी भाषा की सुश्री नयना अदरकर ने 'हो पाखो' (कोंकणी में) 'माँ तुम्हारे बचपन में', 'इतवार', 'अद्भुत बातें' (हिंदी में) शीर्षक कविताओं का पाठ किया। ग्रामीण महाराष्ट्र से पधारे मराठी कवि सैयद सलाहुद्दीन ने 'हमारे गांव में थी एक हीरा रानी', 'ऐसा दिन आएगा क्या', 'बोल ना नानी?', 'एक गाँव पानी के वास्ते चाँद पर गया' शीर्षक कविताओं का पाठ किया।

सत्र का समापन अकादेमी की उपसचिव सुश्री रेणु मोहन भान के धन्यवाद ज्ञापन से हुआ।

संगोष्ठी के दूसरे दिन के प्रथम सत्र की अध्यक्षता मराठी के लब्धप्रतिष्ठ कवि अनंत भावे ने की। असमिया के रोतिंद्रनाथ गोस्वामी, हिंदी के दिनेश चमोला 'शैलेश', मलयाळम् के पल्लियारा श्रीधरन तथा मराठी के महावीर जोंढले ने अपने आलेख प्रस्तुत किए। श्री अनंत माने के अनुसार बाल साहित्य लेखन को नेक और रचनात्मक पेशा नहीं माना जाता है, लेकिन उनका मानना था कि बाल साहित्य समाज के बहुत ही महत्त्वपूर्ण पहलुओं में शामिल है। यह समाज की सांस्कृतिक कमी का संकेत एवं मानक होता है। रोतिंद्रनाथ गोस्वामी ने कहा कि अरबी कहानियों को असमिया में अनुवाद कर बाल साहित्य प्रस्तुत किया गया। असमिया पत्रिकाओं ने बाल साहित्य के विकास में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई है। श्री दिनेश चमोला का कहना था कि बच्चा एक विकसित देश का आधार होता है। उन्होंने आगे कहा कि साहित्य को बच्चे के जीवन की चुनौतियों का सामना करने के लिए प्रेरित करने वाला होना चाहिए। पलियार श्रीधरन का कहना था कि एक लेखक बाल साहित्य लिखने से बचता है कि उसे वह मान्यता नहीं मिलती। महावीर जोंढले ने एक बच्चे में पढ़ने की आदत विकसित करने पर बल दिया। माता-पिता को अपने बच्चे के लिए अच्छी पढ़ने की सामग्री उपलब्ध कराना चाहिए। सत्र के अध्यक्ष अनंत भावे ने एक बाल कविता बहुत बाल सुलभ ढंग से प्रस्तुत की और सत्र का समापन किया।

दूसरे सत्र की अध्यक्षता प्रसिद्ध बाङ्ला विद्वान अमरेंद्र चक्रवर्ती ने की। अपने अध्यक्षीय वक्तव्य में श्री चक्रवर्ती ने कहा कि बच्चे हमारे देश की बड़ी धरोहर हैं। बच्चों के माता-पिता और संरक्षक बच्चों की रुचियों एवं आदतों के ज़िम्मेदार होते हैं। गुजराती के हरेकृष्ण पाठक ने बाल साहित्य की चुनौतियाँ विषय पर अपने आलेख में मोबाइल एवं टेलीविज़न के बच्चों के मस्तिष्क पर बढ़ते प्रभाव के प्रति चिंता व्यक्त की। उन्होंने याद दिलाया कि गुजराती भाषा में गीजू भाई बाल साहित्य के पुरोधा हैं। मणिपुरी के गुरुमायूम बिजाय कुमार शर्मा ने अपने आलेख में कहा कि बच्चों के लिए लिखना एक लाभप्रद क्षेत्र है, लेकिन मुश्किल से कोई लेखक इस क्षेत्र में रुचि एवं गंभीरता दिखाता है। इस क्षेत्र में जागरूकता लाने के लिए शोध की ज़रूरत है।

तीसरा सत्र काव्य गोष्ठी का था जिसकी अध्यक्षता सितांशु यशश्चंद्र ने की। काव्य गोष्ठी में कवियों ने कुछ बाल गीत / कविताएँ भी प्रस्तुत कीं। जनक दवे (गुजराती), ज़मीर अंसारी (कश्मीरी), किरण भांब्रे (कोंकणी), दयानंद आसोलकर (मराठी), कमलजीत बीलन (पंजाबी), दीनदयाल शर्मा (राजस्थानी), इंद्रमोहन सिंह (संस्कृत), हुंदराज बलवाणी (सिंधी), टी. वेदांत सूर्या (तेलुगु) ने अपनी कविताओं का पाठ किया। क्षेत्रीय सचिव कृष्णा किंबहुने ने धन्यवाद ज्ञापन किया।

पूर्वी क्षेत्रीय भाषाओं में आलोचना की आधुनिक प्रवृत्तियाँ

24 नवंबर 2015, तेजपुर

अकादेमी के क्षेत्रीय कार्यालय कोलकाता द्वारा 24 नवंबर 2015 को 'पूर्वी क्षेत्रीय भाषाओं में आलोचना की आधुनिक प्रवृत्तियाँ' विषय पर मास कम्युनिकेशन एवं जर्नलिज़्म विभाग के स्क्रीनिंग हॉल में संगोष्ठी का आयोजन किया गया।

उद्घाटन सत्र में स्वागत करते गौतम पाल

माइक पर प्रदीप ज्योति महंता एवं अन्य विद्वान

संगोष्ठी उद्घाटन सत्र के अतिरिक्त दो सत्रों में विभाजित थी। अकादेमी के सहायक संपादक श्री गौतम पाल ने प्रतिभागियों एवं अतिथियों का स्वागत करते हुए अकादेमी की गतिविधियों से अवगत कराया। संगोष्ठी का उद्घाटन करते हुए तेजपुर यूनिवर्सिटी के कुलपति प्रो. मिहिर कांति चौधुरी ने यूनिवर्सिटी परिसर में अकादेमी द्वारा संगोष्ठी के आयोजन किए जाने की सराहना की। अपने बीज-वक्तव्य में प्रो. रंजीत कुमार देव गोस्वामी ने कहा कि भारतीय भाषाओं में आधुनिकता पूर्वी भारत के असमिया, बाङ्ला और ओड़िया के विशेष संदर्भ में भारतीय भाषाओं में आधुनिकता जो भारत के ब्रिटिश शासन काल में आया, एक उपहार है। सत्र के अध्यक्ष प्रो. अमर ज्योति चौधुरी ने अपने अध्यक्षीय वक्तव्य में अकादेमी के कार्यों की सराहना की। तेजपुर यूनिवर्सिटी के स्कूल ऑफ़ ह्यूमनिटीज़ एंड सोशल साइंसेज़ के डीन प्रो. प्रदीप ज्योति महंता ने अपने धन्यवाद ज्ञापन में सभी महानुभावों के प्रति आभार व्यक्त किया।

प्रथम सत्र की अध्यक्षता प्रो. मदन मोहन शर्मा ने की। प्रो. शर्मा ने अपने आलेख में अपने स्थापना के समय अर्थात् रूमानी युग के बाद की असमिया साहित्य के आलोचना के विकास की रूपरेखा प्रस्तुत की। बोडो साहित्य में आलोचना के विकास की चर्चा करते हुए प्रसिद्ध बोडो लेखक श्री गोपीनाथ ब्रह्म ने कहा कि आधुनिक भारतीय भाषा के रूप में बोडो को मान्यता मिलने के बाद बोडो साहित्य में आलोचना की जाने लगी। श्री ब्रहम ने युवा लेखकों के समूह का उल्लेख किया जो सक्रियता से इसमें योगदान कर रहे हैं। अपने आलेख में मैथिली के डॉ. अशोक अविचल ने मैथिली में आलोचनात्मक लेखन के इतिहास का विश्लेषण प्रस्तुत किया।

द्वितीय सत्र की अध्यक्षता प्रो. विजय कुमार दंता ने की तथा ओड़िया, मणिपुरी, नेपाली और संताली भाषाओं के विद्वानों ने अपनी भाषा के आलोचनात्मक प्रवृत्ति की चर्चा की। मणिपुरी यूनिवर्सिटी के मणिपुरी विभाग की डॉ. काङ्जम शांतिबाला देवी ने अपने आलेख में आधुनिक मणिपुरी साहित्य के विकास की रूपरेखा प्रस्तुत की। ओड़िया के प्रसिद्ध कवि एवं विद्वान श्री बाबजी चरण पटनायक ने ओड़िया में आलोचना के रुझान की बात की। श्री पटनायक ने प्रो. सुदर्शन आचार्य, गौरंग चरण दाश एवं भाग्यलिपि मल्ल को संदर्भित किया जिन्होंने ओड़िया के साहित्यिक आलोचना में बहुमूल्य योगदान दिया है।

नॉर्थ बंगाल यूनिवर्सिटी के डॉ. नरेश चंद्र खाती ने नेपाली साहित्य में आलोचना के रुझान की रूपरेखा प्रस्तुत करते हुए मोतीराम भट्ट को उद्धृत किया। श्री मदन मोहन सोरेन ने अपना आलेख 'संताली साहित्य में आलोचना के रुझान' विषय पर प्रस्तुत किया तथा कहा कि संताली भारत की सबसे कम उम्र भाषा है, जिसे 2003 में भारतीय संविधान के द्वारा मान्यता दी गई।

समापन सत्र की अध्यक्षता डिब्रूगढ़ यूनिवर्सिटी के अंग्रेज़ी विभाग के प्रो. पोना महंता ने की। श्री महंता ने अपने अध्यक्षीय वक्तव्य में साहित्य में आलोचना की भूमिका को रेखांकित किया। अकादेमी के सहायक संपादक श्री गौतम पाल के धन्यवाद ज्ञापन से संगोष्ठी का समापन हुआ।

कंचन बरुआ

27 नवंबर 2015, डिब्रूगढ़

अकादेमी के क्षेत्रीय कार्यालय कोलकाता द्वारा डिब्रूगढ़ पुस्तक मेला में कंचन बरुआ पर संगोष्ठी का आयोजन 27 नवंबर 2015 को किया गया। अकादेमी के असमिया परामर्श मंडल की संयोजक प्रो. कर्बी डेका हजारिका ने संगोष्ठी की अध्यक्षता की तथा असम साहित्य सभा के पूर्व अध्यक्ष तथा लब्धप्रतिष्ठ कथाकार, कवि डॉ. नगेन सइकिया ने संगोष्ठी का उद्घाटन किया। अपने उद्घाटन वक्तव्य में कंचन बरुआ के प्रसिद्ध उपन्यास 'असिमत जर हेरल सीमा' के बारे में बात की। बाङ्ला के प्रसिद्ध उपन्यासकार श्री तवन बंद्योपाध्याय संगोष्ठी के उद्घाटन सत्र में मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित थे, ने विशेष रूप से बाङ्ला उपन्यास के अतीत और वर्तमान स्थिति के बारे में बात की। प्रसिद्ध आलोचक एवं लेखक डॉ. आनंद बोमुदोई ने कंचन बरुआ के साहित्यिक लेखन पर समालोचनात्मक विश्लेषण प्रस्तुत किया तथा लेखक एवं कवि प्रबंध संपादक 'साताश्री' श्री अतनु भट्टाचार्य ने कंचन बरुआ के

व्यक्तित्व एवं लेखन के बारे में बात की। अपने अध्यक्षीय वक्तव्य में डॉ. हजारिका ने कंचन बरुआ के उपन्यासों के साहित्यिक योगदान पर प्रकाश डाला तथा अकादेमी के इस आयोजन की सराहना की।

क्षेत्रीय सचिव डॉ. गोपाल बर्मन ने अतिथियों का स्वागत किया तथा मिलन ज्योति संघ के अध्यक्ष डॉ. बी. एन. बोरठाकुर ने धन्यवाद ज्ञापन किया।

पंजाबी कवि बाबा बलवंत

27-28 नवंबर 2015, नई दिल्ली

साहित्य अकादेमी द्वारा भाईवीर सिंह साहित्य सदन के सहयोग से पंजाबी कवि बाबा बलवंत जन्मशतवार्षिकी संगोष्ठी का आयोजन 27-28 नवंबर 2015 को किया गया।

अकादेमी के सचिव डॉ. के. श्रीनिवासराव ने प्रतिभागियों और अतिथियों का स्वागत किया। साहित्य अकादेमी के पंजाबी परामर्श मंडल के संयोजक डॉ. रवैल सिंह ने अपने आरंभिक वक्तव्य में संगोष्ठी की रूपरेखा और उद्देश्य पर प्रकाश डाला। श्री जसविंदर सिंह ने अपने बीज वक्तव्य में पंजाबी साहित्य में बाबा बलवंत के योगदान को रेखांकित किया। जवाहर लाल नेहरू यूनिवर्सिटी के श्री भगवान जोश ने उद्घाटन सत्र की अध्यक्षता की।

संगोष्ठी को तीन सत्रों में विभाजित किया गया था। प्रथम और दूसरे सत्र की अध्यक्षता क्रमशः गुरचरण सिंह अर्शी एवं स्वराजबीर ने की तथा गुरिकबाल सिंह, परमजीत एस. ढींगरा, मोनिका कुमार, सिखदेव सिंह, सरबजीत सिंह, मोहनजीत, गुरनायब सिंह और यादवेंन्द्र सिंह ने अपने आलेख प्रस्तुत किए।

तीसरे सत्र की अध्यक्षता करणजीत सिंह ने की तथा मनमोहन, राजेंद्रपाल एस. वनिता, कुलबीर और अमरजीत घुम्मन ने अपने आलेख प्रस्तुत किए। श्री हरविंदर सिंह ने समापन वक्तव्य दिया तथा धन्यवाद ज्ञापन से संगोष्ठी समाप्त हुई।

बोडो एवं असमिया : भाषा, साहित्य एवं संस्कृति के परिप्रेक्ष्य में पारस्परिक प्रभाव

28 नवंबर 2015, कॉटन कॉलेज गुवाहाटी

अकादेमी के क्षेत्रीय कार्यालय कोलकाता द्वारा कॉटन कॉलेज के बोडो विभाग एवं आलाप के सहयोग से 'बोडो एवं असमिया : भाषा, साहित्य एवं संस्कृति के परिप्रेक्ष्य में पारस्परिक प्रभाव' विषयक एक राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन 28 नवंबर 2015 को कॉटन कॉलेज, गुवाहाटी में किया गया। क्षेत्रीय सचिव डॉ. गोपाल च. बर्मन ने प्रतिभागियों एवं अतिथियों का स्वागत किया। आलाप के सचिव डॉ. महेश्वर कलिता ने आरंभिक वक्तव्य दिया। अकादेमी के बोडो परामर्श मंडल के संयोजक डॉ. प्रेमानंद मशहरी ने बीज वक्तव्य दिया तथा प्रसिद्ध विद्वान डॉ. प्रमोद चंद्र भट्टाचार्य मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित थे। धन्यवाद ज्ञापन कॉटन कॉलेज के बोडो विभाग के प्रो. विरुपक्ष गिरिबसुमतारी ने किया।

प्रथम सत्र में डॉ. स्वर्ण प्रभा चैनरी डॉ. जिबेश्वरकोच एवं डॉ. दिलीप राजबंशी ने अपने आलेख प्रस्तुत किए तथा डॉ. अनिल कुमार बोरो ने सत्र की अध्यक्षता की। दूसरे सत्र की अध्यक्षता डॉ. ताराणी डेका ने की तथा डॉ. प्रांजल शर्मा वशिष्ठ, श्री प्रमाथेश बसुमतारी एवं डॉ. महेश्वर कलिता ने अपने आलेख प्रस्तु किए।

समापन सत्र में कॉटन कॉलेज यूनिवर्सिटी के कुलपति प्रो. ध्रुव ज्योति सइकिया मुख्य अतिथि थे तथा कॉटन कॉलेज के असमिया विभाग की प्रो. मंजू देवी पेगु ने सत्र की अध्यक्षता की। श्री नुरुल इस्लाम सइकिया तथा डॉ. अबूबकर सिद्दीक़ी ने धन्यवाद ज्ञापन किया।

भक्त चरणदास

29 नवंबर 2015, बोलगढ़, ओड़िशा

साहित्य अकादेमी के क्षेत्रीय कार्यालय कोलकाता द्वारा नंदी घोष (सांस्कृतिक संस्था) बोलगढ़, खुर्द के सहयोग से ओड़िशा के एक युगांतर कवि भक्त चरणदास पर संगोष्ठी का आयोजन 29 नवंबर 2015 को किया गया।

अकादेमी के कार्यक्रम अधिकारी श्री मिहिर कुमार साहू ने प्रतिभागियों एवं अतिथियों का स्वागत किया। अकादेमी के ओड़िया परामर्श

संगोष्ठी का एक दृश्य

उद्घाटन सत्र का एक दृश्य

डोगरी कविता

12-13 दिसंबर 2015, जम्मू

साहित्य अकादेमी और जम्मू-कश्मीर कला, संस्कृति एवं भाषा अकादमी, जम्मू के संयुक्त तत्त्वावधान में 12-13 दिसंबर 2015 को जम्मू में 'डोगरी कविता' पर दो-दिवसीय संगोष्ठी का आयोजन किया गया।

संगोष्ठी का उद्घाटन जम्मू विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. आर. डी. शर्मा ने किया। अपने उद्घाटन भाषण में उन्होंने सामाजिक जीवन में कविता के महत्त्व का उल्लेख किया और अनेक संदर्भ देकर अपनी बात रखी। उन्होंने कहा कि संगोष्ठी के दौरान होने वाले विचार-विमर्श द्वारा डोगरी कविता की और उसकी समृद्धि को लेकर कुछ ठोस बातें हो सकेंगी, ऐसी आशा है। इस अवसर पर अकादेमी के डोगरी परामर्श मंडल के संयोजक प्रो. ललित मगोत्रा ने अपने आरंभिक वक्तव्य में कहा कि डोगरी साहित्य की हर विधा में भरपूर लेखन हो रहा है, लेकिन ज़रूरत इस बात की है कि स्तरानुकूल उसका मूल्यांकन भी हो। यह संगोष्ठी इसलिए भी महत्त्वपूर्ण है कि इसमें डोगरी कविता के अनेक अनछुए पहलुओं को उजागर करने वाले आलेख पढ़े जाएँगे।

उद्घाटन सत्र की अध्यक्षता प्रख्यात डोगरी कवयित्री श्रीमती पद्मा सचदेव ने की, जबकि बीज वक्तव्य श्री छत्रपाल ने दिया। संगोष्ठी के आरंभ में अकादेमी के विशेष कार्याधिकारी डॉ. देवेंद्र कुमार देवेश ने औपचारिक स्वागत किया, जबकि सत्र-संचालन करते हुए जम्मू-कश्मीर कला, संस्कृति एवं भाषा अकादमी के अतिरिक्त सचिव अरविंदर सिंह अमन ने सत्र के अंत में मंडल के संयोजक डॉ. गौर हरिदास ने भक्त चरणदास की रचनाओं के बारे में विस्तार से चर्चा की। उद्घाटन सत्र के मुख्य अतिथि श्री निरंजन साहू ने भक्त चरणदास के महाबोध चौतिशा के बारे में बात करते हुए कहा कि यह मानव मन के अहंकार और अभिमान के किसी भी प्रकार से मुक्ति दिलाने के लिए जागृत करता है। नौकरशाह डॉ. बलभद्र साहू ने अपने बीज वक्तव्य द्वारा भक्त चरणदास के प्रशंसकों को मंत्रमुग्ध कर दिया। प्रसिद्ध शिक्षा शास्त्री श्री हरिबंधु साहू ने धन्यवाद ज्ञापन किया।

प्रथम सत्र में श्री विजय कुमार चौधुरी, श्री विश्वनाथ मल्लिक एवं श्री पूर्णचंद्र महापात्र ने भक्त चरणदास की रचनात्मकता पर अपने आलेख प्रस्तुत किए तथा श्री रामचंद्र मिश्र ने सत्र की अध्यक्षता की। दूसरे सत्र की अध्यक्षता श्री दुखी श्याम दास ने की तथा श्री अरिकेदा साहू, श्री कैलाश चंद्र बंथा एवं श्री प्रदीप पटनायक ने अपने आलेख प्रस्तुत किए।

साहित्य अकादेमी के साधारण सभा के सदस्य प्रो. प्रफुल्ल सुबुधी ने समापन सत्र की अध्यक्षता की तथा प्रो. प्रफुल्ल सुबुधी प्रमुख वक्ता के रूप में सम्मिलित हुए। संगोष्ठी में लेखक, विचारक तथा मीडिया के लोग उपस्थित थे।

बायें से: देवेंद्र कुमार देवेश, ललित मगोत्रा, आर.डी.शर्मा, छत्रपाल, माइक पर श्रीमती पद्मा सचदेव

धन्यवाद ज्ञापन किया।

श्री छत्रपाल ने अपने बीज वक्तव्य में डोगरी कविता के अतिरिक्त भारतीय कविता में समय-समय पर होनेवाले परिवर्तनों और समय के साथ कविता के संग जुड़ने वाले प्रतिमानों पर विस्तार से बात की। डोगरी कविता के अब तक के सफ़र में होने वाले परिवर्तनों से संबंधित आयामों पर भी उन्होंने अपने विचार रखे और अनेक डोगरी कवियों की रचनाओं के उदाहरण प्रस्तुत किए। अपने अध्यक्षीय वक्तव्य में श्रीमती पद्मा सचदेव ने कहा कि ऐसे आयोजनों से हमें यह अवसर प्राप्त होता है कि वैश्वीकरण के दौर में हम अपनी भाषा और साहित्य का सही-सही मूल्यांकन कर सकें। उन्होंने श्रोताओं से अपने अनुभव साझा किए और अनेक डोगरी कवियों की रचनाओं का उल्लेख करते हुए उन्हें स्मरण किया। उन्होंने डोगरी के कविता के छंदयुक्त और छंदमुक्त स्वरूप की बात भी की।

भोजनोपरांत प्रथम सत्र जाने-माने डोगरी साहित्यकार श्री देशबंधु डोगरा 'नूतन' की अध्यक्षता में संपन्न हुआ, जिसमें डॉ. ओम गोस्वामी, श्री नरेंद्र भसीन और श्री सुरजीत होश ने क्रमशः 'डोगरी कविता में राजनीतिक चेतना-सन् 2000 तक', 'डोगरी कविता में राजनीतिक चेतना-सन् 2000 के बाद' तथा 'डोगरी कविता में मानवीय अधिकार विमर्श' शीर्षक आलेख प्रस्तुत किए। द्वितीय सत्र जम्मू विश्वविद्यालय के डोगरी विभागाध्यक्ष प्रो. परमेश्वरी शर्मा की अध्यक्षता में संपन्न हुआ, जिसमें डॉ. सुनील कुमार, डॉ. यश रैणा और डॉ. निर्मल विनोद ने क्रमशः 'डोगरी कविता में सूफ़ियाना रंगत', 'डोगरी कविता में मिथ' और 'स्वच्छंद डोगरी कविता : वर्तमान स्थिति' शीर्षक आलेखों का पाठ किया। दोनों ही सत्रों में सुधी श्रोताओं के साथ प्रश्नोत्तर एवं विमर्श का अवसर भी प्रदान किया गया।

दूसरे दिन संगोष्ठी के तृतीय सत्र की अध्यक्षता प्रो. अर्चना केसर ने की। इस सत्र में डॉ. चंचल भसीन और डॉ. अशोक अंबर ने क्रमशः 'डोगरी कविता में नारी-विमर्श' तथा 'उर्दू बहर एवं वज़न की रोशनी में डोगरी ग़ज़ल' शीर्षक आलेख प्रस्तुत किए। चतुर्थ सत्र सुपरिचित डोगरी गीतकार श्री ज्ञानेश्वर की अध्यक्षता में संपन्न हुआ। इस सत्र में डॉ. जोगिंदर सिंह और श्री जगदीप दुबे ने क्रमशः 'डोगरी कविता में कालचेतना-सन् 2000 तक' तथा 'डोगरी कविता में कालचेतना-सन् 2000 के बाद' शीर्षक आलेख प्रस्तुत किए।

युवा साहिति

युवा मैथिली कवियों के कविता-पाठ

1 दिसंबर 2015, सहरसा

साहित्य अकादेमी और एम. एल. टी. कॉलेज, सहरसा (बिहार) के संयुक्त तत्त्वावधान में 1 दिसंबर 2015 को सहरसा में 'युवा साहिति' कार्यक्रम शृंखला के अंतर्गत युवा मैथिली कवियों के कविता-पाठ का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम की अध्यक्षता प्रख्यात मैथिली लेखक डॉ. सुभाषचंद्र यादव ने की। आयोजन में सर्वश्री उमेश पासवान, अमित कुमार मिश्र, उमेश मंडल, नारायण झा, रघुनाथ मुखिया और सुश्री स्वाति शाकंभरी एवं निक्की प्रियदर्शिनी ने अपनी कविताओं का पाठ किया। गीत, ग़ज़ल, मुक्त छंद आदि काव्यशैलियों में पठित कविताओं में एक ओर जहाँ मिथिला का लोकरंग था, वहीं भूमंडलीकरण के प्रभाव में जनजीवन के सरोकारों का चित्रण था। कार्यक्रम का संचालन अकादेमी के विशेष कार्याधिकारी डॉ. देवेंद्र कुमार देवेश द्वारा किया गया।

युवा साहिती कार्यक्रम के अध्यक्ष एवं रचनाकार

परिसंवाद

गुरजादा की साहित्यिक आलोचना

1 नवंबर 2015, श्रीकाकुलम

अकादेमी के क्षेत्रीय कार्यालय बेंगळूरु द्वारा गुरजादा सोसायटी श्री काकुलम के सहयोग से 1 नवंबर 2015 को 'गुरजादा की साहित्यिक आलोचना' विषय पर गुरजादा एजुकेशनल सोसायटी के सेमीनार हॉल में एक परिसंवाद का आयोजन किया गया।

अकादेमी के कार्यक्रम सहायक श्री सुरेश कुमार ने प्रतिभागियों एवं अतिथियों का स्वागत करते हुए गुरजादा एजुकेशनल सोसायटी के प्रति आभार व्यक्त किया। साहित्य अकादेमी के तेळुगु परामर्श मंडल के संयोजक श्री एन. गोपी ने उद्घाटन सत्र की अध्यक्षता करते हुए कहा कि गुरजादा सामाजिक, साहित्यिक एवं व्यक्तिगत क्षेत्र में सुधार के चिह्न हैं। गुरजादा ने अद्भुत ढंग से चीज़ों को प्रस्तुत किया तथा विभिन्न पुस्तकों के रूप में विभिन्न पहलुओं पर 1396 पृष्ठों का लेखन किया, किंतु आलोचना से संबंधित कार्य 25000 पृष्ठों पर आधारित है और आज तक जारी है।

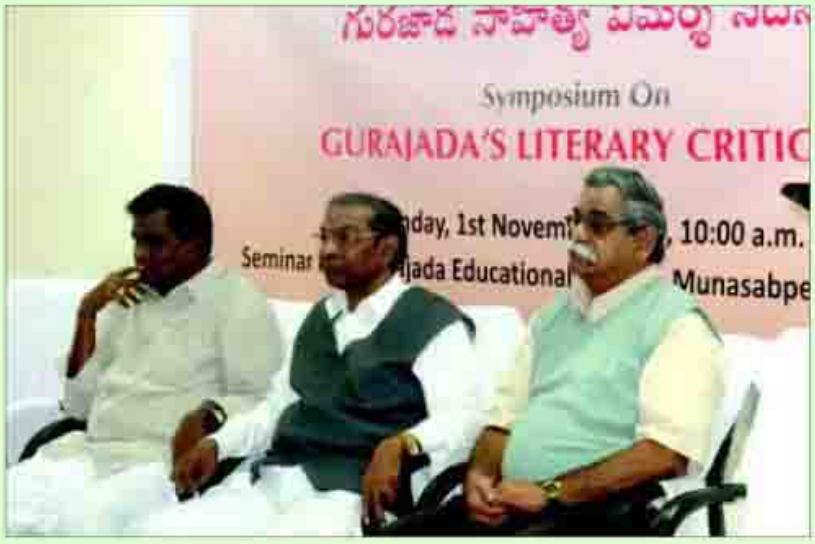

उद्घाटन सत्र का एक दृश्य

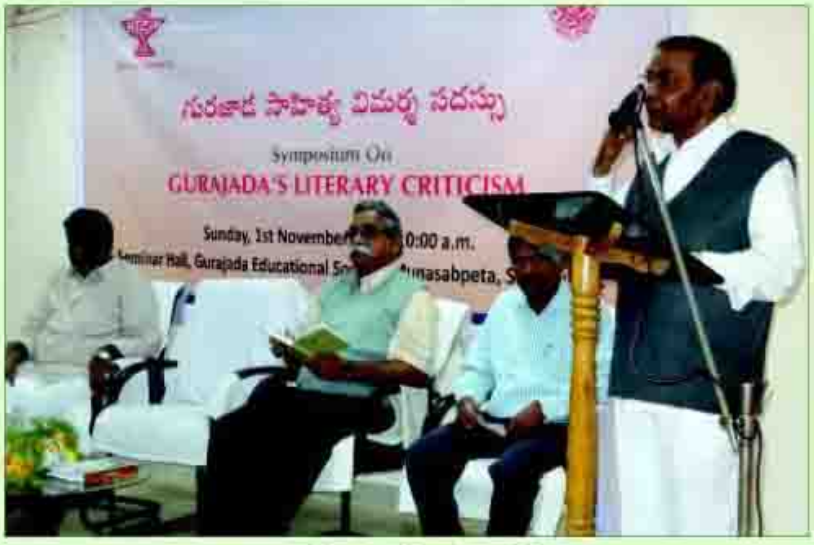

अध्यक्षीय वक्तव्य देते श्री एन. गोपी

गुरजादा एजुकेशनल सोसायटी के अध्यक्ष श्री जी. वी. स्वामी ने कहा कि यह हमारा सौभाग्य है कि तेळुगु साहित्य के लेजेंड्री लेखक के सम्मान में अकादेमी 'परिसंवाद' का आयोजन हमारे परिसर में कर रही है। गुरजादा समाज के लिए एक आदर्श एवं मॉडल हैं।

अकादेमी के तेळुगु परामर्श मंडल के सदस्य एवं अकादेमी के पुरस्कृत तेळुगु आलोचक श्री आर. चन्द्रशेखर रेड्डी ने बीज वक्तव्य दिया तथा कहा कि गुरजादा का साहित्य 120 वर्षों पर फैला इतिहास है। उन्होंने सहमत और असहमत आलोचना की थी।

गायत्री कॉलेज ऑफ़ साइंस एंड मैनेजमेंट, श्रीकाकुलम के उप प्रधानाचार्य श्री अपलक श्रीनिवास बाबू ने धन्यवाद ज्ञापन किया।

परिसंवाद के प्रथम सत्र में श्री बी. वी. ए. रामाराव नायडू ने गुरजादा के जीवन एवं साहित्यिक व्यक्तित्व पर अपना आलेख प्रस्तुत किया। श्री कालिदासु पुरुषोत्तम ने कन्यासुलभ के साहित्यिक आलोचन की समीक्षा पर अपना

आलेख प्रस्तुत किया। श्री अत्तादा अप्पला नायडू ने 'गुरजादा की लघु कहानी पर साहित्यिक आलोचना की समीक्षा' विषय पर अपना आलेख प्रस्तुत किया तथा सत्र की अध्यक्षता भी की।

दूसरे सत्र की अध्यक्षता श्री गंतेदा गवरी नायडू ने की। श्री ए. गोपाल राव ने 'गुरजादा के साहित्य पर नकारात्मक आलोचन की समीक्षा' विषय पर अपना आलेख प्रस्तुत किया। श्री के. संजीव राव ने 'गुरजादा का साहित्यिक आलोचना का विकास' विषय पर अपना आलेख प्रस्तुत किया। सत्र के समापन के बाद 'कमालिनी' (गुरजादा का दिछुवातु) फ़िल्म का प्रदर्शन किया गया।

समापन सत्र की अध्यक्षता श्री एन. गोपी ने की तथा उन्होंने अपने वक्तव्य में कहा कि मुझे खुशी है कि इस परिसंवाद में भारी संख्या में छात्र भी श्रोता के रूप में उपस्थित हैं।

विशिष्ठ अतिथि श्री जी. वी. स्वामी नायडू ने इस परिसंवाद के आयोजन एवं आलेख प्रस्तुति पर अपने विचार व्यक्त किए। गायत्री कॉलेज ऑफ़ साइंस एंड मैनेजमेंट के तेळुगु विभाग के श्री बी. गौरीशंकर राव ने परिसंवाद में पढ़े गए आलेखों की संक्षेप में समीक्षा की। गायत्री कॉलेज ऑफ़ साइंस एंड मैनेजमेंट के प्राचार्य श्री पी. श्रीनिवासराव ने धन्यवाद ज्ञापन किया।

हाइकू शतवार्षिकी

3 नवंबर 2015, करइकल

अकादेमी के क्षेत्रीय कार्यालय चेन्नई द्वारा अवैयार गवर्नमेंट कॉलेज के सहयोग से 3 नवंबर 2015 को कॉलेज परिसर में 'परिसंवाद' का आयोजन किया गया।

अकादेमी के कार्यालय प्रभारी श्री के. पी. राधाकृष्णन ने प्रतिभागियों एवं अतिथियों का स्वागत किया। अकादेमी के साधारण सभा के सदस्य डॉ. आर. संबथ ने उद्घाटन सत्र की अध्यक्षता करते हुए हाइकू और प्राचीन तमिळ कविता विशेषतः संगम युग के दौरान रची गई रचनाओं के बीच समानता को रेखांकित किया। उन्होंने आधुनिक भारत के महान तमिळ कवि सुब्रमण्यम भारती रचित हाइकू के उदाहरण प्रस्तुत किए। अवैयार कॉलेज के प्राचार्य प्रो. वी. आनंदन ने अकादेमी द्वारा इस परिसंवाद के आयोजन पर बधाई दी। प्रो. आनंदन ने अकादेमी द्वारा प्रकाशित कंबतासन विनिवंध का लोकार्पण किया जिसके लेखक श्री सायुबु मरिचेकर को प्रथम प्रति प्रस्तुत की गई। अकादेमी के तमिळ परामर्श मंडल के सदस्य श्री सुंदर मुरुगन ने आभार व्यक्त किया।

प्रथम सत्र की अध्यक्षता डॉ. एन इलंगो ने की तथा 'हाइकू में समाजिक विचार' विषय पर अपना आलेख प्रस्तुत किया। श्री तमिझ नेजांन एवं सुश्री जी. तेनमुझी ने क्रमशः 'हाइकू की पुदुचेरी में उत्पत्ति' एवं 'हाइकू में चीख' विषय पर अपने आलेख प्रस्तुत किए।

दूसरे सत्र की अध्यक्षता प्रसिद्ध हाइकू कवि श्री सीनू तमिझमनी ने की तथा 'हाइकू विधा' पर अपना आलेख प्रस्तुत किया। सुश्री ओवियम तमिझशेलवी एवं श्री पा. थिरुनवुकससु ने क्रमशः 'हाइकू : एक नारीवादी दृष्टिकोण' तथा 'हाइकू : एक सौंदर्य दृष्टिकोण' विषय पर अपने आलेख प्रस्तुत किए।

परिसंवाद में भारी संख्या में लेखक, कवि, स्थानीय मीडिया के लोग उपस्थित थे।

मणिपुर से इतर मणिपुरी लेखन, त्रिपुरा के विशेष संदर्भ में

9 नवंबर 2015, अगरतला

साहित्य अकादेमी के क्षेत्रीय कार्यालय कोलकाता द्वारा मणिपुरी साहित्य परिषद् के सहयोग से 'मणिपुर से इतर मणिपुरी लेखन, त्रिपुरा के विशेष संदर्भ में' विषयक एक परिसंवाद का आयोजन 9 नवंबर 2015 को अगरतला प्रेस क्लब, अगरतला में किया गया। क्षेत्रीय कार्यालय कोलकाता के सहायक संपादक श्री गौतम पाल ने अतिथियों का स्वागत करते हुए मणिपुर से बाहर रहने वाले मणिपुरी लेखकों के साहित्यिक योगदान को रेखांकित किया। अकादेमी के मणिपुरी परामर्श मंडल के संयोजक प्रो. एच. बिहारी सिंह उद्घाटन सत्र के मुख्य अतिथि थे

बायें से: एच. करमजीत सिन्हा, एल. बीर मंगल सिन्हा एवं आर.के. जितेंद्रजीत सिन्हा

एच. बिहारी सिंह एवं एस. सुरेश सिन्हा

तथा मणिपुरी साहित्य परिषद् त्रिपुरा के अध्यक्ष श्री एस. सुरेश सिन्हा ने अध्यक्षता की। श्री एम. अभिराम सिन्हा ने धन्यवाद ज्ञापन दिया। प्रथम सत्र में के. सरिता सिन्हा, प्रेमचंद्र एवं एन. दिलीप कुमार सिन्हा ने आलेख प्रस्तुत किए तथा सत्र की अध्यक्षता श्री एल. कुमार सिन्हा ने की। दूसरे सत्र की अध्यक्षता श्री आर. के. जितेंद्रजीत सिंह ने की तथा श्री एच. करमजीत सिन्हा, एल. बीर मंगल सिन्हा एवं रतींद्र सिन्हा ने अपने आलेख प्रस्तुत किए।

संताली बाल साहित्य

14 नवंबर 2015, कोलकाता

साहित्य अकादेमी द्वारा 'संताली बाल साहित्य' विषय पर 14 नवंबर 2015 को अकादेमी के सभागार में परिसंवाद का आयोजन किया गया।

क्षेत्रीय कार्यालय, कोलकाता के प्रभारी श्री गौतम पाल ने प्रतिभागियों एवं अतिथियों का स्वागत किया। संताली भाषा के प्रसिद्ध लेखक श्री बादल हेम्ब्रम ने अपने बीज वक्तव्य में संताली साहित्य के विकास में बाल साहित्य की भूमिका को रेखांकित किया। श्री पूरण चंद्र किस्कू एवं श्री बिपिन चंद्र मुर्मू ने बाल गीत का पाठ किया जबकि श्री पाचूं गोपाल हेम्ब्रम ने बाल कहानी का पाठ किया। श्री प्रधान मुर्मू ने धन्यवाद ज्ञापन किया।

परिसंवाद के प्रथम सत्र की अध्यक्षता श्री शोभानाथ बेसरा ने की। श्री विश्वनाथ टुडू एवं श्री सरीधर्म हंसदा ने क्रमशः 'प्राथमिक शिक्षा में बाल साहित्य' तथा 'बाल साहित्य में आधुनिक रुझान' विषय पर अपने आलेख प्रस्तुत किए। श्री बेसरा ने समापन वक्तव्य प्रस्तुत करते हुए 'समकालीन संताली बाल साहित्य' की चर्चा की।

पलगुम्मी पदमराजु जन्मशतवार्षिकी

14 नवंबर 2015, वेस्ट गोदावरी

साहित्य अकादेमी के क्षेत्रीय कार्यालय बेंगळूरु द्वारा रुद्रराजू फाउंडेशन, गणथवरम आ. प्र. के सहयोग से तेलुगु साहित्य के महान कथाकार पलगुम्मी पदमराजु जन्मशतवार्षिकी परिसंवाद का आयोजन 14 नवंबर को किया गया।

उद्घाटन सत्र की अध्यक्षता अकादेमी के तेलुगु परामर्श मंडल के संयोजक डॉ. एन. गोपी ने की तथा अपने उद्घाटन वक्तव्य में पलगुम्मी की एक कथाकार के रूप में उपलब्धियों, स्वतंत्रता आंदोलन में एवं सिने क्षेत्र में उनकी भूमिका तथा साहित्य अकादेमी पुरस्कृत 'गलिवाना' के महत्त्व पर प्रकाश डाला।

रुद्रराजू फ़ाउंडेशन के संस्थापक अध्यक्ष श्री

उद्घाटन सत्र का एक दृश्य

आर. वी. एस. राजू ने आरंभिक वक्तव्य में अकादेमी के प्रति आभार व्यक्त किया कि सम्मानित लेखक के जन्मशतवार्षिकी का आयोजन यहाँ किया।

डॉ. सी. भुरनालिनी ने 'पदमराजू राजनीतिक लेखक के रूप में' विषय पर विस्तृत आलेख प्रस्तुत किया। डॉ. वेदागिरी रामबाबू ने पालगुम्मी द्वारा अपनाए गए कहानियों के तकनीक के बारे में बात की।

दूसरे सत्र में डॉ. रासा राजू, श्री च. क. वीरालक्ष्मी देवी, आर. एस. वेंकटेश्वर राव एवं प्रो. येनदलुरी सुधाकर ने अपने आलेख प्रस्तुत किए।

क्षेत्रीय सचिव एस. पी. महालिंगेश्वर ने प्रतिभागियों एवं अतिथियों का स्वागत किया तथा अंत में धन्यवाद ज्ञापन किया।

इक्कीसवीं सदी की उर्दू नज़्म

20 नवंबर 2015, बेंगळूरु

साहित्य अकादेमी, नई दिल्ली द्वारा 'इक्कीसवीं सदी की उर्दू नज़्म' विषय पर 28 नवंबर 2015 को बेंगळूरु में एक परिसंवाद का आयोजन किया गया। क्षेत्रीय सचिव श्री एस. पी. महालिंगेश्वर ने प्रतिभागियों और अतिथियों का स्वागत करते हुए अकादेमी परिसर में उर्दू के इस आयोजन पर प्रसन्नता व्यक्त की।

प्रथम सत्र की अध्यक्षता श्री मुसहफ़ इक़बाल तौसीफ़ी ने की। श्री हक़्क़ानी उल क़ासमी ने 'इक्कीसवीं सदी में उर्दू नज़्म' विषय पर अपना आलेख प्रस्तुत करते हुए इक्कीसवीं सदी की उर्दू नज़्मों के रुझानात को रेखांकित किया। श्री माहिर मंसूर ने इक्कीसवीं सदी में उर्दू की छोटी नज़्मों पर अपना आलेख प्रस्तुत किया। तीसरा आलेख 'इक्कीसवीं सदी में उर्दू की तवील नज़्में' विषय पर श्री सुलेमान खुमार ने अपना आलेख प्रस्तुत किया। अपने अध्यक्षीय वक्तव्य में श्री मुसहफ़ इक़बाल तौसीफ़ी ने पढ़े गए आलेखों पर अपने विचार व्यक्त किए। अकादेमी के उर्दू परामर्श मंडल की सदस्य सुश्री शाइस्ता यूसुफ़ ने शुक्रिया की रस्म अदा की।

दूसरे सत्र की अध्यक्षता सुश्री शाइस्ता यूसुफ़ ने की। इस सत्र में डॉ. आफ़ाक़ आलम सिद्दीक़ी, डॉ. ज़ुबैदा बेगम ने क्रमशः 'इक्कीसवीं सदी में उर्दू नज़्म : एक जाइज़ा' तथा 'उर्दू नज़्म उन्नीसवीं सदी से इक्कीसवीं सदी तक' विषय पर अपने आलेख प्रस्तुत किए। अपने अध्यक्षीय वक्तव्य में सुश्री यूसुफ़ ने पढ़े गए आलेखों पर विस्तार से चर्चा की।

परिसंवाद में स्थानीय लेखक, विचारक, शोध छात्र भारी संख्या में मौजूद थे।

माइक पर सुश्री शाइस्ता यूसुफ़, महालिंगेश्वर, सुलेमान खुमार, हक़्क़ानी उल क़ासमी एवं मुसहफ़ इक़बाल तौसीफ़ी

आज का महिला लेखन : दिल्ली चैप्टर

21 नवंबर 2015, मुंबई

अकादेमी के क्षेत्रीय कार्यालय मुंबई द्वारा मारुई (MARUEE) नई दिल्ली के सहयोग से अकादेमी के सभागार में एक परिसंवाद का आयोजन किया गया।

अकादेमी के क्षेत्रीय सचिव श्री कृष्णा किंबहुने ने प्रतिभागियों एवं अतिथियों का स्वागत करते हुए ऐसी महिला उन्मुखी कार्यक्रमों के आयोजन की आवश्यकता पर बल दिया।

अकादेमी के सिंधी परामर्श मंडल के संयोजक डॉ. प्रेम प्रकाश ने परिसंवाद का उद्घाटन करते हुए विनोदपूर्ण ढंग से कहा कि इस महिला प्रधान आयोजन में वे एकमात्र पुरुष प्रतिभागी हैं। सिंधी परामर्श मंडल की सदस्य एवं MARUEE की प्रतिनिधि सुश्री वीना शृंगी ने बीज वक्तव्य दिया और कहा कि 1926 के बाद से महिला लेखिकाएँ सिंधी साहित्य में अपना योगदान दे रही हैं। कुछ प्रसिद्ध महिला लेखिकाएँ जैसे चंद्रा अडवाणी, गुली सदारंगाणी, देवी वासवाणी ने स्वतंत्रता पूर्व विविध विधाओं में लेखन किया। अकादेमी के क्षेत्रीय सचिव कृष्णा किंबहुने ने धन्यवाद ज्ञापन किया।

परिसंवाद के प्रथम सत्र की अध्यक्षता सुश्री वीना शृंगी ने की तथा माया राही, देवी नागरानी एवं संध्या कुंदनानी ने अपने आलेख प्रस्तुत किए। सुश्री माया राही ने सिंधी महिला कवयित्रियों की कविता के संबंध में बात की। सुश्री देवी नागरानी ने सिंधी में लिखी जा रही नई कविताओं के संदर्भ में बात की। सुश्री संध्या

उद्घाटन वक्तव्य देते प्रेम प्रकाश

कुंदनानी ने महिला लेखिकाओं द्वारा लिखे जा रहे यात्रा वृत्तांत के संदर्भ में बात की तथा पोपटी हीरानंदानी, सुंदरी उत्तमचंदानी, रीटा शहाणी एवं वीना शृंगी के लेखन को रेखांकित किया।

दूसरे सत्र की अध्यक्षता श्रीमती माया राही ने की। सुश्री शालिनी सागर ने अपने अनुभवों को साझा किया। सुश्री भारती केवल रमानी एवं रितु मारिया ने भी सिंधी साहित्य में महिला लेखन के अपने अनुभवों को साझा किया।

डॉ. प्रेम प्रकाश के धन्यवाद ज्ञापन से परिसंवाद का समापन हुआ।

कलिंग आंध्रा में तेलुगु साहित्य का वर्तमान रुझान

22 नवंबर 2015, बरहामपुर

अकादेमी के क्षेत्रीय कार्यालय बेंगलूरु द्वारा विकासक, बहरामपुर के सहयोग से 'कलिंग आंध्र में तेलुगु साहित्य का वर्तमान रुझान' विषय पर एक परिसंवाद का आयोजन किया गया। क्षेत्रीय सचिव एस.पी. महालिंगेश्वर ने प्रतिभागियों एवं अतिथियों का स्वागत करते हुए अकादेमी की गतिविधियों से विस्तार से अवगत कराया।

अकादेमी के तेलुगु परामर्श मंडल के संयोजक डॉ. एन. गोपी अकादेमी एवं कलिंग आंध्र के संयुक्त आयोजन तेलुगु साहित्य के रुझान पर प्रकाश डाला। तेलुगु के प्रसिद्ध कवि श्री विजय चंद्र ने ओड़िशा के आधुनिक लेखकों को साधारणतः तथा बरहामपुर के बारे में विशेष रूप से बात की। कलिंग आंध्र के दूसरे लेखक डॉ. सहदेवराव ने कलिंग आंध्र के लेखकों के बारे में विस्तार से चर्चा की।

डॉ. चार्गोटि तुलसी, डॉ. तुरलापती राजेश्वरी, डॉ. टी. वेंकटेश्वर राव, डॉ. पी. दिनकर, डॉ. सहदेवराव, डॉ. जी. श्रीरामुला, श्री श्रीपति एवं एन. रविकृष्ण ने अपने आलेख प्रस्तुत किए। क्षेत्रीय सचिव श्री एस.पी. महालिंगेश्वर के धन्यवाद ज्ञापन से कार्यक्रम समाप्त हुआ।

आधुनिक तमिळ और मलयाळम् कवियों की तुलना

22 नवंबर 2015, माहे

अकादेमी के उपक्षेत्रीय कार्यालय चेन्नै द्वारा श्री नारायण कॉलेज ऑफ़ एजुकेशन, माहे के सहयोग से 'आधुनिक तमिळ और मलयाळम् कवियों की तुलना' विषयक परिसंवाद का आयोजन 20 नवंबर 2015 को कॉलेज परिसर में किया गया।

उपक्षेत्रीय कार्यालय चेन्नै के कार्यालय प्रभारी श्री के. पी. राधाकृष्णन ने प्रतिभागियों एवं अतिथियों का स्वागत किया तथा अकादेमी की गतिविधियों से अवगत कराया। अकादेमी के साधारण सभा के सदस्य डॉ. आर संबथ ने तमिळ और मलयाळम् के आधुनिक कवियों द्वारा रचित शिल्प की समानता, उत्पादन एवं प्रकृति के अंतर की बात की। श्री नारायण कॉलेज ऑफ़ एजूकेशन के प्राचार्य प्रो. ए. उन्नीकृष्णन ने अकादेमी द्वारा इस आयोजन के लिए अकादेमी को बधाई दी। अकादेमी के तमिळ परामर्श मंडल के सदस्य श्री सुंदर मुरुगन ने आभार व्यक्त किया। प्रथम सत्र की अध्यक्षता एम. परमेश्वरम ने की। सत्र में मलयाळम् के पाँच प्रसिद्ध कवियों ने अपनी कविताएँ प्रस्तुत कीं।

समापन सत्र की अध्यक्षता प्रो. उरु अशोकन ने की। श्री एच. पद्मानाभन ने समापन वक्तव्य दिया। परिसंवाद में भारी संख्या में लेखक, कवि, छात्र तथा स्थानीय लोग मौजूद थे।

मैथिली साहित्य में समालोचना की स्थिति और अपेक्षा

29 नवंबर 2015, भागलपुर

साहित्य अकादेमी और मारवाड़ी कॉलेज, भागलपुर (बिहार) के संयुक्त तत्त्वावधान में 29 नवंबर 2015 को भागलपुर में 'मैथिली साहित्य में समालोचना की स्थिति और अपेक्षा' विषयक परिसंवाद का आयोजन किया गया।

परिसंवाद का उद्घाटन करते हुए तिलका माँझी भागलपुर विश्वविद्यालय के प्रतिकुलपति डॉ. अवधकिशोर राय ने कहा कि मैथिली भाषा नहीं, संस्कृति है। इसे मिथिलांचल में रहने वाले हर जाति, धर्म के लोग बोलते हैं। उन्होंने

बायें से: एम.एस.एच. जॉन, शिव प्रसाद यादव, केशकर ठाकुर, वीणा ठाकुर एवं अवध किशोर राय

साहित्यकारों से अपील की कि वे युवाओं को भाषा-संस्कृति से जोड़ने के लिए आवश्यक क़दम उठाएँ। आरंभ में साहित्य अकादेमी के विशेष कार्याधिकारी डॉ. देवेंद्र कुमार देवेश ने स्वागत भाषण देते हुए अकादेमी की गतिविधियों पर संक्षेप में प्रकाश डाला तथा बताया कि किस प्रकार अकादेमी मिथिलांचल के सुदूर और अब तक उपेक्षित क्षेत्रों में जाकर कार्यक्रमों और पुस्तक-प्रदर्शनियों का आयोजन कर रही है।

परिसंवाद में विषय प्रवर्त्तन अकादेमी के मैथिली परामर्श मंडल की संयोजिका डॉ. वीणा ठाकुर द्वारा किया गया, जबकि बीज भाषण प्रख्यात मैथिली साहित्यकार डॉ. देवेंद्र झा ने दिया। उन्होंने कहा कि मैथिली साहित्य में समालोचना का उच्च स्थान है। डॉ. झा ने लेखन और समालोचना के अंतर को स्पष्ट करते हुए कहा कि बिना प्रतिभा, विद्वता और अभ्यास के साहित्य के गूढ़ार्थ की पहचान कर पाना संभव नहीं है। सत्र की अध्यक्षता करते हुए मारवाड़ी कॉलेज के प्रधानाचार्य डॉ. एम. एस. एच. जॉन ने मैथिली साहित्य के प्रति युवावर्ग की उदासीनता को रेखांकित करते हुए कहा कि जब तक हम अपनी भाषा को जनसरोकार की भाषा में तब्दील नहीं करेंगे, यह उदासीनता दूर नहीं होगी। सत्र का संचालन करते हुए अंत में कॉलेज के मैथिली विभागाध्यक्ष डॉ. शिव प्रसाद यादव ने औपचारिक धन्यवाद ज्ञापन किया।

परिसंवाद का विचार सत्र प्रख्यात मैथिली लेखक प्रोफ़ेसर केशकर ठाकुर की अध्यक्षता में संपन्न हुआ, जिसमें डॉ. प्रमोद कुमार पांडेय, डॉ. रामसेवक सिंह एवं डॉ. महेंद्र नारायण राम ने क्रमशः 'मैथिली समालोचना की वर्तमान स्थिति', 'मैथिली समालोचना का दायित्व और अपेक्षा' तथा 'मैथिली समालोचना के अवरोधक तत्त्व' शीर्षक आलेखों का पाठ किया।

मैथिली संस्कार गीत के विविध आयाम

1 दिसंबर 2015, सहरसा

साहित्य अकादेमी और एम. एल. टी. कॉलेज, सहरसा (बिहार) के संयुक्त तत्त्वावधान में 1 दिसंबर 2015 को सहरसा में 'मैथिली संस्कार गीत के विविध आयाम' विषयक परिसंवाद का आयोजन किया गया।

परिसंवाद का उद्घाटन सत्र प्रख्यात मैथिली साहित्यकार डॉ. धीरेंद्र नारायण झा 'धीर' की अध्यक्षता में संपन्न हुआ। आरंभ में साहित्य अकादेमी के विशेष कार्याधिकारी डॉ. देवेंद्र कुमार देवेश ने औपचारिक स्वागत करते हुए अकादेमी

बायें से: देवनारायण साह, वीणा ठाकुर, कुलानंद झा एवं के.पी. यादव

की गतिविधियों पर संक्षेप में प्रकाश डाला तथा विशेषकर मैथिली भाषा एवं साहित्य के संवर्द्धन के लिए किए जाने वाले प्रयासों की जानकारी दी। इस अवसर पर अकादेमी द्वारा प्रकाशित 'मिथिलाक साहित्यिक-सांस्कृतिक उत्कर्ष में संतकवि लोकनिक अवदान (सं. देवनारायण साह) नामक पुस्तक का लोकार्पण भी किया गया।

परिसंवाद में आरंभिक व्याख्यान प्रस्तुत करते हुए अकादेमी में मैथिली परामर्श मंडल की संयोजिका डॉ. वीणा ठाकुर ने कहा कि मैथिली लोकगीत आज भी मिथिला के जनमानस का कंठहार बना हुआ है। जन्म से लेकर मृत्यु संस्कार तक के गीत मिथिला में प्रचलित हैं, जो पीढ़ी-दर-पीढ़ी वाचिक परंपरा से चले आ रहे हैं। बीज-भाषण देते हुए मैथिली लेखक डॉ. कुलानंद झा ने मैथिली संस्कार गीतों पर उपलब्ध कृतियों का उल्लेख करते हुए गीतों का समुचित वर्गीकरण किया और उनका संक्षिप्त परिचय प्रस्तुत किया। अपने अध्यक्षीय भाषण में डॉ. धीर ने कहा कि संस्कार का मूल उद्देश्य यह है कि हम किसी से बेहतर बातें सीखें। सत्रांत में एम. एल. टी. कॉलेज के प्रधानाचार्य डॉ. के. पी. यादव ने औपचारिक धन्यवाद ज्ञापन किया।

परिसंवाद का विचार सत्र डॉ. जगदीश यादव की अध्यक्षता में संपन्न हुआ, जिसमें डॉ. रामनरेश सिंह, डॉ. रणजीत कुमार सिंह और डॉ. हरिवंश झा ने क्रमशः 'मिथिला में प्रचलित विविध संस्कारों के निहितार्थ', 'मैथिली संस्कार गीतों की व्यावहारिक स्थिति' तथा 'मैथिली संस्कार गीतों में शृंगार और अध्यात्म' शीर्षक आलेख प्रस्तुत किए।

कोंकणी कविता में गीतों का योगदान

2 दिसंबर 2015, मुंबई

साहित्य अकादेमी के क्षेत्रीय कार्यालय द्वारा कोंकणी कविताओं एवं गीतों पर एक अद्भुत परिसंवाद का आयोजन अकादेमी के सभागार में किया गया। क्षेत्रीय सचिव श्री कृष्णा किंबहुने ने प्रतिभागियों, कलाकारों एवं अतिथियों का स्वागत करते हुए कोंकणी के गीतात्मक कविता के बारे में संक्षेप में बताया। कोंकणी के लब्धप्रतिष्ठ नाटककार श्री अजय वैद्य ने परिसंवाद का उद्घाटन करते हुए कहा कि पिंगल कविता का एक मुश्किल रूप है और कविता मुक्त छंद होती है। अकादेमी के कोंकणी परामर्श मंडल के संयोजक तानाजी हलंकर ने बताया कि कोंकणी गीतों का मुंबई में ज़बरदस्त स्वागत हुआ और इसका पहला गीत आकाशवाणी मुंबई से प्रसारित किया गया क्योंकि गोवा में गीत रिकॉर्डिंग की कोई सुविधा नहीं थी। कविता और गीत दोनों एक ही इकाई हैं।

परिसंवाद के प्रथम सत्र की अध्यक्षता कोंकणी कवि उदय भेंब्रे ने की। उन्होंने कहा कि एक गेय कविता भाषा के प्रवाह के बिना एक आदर्श रूप होती है, लेकिन उसका निष्कर्ष भाषा की जातीयता के अनुसार निकलता है। सत्र में तीन आलेख प्रस्तुत किए गए। श्री अक्षय नायक ने कोंकणी के भक्ति गीतों पर अपना आलेख प्रस्तुत किया। ये गीत मराठी के संत कवियों जैसे तुकाराम, नामदेव आदि से प्रभावित होकर लिखे गए। कोंकणी संस्कृति में अध्यात्मिक गीतों का रुझान श्री मनोहर शरगांवकर ने आरंभ किया था। सुश्री बिन्दिया वत्स ने भावनात्मक गीतों पर अपना आलेख प्रस्तुत किया। उन्होंने कहा कि इस विधा को पहले गीत की रचना 1952 में कृष्ण पै ने की थी। ये गीत भावनाओं, प्रेम दर्शन आदि की अभिव्यक्ति करते हैं। सुश्री शकुंतला भरने कोंकणी भाषा की सबसे लोकप्रिय विधा यात्रा पर अपना आलेख प्रस्तुत किया। गीत की यह विधा कोंकणी भाषा की मूल पहचान है। ये गीत प्रायः पार्टियों एवं उत्सवों में गाये जाते हैं। ये गीत लीक से हट कर और पश्चिमी संस्कृति से प्रभावित हैं।

दूसरा सत्र अपनी तरह का एक अलग सत्र था जिसमें किसी आलेख की प्रस्तुति नहीं हुई। यह सचमुच एक गोवा उत्सव था जिसमें तीनों आलेख प्रस्तुतकर्ताओं ने संबंधित शैलियों में कोंकणी गीतों को गाकर प्रस्तुत किया। श्रोताओं ने इस अद्भुत प्रस्तुति का आनंद उठाया।

तानाजी हलंकर अध्यक्षीय वक्तव्य देते हुए, अजय वैद्य एवं कृष्णा किंबहुने

बायें से: अशोक अविचल, वीणा ठाकुर, लक्ष्मण झा, बी.के. दास एवं लल्लन चौधरी

मैथिली साहित्य में बदलती सामाजिक चेतना और मानवीय मूल्य

6 दिसंबर 2015, जमशेदपुर

साहित्य अकादेमी और मिथिला सांस्कृतिक परिषद्, जमशेदपुर (झारखंड) के संयुक्त तत्त्वावधान में 6 दिसंबर 2015 को जमशेदपुर में 'मैथिली साहित्य में बदलती सामाजिक चेतना और मानवीय मूल्य' विषयक परिसंवाद का आयोजन किया गया।

परिसंवाद के आरंभ में श्रोताओं एवं विद्वानों का औपचारिक स्वागत करते हुए साहित्य अकादेमी के विशेष कार्याधिकारी डॉ. देवेंद्र कुमार देवेश ने अकादेमी की गतिविधियों पर संक्षेप में प्रकाश डाला तथा बताया कि अकादेमी मिथिलांचल के अतिरिक्त उन शहरों/नगरों में कार्यक्रम आयोजित कर रही है, जहाँ मैथिली भाषी बहुतायत में निवास कर रहे हैं। टाटा स्टील के उपाध्यक्ष श्री बी. के. दास ने उद्घाटन भाषण करते हुए साहित्य के सामाजिक सरोकार पर अपने विचार व्यक्त किए। अकादेमी के मैथिली परामर्श मंडल की संयोजिका डॉ. वीणा ठाकुर ने विषय प्रवर्त्तन करते हुए कहा कि सामाजिक चेतना और मानवीय मूल्य का अर्थ है, समकालीन होना। बीज भाषण देते हुए डॉ. अशोक अविचल ने सामाजिक चेतना के प्रति मैथिली साहित्यकारों की सजगता को रेखांकित किया। विशिष्ट अतिथि श्री हरिवल्लभ सिंह 'आरसी' ने भी इस अवसर पर अपने विचार व्यक्त किए। सत्राध्यक्ष और मिथिला सांस्कृतिक परिषद् के अध्यक्ष श्री लक्ष्मण झा ने समाज पर मैथिली साहित्य के सकारात्मक एवं नकारात्मक प्रभाव पर अपने विचार व्यक्त किए।

परिसंवाद का विचार सत्र श्री ब्रजकिशोर मिश्र की अध्यक्षता में संपन्न हुआ। डॉ. रवींद्र कुमार चौधरी 'मैथिली साहित्य में मूल्यगत परिवर्तन की प्रवृत्ति' शीर्षक आलेख प्रस्तुत करते हुए कहा कि मूल्य द्वारा ही मनुष्य सामाजिक प्राणी बना रहा है। श्री जयंत कुमार झा ने 'मैथिली साहित्य में सामाजिक चेतना और संवेदना' शीर्षक आलेख में विद्यापति सहित अनेक मैथिली कवियों को संदर्भित करते हुए कहा कि इन लोगों ने सामाजिक कुरीतियों पर प्रहार किया है। श्री अनमोल झा ने 'मैथिली कहानी एवं उपन्यासों में सामाजिक चेतना' विषयक आलेख प्रस्तुत किया। सत्र के अध्यक्ष श्री ब्रजकिशोर मिश्र ने कहा कि जब-जब समाज को जागरूक करने और झकझोरने की ज़रूरत पड़ी है, तब-तब लेखकों ने अपनी क़लम से लोगों में सामाजिक चेतना जागृत करने का कार्य किया है।

अनुवाद में शिल्प एवं चुनौतियाँ

9 दिसंबर 2015, पोल्लची

अकादेमी के उपक्षेत्रीय कार्यालय चेन्नै द्वारा अरुतशेलवर डॉ. एन. महालिंगम ट्रांसलेशन इंस्टीट्यूट के सहयोग से 'अनुवाद में शिल्प एवं चुनौतियाँ' विषय पर एक परिसंवाद का आयोजन 9 दिसंबर 2015 को डॉ. एन. महालिंगम कॉलेज ऑफ़ इंजिनियरिंग एंड टेक्नोलॉजी कैम्पस, पोल्लची में किया गया।

प्रभारी डॉ. एस. राजमोहन ने प्रतिभागियों एवं अतिथियों का स्वागत किया। अकादेमी के तमिळ परामर्श मंडल के संयोजक प्रो. के. नचिमुथ्थु ने परिसंवाद का उद्घाटन किया। लब्धप्रतिष्ठ अनुवादक श्रीमती प्रभा श्रीदेवन ने बीज वक्तव्य दिया। डॉ. सिर्पी बालसुब्रह्मण्यम ने धन्यवाद ज्ञापन दिया।

प्रथम सत्र में श्रीमती जयंत, श्री बालकृष्णन एवं श्री जी. कुप्पुस्वामी ने अपने आलेख प्रस्तुत किए तथा सत्र की अध्यक्षता श्री मालन ने की।

द्वितीय सत्र में श्री पुविआरसु एवं श्रीमती तारा गणेशन ने अपने आलेख प्रस्तुत किए तथा डॉ. सिर्पी बालसुब्रह्मण्यम ने सत्र की अध्यक्षता की।

समापन सत्र की अध्यक्षता ट्रांसलेशन इंस्टीट्यूट के श्री सी. रामास्वामी ने की तथा समापन वक्तव्य श्री के. चेलप्पन ने दिया। महालिंगम कॉलेज के सहायक प्रवक्ता ए. सेंतिल कुमार ने धन्यवाद ज्ञापन किया।

उद्घाटन वक्तव्य देते बाबा भांड

बाल साहित्य : प्रकृति एवं चुनौतियाँ

26 दिसंबर 2015, कालवान

अकादेमी के क्षेत्रीय कार्यालय मुंबई द्वारा इंस्टिट्यूट ऑफ़ नॉलेज इंजिनियरिंग नासिक तथा आर्ट्स, साइंस और कॉमर्स कॉलेज कालवान के सहयोग से 'बाल साहित्य : प्रकृति एवं चुनौतियाँ' विषय पर एक परिसंवाद का आयोजन 26 दिसंबर 2015 को आर्ट्स, साइंस एवं कॉमर्स कॉलेज कालवान में किया गया।

क्षेत्रीय सचिव कृष्णा किंबहुने ने प्रतिभागियों एवं अतिथियों का स्वागत किया। श्रीमती मंगला वरखडे ने आरंभिक वक्तव्य दिया।

परिसंवाद का उद्घाटन मराठी लेखक श्री बाबा भांड ने किया। उन्होंने कहा कि साहित्य बच्चों के मन को बहुत सकारात्मक रूप से प्रभावित करता है। श्री भांड ने एमोरी और ग्रेगोरी बर्नस के तंत्रिका विज्ञान के हाल के प्रयोगों का उदाहरण देते हुए कहा कि बच्चों के लिए लिखना बहुत मुश्किल काम है। मराठी में साने गुरु जी, एन. डी. थमांकर, विनोबा भावे, यदुनाथ थट्टे, बी. आर. भागवत, सई परांजपे, विजया वाड तथा भरत सासने निरंतर बच्चों के लिखते रहे हैं।

प्रथम सत्र का विषय था – 'बाल साहित्य : प्रकृति एवं विषय' तथा सत्र की अध्यक्षता श्री जी. ए. बुवा ने की। श्री नवनाथ तुपे ने अपने आलेख में कहा कि लेखकों को केवल बच्चों की भाषा पर नहीं, बल्कि उनके विचारों की प्रक्रिया पर भी ध्यान देना चाहिए। श्री नरेंद्र लंजेवर ने अपने आलेख में कहा कि मौखिक कहानी कथन बच्चों के सीखने एवं विकास में मददगार साबित होती है। श्री विद्याधर करंदीकर ने बाल रंगभूमि पर अपना आलेख प्रस्तुत करते हुए कहा कि मराठी साहित्य में बाल नाट्य मंच की 150 वर्षों की परंपरा है। उन्होंने कहा कि थियेटर का विकास पौराणिक, एतिहासिक, सामाजिक और लोक कला और कल्पना से हुआ है।

प्रथम सत्र का विषय था 'बाल साहित्य में अनुवाद, अनुकूलन एवं दूसरे प्रयोग' तथा सत्र की अध्यक्षता एकनाथ पगारे ने की। श्री पृथ्वीराज तौर ने अपने आलेख में कहा कि अनूदित पुस्तकें जिसका आवरण सुंदर, रंगीन चित्रकारी हो, वे बच्चों को ज़्यादा आकर्षित करती हैं। श्री विलास गिते ने बाड्ला में बाल साहित्य के बारे में बात की। सुश्री संध्या ठकसाणे ने बाल साहित्य के अनुभवों को साझा किया। श्री भरत सासने ने समापन वक्तव्य दिया।

सत्येंद्रनाथ शर्मा जन्मशतवार्षिकी

27 दिसंबर 2015, गुवाहाटी

अकादेमी के क्षेत्रीय कार्यालय कोलकाता द्वारा असम प्रकाशन परिषद् के सहयोग से सत्येंद्रनाथ शर्मा जन्मशतवार्षिकी परिसंवाद का आयोजन गुवाहाटी पुस्तक प्रदर्शनी, गुवाहाटी में 27 दिसंबर 2015 को किया गया। अकादेमी के क्षेत्रीय सचिव गोपाल च. बर्मन ने प्रतिभागियों और अतिथियों का स्वागत किया। परिसंवाद में बीज वक्तव्य प्रसिद्ध विद्वान नगेन सइकिया ने दिया। अकादेमी के बाड्ला परामर्श मंडल के संयोजक श्री रामकुमार मुखोपाध्याय परिसंवाद में मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित थे। श्री गोविंद प्रसाद शर्मा, मंजूमाला दास और श्री सैलेन भरली ने अपने आलेख प्रस्तुत किए तथा श्रीमती कर्बी डेका हजारिका ने सत्र की अध्यक्षता की।

मराठी में कथात्मक साहित्य

29 दिसंबर 2015, जालना

क्षेत्रीय कार्यालय मुंबई द्वारा श्रीमती दानकुँवर महिला महाविद्यालय, जालना के सहयोग से मराठी में कथात्मक साहित्य विषय पर 29 दिसंबर 2015 को कॉलेज में एक परिसंवाद का आयोजन किया गया। क्षेत्रीय सचिव श्री कृष्णा किंबहुने ने प्रतिभागियों एवं अतिथियों का स्वागत किया। प्रसिद्ध मराठी लेखक श्री मनोहर शहाणे ने अपने उद्घाटन वक्तव्य में अकादेमी द्वारा साहित्यिक जागरूकता के लिए किए जा रहे प्रयासों के लिए अकादेमी का आभार व्यक्त किया। उन्होंने कहा कि कथन प्रत्येक और हर दिल की आत्मा होती है। उन्होंने आगे कहा कि कथन की पहली

बायें से: अविनाश सप्रे, राजा होळकुंडे एवं महेश खरात

अवधारणा को पेंटिंग की कला में देखा जा सकता है।

श्री अविनाश सप्रे ने अपने बीज वक्तव्य में संस्कृति और साहित्य के बंधन की पृष्ठभूमि के आख्यान पर सोचने की सिफ़ारिश की। कल्पनाओं के संकाय के द्वारा लेखक / कलाकार अपनी कल्पना को वास्तविकता में बदल देता है और यह परिवर्तन कला है। श्रीमती दानकुँवर महिला महाविद्यालय के अंग्रेज़ी विभाग की सुश्री अलका नाथरेकर ने धन्यवाद ज्ञापन किया।

प्रथम सत्र की अध्यक्षता श्री अविनाश सप्रे ने की। श्री विद्यासागर पाटंगकर ने 'प्राचीन मराठी साहित्य की कथाओं की परंपरा, विषय पर अपना आलेख प्रस्तुत किया। उन्होंने कहा कि कथन की कला को वक्ता और श्रोता के बीच संवाद से विकसित किया गया। प्राचीन समय में आख्यान, प्रवचन, कीर्तन आदि कथन के रूप में प्रचलित थे। श्री महेश खरात ने अपने आलेख में विभिन्न प्रकार के कथात्मक साहित्य जैसे कहानी, उपन्यास आदि की चर्चा की। श्री राजा होळकुंडे के आलेख में कथात्मक साहित्य, कहानी, समय एवं स्थान, सूत्रधार एवं शैली आदि महत्त्वपूर्ण तत्त्व का उल्लेख था। श्री रणधीर शिंदे ने लोक साहित्य कथा तकनीक के बारे में बात की। दूसरे सत्र की अध्यक्षता श्री प्रदीप देशपांडे ने की तथा श्री कृष्णात खोत, श्री आसाराम लोमटे ने अपनी रचनात्मक प्रक्रिया को साझा किया।

दक्षिण भारत का दलित लेखन

29 दिसंबर 2015, बेंगळूरु

साहित्य अकादेमी के क्षेत्रीय कार्यालय बेंगळूरु द्वारा डॉ. बी. आर. अंबेडकर स्टडी एंड रिसर्च सेंटर, बेंगळूरु यूनिवर्सिटी के सहयोग से 'दक्षिण भारत का दलित लेखन' विषय पर एक परिसंवाद का आयोजन प्रो. वेंकटगिरि गौड़ा हॉल बेंगळूरु यूनिवर्सिटी में 29 दिसबंर 2015 को किया गया। अकादेमी के क्षेत्रीय सचिव श्री एस. पी. महाळिंगेश्वर ने प्रतिभागियों एवं अतिथियों का स्वागत करते हुए कहा कि इस परिसंवाद के द्वारा दक्षिण भारत में लिखे जा रहे दलित लेखन के पुनर्मूल्यांकन करने में आसानी होगी। बेंगळूरु यूनिवर्सिटी के कुलपति प्रो. एम. थिम्मेगवडा ने परिसंवाद का उद्घाटन किया तथा कुल सचिव प्रो. के. सितम्मा तथा अकादेमी के कन्नड परामर्श मंडल के संयोजक डॉ. नरहल्ली बालसुब्रह्मण्यम मुख्य अतिथि के रूप में शामिल थे तथा अकादेमी के उपाध्यक्ष डॉ. चंद्रशेखर कंबार ने सत्र की अध्यक्षता की।

प्रो. एम. थिम्मेगवडा ने अपने उद्घाटन वक्तव्य में भारत में दलित लेखन के विकास और अध्ययन की आवश्यकता पर बल दिया, जो साहित्य के क्षेत्र में एक अनूठे आंदोलन के रूप में उभर कर आया। डॉ. बी. आर. अंबेडकर स्टडी एंड रिसर्च सेंटर के निदेशक डॉ. सिद्दलिंगैया ने अपने बीज वक्तव्य में कहा कि दलितों के चेहरे पर मुस्कान होती है, जबकि उनके दिल दर्द से भरे होते हैं। उन्होंने कहा कि हर जाति के ग़रीब लोगों को दलित के रूप में स्वीकार किया जाना चाहिए। डॉ. के. के. सितम्मा ने कहा कि दलित साहित्य दुनिया में अदम्य मानवीय जीवन के अनुभवों के लिए जाना जाता है। डॉ. नरहल्ली बालसुब्रह्मण्यम ने कहा कि दलित साहित्य पिछड़ी संस्कृति के एक साहित्य के रूप में उभरा है। डॉ. कंबार ने अपने अध्यक्षीय वक्तव्य में कहा कि ब्रिटिश शासन में दो बड़े आंदोलन – भक्ति आंदोलन तथा सार्वजनिक शिक्षा आंदोलन की तरफ़ संकेत किया जिसकी ज्ञान और अभिव्यक्ति ने स्वतंत्रता के लिए लोगों को प्रशिक्षित किया।

प्रथम सत्र में मलयाळम् के प्रसिद्ध दलित कवि डॉ. एम. बी. मनोज ने 'मलयाळम् में दलित कविता' पर अपना आलेख प्रस्तुत किया। द्वितीय सत्र में तेलुगु कथाकार श्री चिलकुरी देवपुत्र ने 'तेलुगु में दलित कथा' विषय पर तथा तेलुगु कवि एवं लेखक डॉ. पुतल हेमलता ने 'तेलुगु में दलित कविता' विषय पर अपने आलेख प्रस्तुत किए।

तृतीय सत्र में दलित कवि एवं लेखक श्री रवि कुमार ने 'तमिळ में दलित कथा' विषय पर अपना व्याख्यान दिया। प्रसिद्ध दलित कवयित्री डॉ. अरंगा मल्लिका ने 'तमिळ में दलित कविता' विषय पर अपना आलेख प्रस्तुत किया। कन्नड भाषा के दलित लेखक एवं आलोचक डॉ. मोगल्ली गणेश ने 'कन्नड में दलित कथा' विषय पर तथा कन्नड की दलित कवयित्री डॉ. के. अनुशुया कांबले ने 'कन्नड में दलित कविता' विषय पर अपने आलेख प्रस्तुत किए। प्रस्तुत किए गए आलेखों में उदाहरण सहित दक्षिण भारतीय भाषाओं में दलित लेखन को रेखांकित किया गया था। डॉ. बी. आर. अंबेडकर स्टडी एंड रिसर्च सेंटर की डॉ. शारदा ने कार्यक्रम का संचालन किया तथा आभार व्यक्त किया।

साहित्य मंच

साहित्य मंच

6 नवंबर 2015, तिरुवरूर

अकादेमी के उपक्षेत्रीय कार्यालय चेन्नै द्वारा सेंट्रल यूनिवर्सिटी तमिलनाडु के सहयोग से साहित्य मंच का आयोजन यूनिवर्सिटी परिसर तिरुवरूर में किया गया। यूनिवर्सिटी के एसोसिएट प्रोफ़सर प्रो. पी. वेलमुरुगन ने प्रतिभागियों एवं अतिथियों का स्वागत किया। अकादेमी के तमिळ परामर्श मंडल के संयोजक प्रो. के. नच्चिमुथु ने अकादेमी द्वारा तमिळ भाषा एवं साहित्य के विकास के लिए किए जा रहे प्रयासों को रेखांकित किया तथा प्रतिभागियों का परिचय प्रस्तुत किया। श्री शिवकुमार मुथैया, श्री आर. करिअप्पा एवं श्री अरंगरासन ने अपनी तमिळ कहानियों का पाठ किया। डॉ. के जवाहर ने धन्यवाद ज्ञापन किया।

साहित्य मंच - मीडिया एवं साहित्य

7 नवंबर 2015, अगरतला

अकादेमी के क्षेत्रीय कार्यालय कोलकाता द्वारा मणिपुरी समाचार पत्र 'मारूप' के सहयोग से मीडिया एवं साहित्य विषय पर 7 नवंबर 2015 को अगरतला प्रेस क्लब, अगरतला में साहित्य मंच का आयोजन किया गया।

अकादेमी के सहायक संपादक श्री गौतम पाल ने प्रतिभागियों एवं अतिथियों का स्वागत करते हुए मीडिया और साहित्य के संबंधों को रेखांकित किया। अकादेमी के मणिपुरी परामर्श मंडल के संयोजक श्री एच.बिहारी सिंह उद्घाटन सत्र के मुख्य अतिथि थे। सत्र के विशिष्ठ अतिथि त्रिपुरा के वरिष्ठ पत्रकार श्री श्रोता रंजन खिसा थे तथा 'मारूप' के संपादक एवं अगरतला प्रेस क्लब के सचिव श्री आर.के. कल्याणजीत सिंह ने

'मारूप' के संपादक आर.के. कल्याणजीत सिंह अध्यक्षीय वक्तव्य देते हुए

अध्यक्षता की। 'मारूप' के संयुक्त संपादक श्री आर.के. तरुणजीत सिंह ने धन्यवाद ज्ञापन दिया।

प्रथम सत्र की अध्यक्षता श्री एम. रामगोपाल सिंह ने की तथा श्री अशंगबाम नेत्रजीत सिंह, श्री बीर मणि सिंह तथा श्री बीर मंगल सिंह ने अपने वक्तव्य दिए। दूसरे सत्र में श्री के. धीरेंद्र सिंह, श्री मंगोल सिंह ने अपने आलेख प्रस्तुत किए तथा श्री रबींद्र कुमार सिंह ने अध्यक्षता की।

साहित्य मंच

29 नवंबर 2015, शिलांग

अकादेमी के क्षेत्रीय कार्यालय कोलकाता द्वारा मणिपुरी साहित्य परिषद् मेघालय के सहयोग से 'मणिपुर से इतर मणिपुरी साहित्य का रुझान' विषय पर साहित्य मंच का आयोजन 29 नवंबर 2015 को किया गया। अकादेमी के क्षेत्रीय सचिव डॉ. गोपाल बर्मन ने प्रतिभागियों एवं अतिथियों का स्वागत करते हुए मणिपुर से बाहर लिखे जा रहे मणिपुरी साहित्य के योगदान को रेखांकित किया। अकादेमी के मणिपुरी परामर्श मंडल के संयोजक प्रो. एच. बिहारी सिंह जो इस कार्यक्रम के मुख्य अतिथि थे, ने अपने पैतृक स्थान से बाहर रहने वाले मणिपुरी लेखकों द्वारा मणिपुरी भाषा के रचनात्मक लेखन के विभिन्न पहलुओं पर विस्तार से चर्चा की। मणिपुरी कॉलेज के मणिपुरी विभाग के राजरेतन सिंह ने 'मणिपुर से बाहर कहानियाँ एवं उपन्यास : मेघालय के विशेष संदर्भ में' विषय पर अपना आलेख प्रस्तुत किया। कार्यक्रम के अध्यक्ष येङ्खोम के. बी. ने अपने अध्यक्षीय वक्तव्य में इस प्रकार के आयोजन पर बल देते हुए कहा कि इससे मणिपुर से बाहर रहने वाले मणिपुरी रचनाकार प्रोत्साहित होंगे। दूसरे सत्र में श्री के. नीलकंठ, सुश्री शांति कुमारी नाङ्थोम्बी, ख. जापान, श्री एम. भगत, क्षेत्री मायुम देकल,

निङ्मबोम रंजीत एवं राजू मैबम ने अपनी कविताओं का पाठ किया।

साहित्य मंच

12 दिसंबर 2015, बेंगळूरु

अकादेमी के क्षेत्रीय कार्यालय बेंगळूरु द्वारा अट्टा गलट्टा बेंगळूरु के सहयोग से 12 दिसंबर 2015 को 'साहित्य मंच' कार्यक्रम के अंतर्गत अमेरिका से पधारे डॉ. नील हाल के साथ एक वार्तालाप का आयोजन अट्टा गलट्टा बुक स्टोर, बेंगळूरु में किया गया।

श्रीमती अंबिका अनंत तेलुगु-अंग्रेज़ी लेखिका ने डॉ. नील हाल का स्वागत करते हुए परिचय दिया। उन्होंने बताया कि डॉ. हाल की अंग्रेज़ी में कविताओं के चार संग्रह प्रकाशित हो चुके हैं तथा जिन्हें पुरस्कृत किया जा चुका है। डॉ. हाल ने अपनी अंग्रेज़ी कविताओं का पाठ किया तथा अपने लेखकीय अनुभवों को साझा किया। कविता पाठ के बाद श्रोताओं द्वारा पूछे गए सवालों के सहजता से जवाब दिए।

प्रस्तुति देते एरिक ओजरिओ एवं साथी कलाकार

साहित्य मंच

15 दिसंबर 2015, बेंगळूरु

अकादेमी के क्षेत्रीय कार्यालय बेंगळूरु द्वारा हिंदी कवि राजेंद्र उपाध्याय के साथ 'साहित्य मंच' कार्यक्रम का आयोजन जैन विश्वविद्यालय के हिंदी विभाग के सहयोग से किया गया। प्रो. प्रभाशंकर प्रेमी लब्धप्रतिष्ठ लेखक, कवि एवं अनुवादक ने कार्यक्रम की अध्यक्षता की। अकादेमी के क्षेत्रीय सचिव श्री एस. पी. महालिंगेश्वर ने आमंत्रित कवि एवं अतिथियों का स्वागत किया। जैन विश्वविद्यालय के हिंदी विभागाध्यक्ष डॉ. मैथिली राव ने श्री उपाध्याय का परिचय कराते हुए उनकी कविताओं के कुछ अंश उद्धृत किए। श्री उपाध्याय ने 'अगरतला', 'सात्वी', 'एक दिन का मेहमान', 'नैना का कबाड़' तथा 'दिल्ली' शीर्षक कविताओं का पाठ किया। डॉ. प्रेमी ने श्री उपाध्याय की सुंदर कविताओं के लिए बधाई दी तथा आभार व्यक्त किया।

वक्तव्य देते पुंडलिक नायक

साहित्य मंच तथा लोक : विविध स्वर

20 दिसंबर 2015, बेलगाम

अकादेमी के क्षेत्रीय कार्यालय मुंबई द्वारा उज्जवाड परिवार बेलगाम के सहयोग से एक साहित्य मंच कार्यक्रम का आयोजन 20 दिसंबर 2015 को सेंट पॉल हाईस्कूल, बेलगाम में किया

गया। अकादेमी के कोंकणी परामर्श मंडल के संयोजक तानाजी हर्लंकर ने साहित्य मंच की अध्यक्षता की। उन्होंने कहा कि मातृ भाषा मानव जीवन की पहचान होती है। यह वास्तव में आश्चर्यजनक है कि वह लोग जो 400 वर्ष पूर्व गोवा से घाटमाथो चले आए थे, वे अपनी मातृ भाषा कोंकणी को अब भी अपने साथ रखे हुए हैं। श्री पुंडलिक नायक, जॉन एफ़ मेंडोंसा, लुईस रोड्रिग्स एवं श्री मिलाग्रिन डि'सूजा ने भी अपने अनुभव साझा किए। साहित्य मंच के बाद 'लोकः विविध स्वर' का आयोजन किया गया, जिसमें एरिक ओजरिओ एवं साथी कलाकारों ने घाटमाथो क्षेत्र के कोंकणी गीतों को प्रस्तुत किया।

साहित्य मंच - कविता पाठ

23 दिसंबर 2015, औरंगाबाद

साहित्य अकादेमी, नई दिल्ली द्वारा सेंट्रल फ़ैसिलिटी बिल्डिंग, डॉ. बाबा साहब अंबेडकर मराठवाड़ा यूनिवर्सिटी, औरंगाबाद में 23 दिसंबर 2015 को सायं 5 बजे 'साहित्य मंच' के अंतर्गत कविता पाठ का आयोजन किया गया, जिसकी अध्यक्षता साहित्य अकादेमी के उर्दू परामर्श मंडल के संयोजक श्री चंद्रभान ख़याल ने की। अकादेमी के कार्यक्रम अधिकारी ने सभी कवियों का परिचय पेश किया और साहित्य मंच कार्यक्रम की उपयोगिता पर प्रकाश डाला। कविता पाठ में जयंत परमार, अज़ीज़ परिहार, शाह हुसैन नेहरी, माहिर मंसूर, असलम मिर्ज़ा, फ़ारूक़ शमीम और ख़ान शमीम ने अपनी कविताएँ प्रस्तुत कीं जिन्हें श्रोताओं ने ख़ूब पसंद किया। इस अवसर पर औरंगाबाद के लेखक, साहित्य रसिक और श्रोता बड़ी संख्या में उपस्थित थे।

चार परस्पर साहित्य मंच

27, 29, 30 दिसंबर 2015

साहित्य अकादेमी द्वारा चार परस्पर साहित्य मंच का आयोजन पानी विषय पर गुजरात के विभिन्न क्षेत्रों में बलवंत पारेख सेंटर, बडोदरा सहित तीन विश्वविद्यालयों के सहयोग से किया गया, जिसके मुख्य अतिथि हिंदी कवि अरुण कमल थे।

साहित्य मंच का पहला पड़ाव 27 दिसंबर 2015 को कच्छ था। आयोजन क्रांतिगुरु श्याम जी कृष्ण वर्मा, कच्छ यूनिवर्सिटी के सहयोग से किया गया। पानी तथा रेगिस्तान विषय को केंद्र में रखकर कवियों ने अपनी रचनाओं का पाठ किया। कार्यक्रम में श्री अरुण कमल सहित जयदेव शुक्ल, धीरेंद्र मेहता, लीलाधर गाडा, योगेश वैद्य, वंचित रें कुकमवाला, विशन नागदा, मदन कुमार अंजरिया, कुलदीप करिया तथा पियूष ठक्कर ने अपनी कविताओं का पाठ किया। कच्छ यूनिवर्सिटी के गुजराती विभाग की प्रो. दर्शना ढोलकिया ने कार्यक्रम की अध्यक्षता की। स्थानीय लेखक, छात्र, मीडिया के लोग भारी संख्या में उपस्थित थे।

दूसरा कार्यक्रम 29 दिसंबर 2015 को महात्मा गाँधी द्वारा स्थापित गुजरात विद्यापीठ के सहयोग से अहमदाबाद में किया गया। कार्यक्रम की अध्यक्षता विद्यापीठ के कुलपति प्रो. अनामिक शाह ने की तथा श्री अरुण कमल, निरंजन भगत, चंद्रकांत टोपीवाला, चंद्रकांत सेठ, योगेश जोशी, वज्ञनेश दवे, नीरव पटेल, हेमंत शाह, सौम्य जोशी, समीर भट्ट तथा प्रशांत केदार जाधव ने अपनी कविताओं का पाठ किया। प्रो. उषा उपाध्याय ने कार्यक्रम का संचालन किया। कार्यक्रम में भारी संख्या में अध्यापक, छात्र तथा श्रोता उपस्थित थे।

30 दिसंबर 2015 को तीसरा कार्यक्रम गोवर्धन स्मृति मंदिर, नाडियाड में हुआ। कार्यक्रम में श्री अरुण कमल सहित सितांशु यशश्चंद्र, हेमंत शाह, समीर भट्ट, पियूष ठक्कर शामिल हुए। कार्यक्रम की अध्यक्षता हेमचंद्र यूनिवर्सिटी नॉर्थ गुजरात के पूर्व कुलपति श्री कुलीन चंद्र याज्ञनिक ने की।

चौथा और अंतिम कार्यक्रम 30 दिसंबर 2015 को सरदार पटेल यूनिवर्सिटी, वल्लभ विद्यानगर में हुआ। इस कार्यक्रम में अरुण कमल सहित नरेश चंद्राकर, भगीरथ ब्रह्मभट्ट, मणिलाल, एच. पटेल, जयेंद्र शेकड़ीवाल, चतुर पटेल, निखिल खरोड़, अशोकपुरी गोस्वामी, वसंत जोशी, निखिल मोरी और इंदु जोशी ने अपनी कविताओं से श्रोताओं को ओत-प्रोत किया। अध्यक्षता कुलपति प्रो. हरीश पढ़ ने की।

साहित्य मंच

30 दिसंबर 2015, कोलकाता

क्षेत्रीय कार्यालय कोलकाता द्वारा साहित्य मंच के अधीन रवींद्र भारतीय यूनिवर्सिटी के सहयोग से प्रो. जियांग जिंग कुई के साथ 'संवाद कार्यक्रम' का आयोजन 30 दिसंबर 2015 को किया गया।

स्कूल ऑफ़ लैंग्वेज़ एंड कल्चर के निदेशक प्रो. सुबीर धर ने प्रो. जियांग जिंग कुई का स्वागत करते हुए श्रोताओं से उनका परिचय कराया। प्रो. जियांग ने अपने व्याख्यान में मुख्य रूप से चीनी भाषा सीखने की संभावना पर ध्यान केंद्रित किया तथा चीन में भारतीय भाषाओं के अध्ययन की वर्तमान स्थिति के बारे में चर्चा की। व्याख्यान के बाद उपस्थित श्रोताओं ने कुछ प्रश्न किए जिनके जवाब प्रो. जियांग ने सहजता से दिए।

प्रो. जियांग जिंग कुई

नारी चेतना

7 नवंबर 2015, अगरतला

अकादेमी के क्षेत्रीय कार्यालय कोलकाता द्वारा अगरतला एवं त्रिपुरा के बाङ्ला लेखिकाओं के साथ 7 नवंबर 2015 को अगरतला प्रेस क्लब में 'नारी चेतना' कार्यक्रम का आयोजन किया गया।

त्रिपुरा की श्रीमती गीता देवनाथ, श्रीमती लक्ष्मी भट्टाचार्य, श्रीमती पंचाली भट्टाचार्य, श्रीमती फूलन भट्टाचार्य एवं कृष्णा बसु तथा बंगाल से श्रीमती तप्ती चक्रवर्ती ने अध्यक्षता की तथा कार्यक्रम में भाग लिया। सम्मिलित रचनाकारों ने अपने लेखकीय अनुभवों को साझा करते हुए अपनी रचनाओं का पाठ किया। क्षेत्रीय कार्यालय कोलकाता के सहायक संपादक श्री गौतम पाल ने अतिथियों का स्वागत किया।

बायें से: श्रीमती गीता देवनाथ, श्रीमती कृष्णा बसु, श्रीमती पंचाली भट्टाचार्य एवं श्रीमती तपती चक्रवर्ती

19 दिसंबर 2015, मुंबई

अकादेमी के क्षेत्रीय कार्यालय बेंगळूरु द्वारा मुंबई यूनिवर्सिटी के कन्नड विभाग के सहयोग से जे. पी. नायक भवन, मुंबई में 'नारी चेतना' कार्यक्रम का आयोजन 19 दिसंबर 2015 को किया गया।

अकादेमी के कन्नड परामर्श मंडल के सदस्य डॉ. जी. एन. उपाध्याय ने प्रतिभागियों और अतिथियों का स्वागत करते हुए अकादेमी की गतिविधियों से अवगत कराया। प्रसिद्ध विद्वान और समालोचक डॉ. ममता राव, डॉ. पूर्णिमा एस. शेट्टी, हेमा सदानंद अमीन, अनसुया गलगली ने व्याख्यान दिए। व्याख्यानों के बाद प्रश्नोत्तर का सत्र भी हुआ, जिसमें श्रोताओं द्वारा प्रश्न पूछे गए। दुर्गप्पा कोटियावर ने धन्यवाद ज्ञापन किया।

रचना पाठ करती रचनाकार

नारी चेतना कार्यक्रम का एक दृश्य

काव्योत्सव

उत्तर-पूर्व काव्योत्सव

8 नवंबर 2015, अगरतला

साहित्य अकादेमी के क्षेत्रीय कार्यालय कोलकाता द्वारा उत्तर-पूर्व : काव्योत्सव का आयोजन 8 नवंबर 2015 को अगरतला प्रेस क्लब, अगरतला में किया गया, जिसमें उत्तर-पूर्व के लब्धप्रतिष्ठ कवियों को आमंत्रित किया गया।

अकादेमी के सहायक संपादक श्री गौतम पाल ने अतिथियों का स्वागत करते हुए आमंत्रित कवियों का परिचय कराया तथा समकालीन पूर्वोत्तर कविता की स्थिति के बारे में बताया। कार्यक्रम का उद्घाटन अकादेमी के मणिपुरी परामर्श मंडल के संयोजक श्री एच.बिहारी सिंह ने किया। आरंभिक वक्तव्य कोकबरोक भाषा के कवि एवं विद्वान श्री चंद्रकांत मुरा सिंह ने दिया तथा बीज वक्तव्य लब्धप्रतिष्ठ आलोचक श्री सुभाशीष तलपत्रा ने प्रस्तुत किया तथा सत्र की अध्यक्षता अकादेमी के साधारण सभा के सदस्य श्री ब्रजगोपाल रे ने की।

प्रथम सत्र में श्री मंगल सिंह (बोडो), श्रीमती शेफालिका वर्मा (मैथिली), श्री ब्रजेंद्र नाओरेम (मणिपुरी), श्रीमती विंध्या सुब्बा (नेपाली) तथा श्री फानी मोहंती (ओड़िया) ने अपनी कविताओं का पाठ किया। श्री अवीक मजुमदार ने सत्र की अध्यक्षता की। दूसरे सत्र में श्री प्रेम गोगोई (असमिया), श्री नबीन मल्ल बोरो (बोडो), श्री आर.के. भुबोंसना (मणिपुरी), श्री उदय थुलुंग (नेपाली), श्री आदित्य कुमार मांडी (सांताली), श्रीमती अपर्णा मोहंती (ओड़िया) ने अपनी कविताओं का पाठ किया तथा बाङ्ला के श्री कृष्ण बसु ने सत्र की अध्यक्षता की। समापन वक्तव्य प्रसिद्ध बाङ्ला विद्वान श्री सरोज चौधुरी ने दी।

बायें से : सरोज चौधरी, एच. बिहारी सिंह, ब्रजगोपाल रे एवं सुभाशीष तलपत्रा

पूर्वोत्तर एवं दक्षिण काव्योत्सव

6 दिसंबर 2015, कोच्चि

साहित्य अकादेमी द्वारा पूर्वोत्तर एवं दक्षिण काव्योत्सव का आयोजन 6 दिसंबर 2015 को कोच्चि में किया गया।

अकादेमी के सचिव डॉ. के. श्रीनिवासराव ने प्रतिभागियों एवं अतिथियों का स्वागत किया। अकादेमी के मलयाळम् परामर्श मंडल के संयोजक श्री सी. राधाकृष्णन ने अध्यक्षीय वक्तव्य दिया। लब्धप्रतिष्ठ मलयाळम् आलोचक श्रीमती एम. लीलावती ने काव्योत्सव का उद्घाटन किया।

पूर्वोत्तर एवं दक्षिण के लब्धप्रतिष्ठ कवियों / कवयित्रियों ने काव्योत्सव में भाग लिया और अपनी कविताओं का पाठ किया।

साहित्य अकादेमी की पत्रिका के ग्राहक बनें

समकालीन भारतीय साहित्य (हिंदी द्वैमासिक)

(अतिथि संपादक : प्रभाकर श्रोत्रिय)

एक प्रति : 25 रु.

वार्षिक सदस्यता शुल्क : 125 रु., त्रिवार्षिक सदस्यता शुल्क : 350 रु.

लेखक से भेंट

भरत सासने

5 नवंबर 2015, नागपुर

साहित्य अकादेमी के क्षेत्रीय कार्यालय, मुंबई द्वारा गिरीश गांधी प्रतिष्ठान, नागपुर के सहयोग से लब्धप्रतिष्ठ मराठी कथाकार भरत सासने के साथ 'लेखक से भेंट' कार्यक्रम का आयोजन 5 नवंबर 2015 को श्रीमंत बाबुराव थनवथे सभागृह, नागपुर में किया गया।

क्षेत्रीय सचिव कृष्णा किंबहुने ने आमंत्रित लेखक एवं अतिथियों का स्वागत करते हुए लेखकों को व्याख्यान देने के लिए आमंत्रित किया।

श्री भरत सासने

श्री भरत सासने ने अकादेमी के प्रति आभार व्यक्त किया कि अकादेमी ने उनके साथ लेखक से भेंट कार्यक्रम का आयोजन किया। उन्होंने बताया कि उनका जन्म जालना, महाराष्ट्र में हुआ तथा 1999 में भारतीय प्रशासनिक सेवा में शामिल हुए तथा बीड के ज़िलाधिकारी पद से सेवानिवृत्त हुए। हालाँकि उच्च प्रशासनिक पद पर रहते हुए उन्होंने मराठी साहित्य के सेवा में उच्च योगदान दिया। उन्होंने कहा कि एक लेखक को एक आदमी की पीड़ा एवं कष्ट को प्रतिबिंबित करने के लिए प्रतिबद्ध होना चाहिए। उन्हें लगता है कि अगर वे मानव जीवन की गंभीर जटिलताओं को देख सकते और हो सकता है एक रचनाकार के नाते उसे सीधे अनुभव कर पाते तो स्वयं को बेहतर तरीक़े से उसकी वास्तविकता को समझने में शिक्षित कर पाते। उनके व्याख्यान के बाद सासने ने दर्शकों के प्रश्नों के उत्तर दिए।

लक्ष्मण दुबे

28 नवंबर 2015, मुंबई

अकादेमी के क्षेत्रीय कार्यालय मुंबई द्वारा सिंधी के प्रख्यात कवि लक्ष्मण दूबे के साथ 'लेखक से भेंट' कार्यक्रम का आयोजन 28 नवंबर 2015 को अकादेमी के सभागार में किया गया।

क्षेत्रीय सचिव कृष्णा किंबहुने ने आमंत्रित लेखकों एवं अतिथियों का स्वागत करते हुए श्री लक्ष्मण दुबे का परिचय कराया। उन्होंने बताया कि श्री दुबे की उमर ख़य्याम की रुबाइयों के हिंदी अनुवाद सहित 14 पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं। श्री किंबहुने ने यह भी बताया कि *दीर्घ, कुंज, रचना* एवं *सिपुन* जैसी सिंधी पत्रिकाओं ने लक्ष्मण दूबे विशेषांक प्रकाशित किए हैं। श्री दुबे के काव्य संग्रह *अजान याद आहे* को साहित्य अकादेमी द्वारा 2010 में पुरस्कृत किया जा चुका है। उन्होंने आगे कहा कि श्री दुबे की कुछ रचनाओं के गुजराती अनुवाद किए जा चुके हैं।

श्री लक्ष्मण दुबे ने कहा कि उन्होंने 15 वर्ष की आयु से शायरी करना शुरू कर दिया था और आरंभ में उन्होंने हिंदी-उर्दू में लिखना शुरू किया। सिंधी के महान अदीब गोविंद माल्ही ने उन्हें सिंधी मे लिखने के लिए प्रेरित किया। पाठकों से प्रशंसा प्राप्त होने के बाद उनका सिंधी में कविताओं का पहला संग्रह प्रकाशित हुआ, जिसे गोविंद माल्ही द्वारा सराहा गया। उन्होंने आगे कहा कि उनके लिए कविता एक प्रकार का समर्पण है और कविता मानवता की मातृभाषा है। उन्होंने आगे कहा कि वह और उनकी कविता प्रेरणादायक रही है और उनके लिए कविता, पूजा और रचनाकार के लिए एक समर्पण है।

4 दिसंबर 2015, कोलकाता

साहित्य अकादेमी के क्षेत्रीय कार्यालय कोलकाता द्वारा अकादेमी के सभागार में 4 दिसंबर 2015 को बाङ्ला कथाकार अतिन बंद्योपाध्याय के साथ 'लेखक से भेंट' कार्यक्रम का आयोजन किया गया।

श्री अतिन बंद्योपाध्याय

कार्यालय प्रभारी श्री गौतम पाल ने आमंत्रित लेखक और अतिथियों का स्वागत करते हुए श्री बंद्योपाध्याय का परिचय प्रस्तुत किया। श्री बंद्योपाध्याय सदैव यात्राएँ करते रहते हैं जो उनके लेखन में भी परिलक्षित होता है। प्रचूर लेखन करते हुए उन्हें कभी भी थकान का एहसास नहीं होता।

श्री बंद्योपाध्याय ने अपने रचना अनुभवों को श्रोताओं से साझा किया। श्रोताओं ने उनके लेखनकर्म के बारे में बहुत सारे प्रश्न किए जिनके उत्तर श्री बंद्योपाध्याय ने सहजता से दिए।

अन्य कार्यक्रम

असमिया - बाङ्ला साहित्य सम्मिलन

4-5 नवंबर 2015, गुवाहाटी

साहित्य अकादेमी के क्षेत्रीय कार्यालय कोलकाता द्वारा ऑल असम पब्लिशर्स एंड बुक सेलर्स एसोसिएशन के सहयोग से पूर्वोत्तर बुक फ़ेयर गुवाहाटी में एक लेखक सम्मिलन का आयोजन किया गया।

क्षेत्रीय कार्यालय कोलकाता के सहायक संपादक श्री गौतम पाल ने प्रतिभागियों एवं अतिथियों का स्वागत करते हुए प्रतिभागियों का परिचय दिया। पहले दिन बाङ्ला तथा असमिया के कथाकारों एवं कवियों ने अपनी रचनाओं का पाठ किया तथा संबंधित भाषाओं के साहित्य के वर्तमान रुझान को रेखांकित किया। इस सत्र में बाङ्ला के कथाकार श्री सिरशेन्दु मुखोपाध्याय, बाङ्ला के प्रसिद्ध कवि श्री सुबोध सरकार, असमिया के प्रसिद्ध कथाकार श्री कुल सइकिया एवं श्री फणिंद्र देव चौधुरी ने अपनी रचनाओं का पाठ किया तथा सत्र की अध्यक्षता श्रीमती अरुपा बरुआ ने की। सम्मिलन का दूसरा दिन असमिया-बाङ्ला थियेटर्स एवं नाटकों पर आधारित था। बाङ्ला की श्रीमती अर्पिता घोष एवं श्री शेखर समद्दर तथा असमिया के श्री नरेन पतगिरी एवं श्री नयन प्रसाद ने अपने आलेख प्रस्तुत किए।

संताली फ़िल्म प्रदर्शन

14 नवंबर 2015, कोलकाता

साहित्य अकादेमी द्वारा 14 नवंबर 2015 को अकादेमी के सभागार में अकादेमी द्वारा निर्मित चार संताली लेखकों पर वृत्तचित्र के प्रदर्शन का आयोजन किया गया। वृत्तचित्र का निर्माण चार संताली लेखकों धीरेंद्रनाथ बास्की, शोभानाथ बेसरा, भैया हाँसदा तथा ठाकुर प्रसाद मुर्मू के व्यक्तित्व एवं कृतित्व पर किया गया था। वृत्तचित्रों की निदेशक सुश्री संगीता दत्ता भी इस अवसर पर उपस्थित थीं। अकादेमी के संताली परामर्श मंडल के संयोजक श्री गंगाधर हाँसदा ने आरंभिक वक्तव्य दिया।

संस्कृति विनिमय कार्यक्रम – रूसी लेखक प्रतिनिधि मंडल

20 नवंबर 2015, मुंबई

अकादेमी के क्षेत्रीय कार्यालय मुंबई द्वारा रूस से पधारे तीन लेखकों के प्रतिनिधि मंडल के लिए स्थानीय लेखकों के साथ एक संस्कृति विनिमय कार्यक्रम का आयोजन अकादेमी के सभागार में 20 नवंबर 2015 को किया गया।

स्थानीय लेखक, कवि, आलोचक एवं अनुवादक डॉ. दिलीप झवेरी (गुजराती), श्रीमती संजीवनी खेर (मराठी), उदयन ठक्कर (गुजराती), महेश लीला पंडित (युवा मराठी कवि), श्री अविनाश कोल्हे (मराठी), डॉ. उर्वशी पंड्या (गुजराती), डॉ. सिसिल कार्वाल्हो (मराठी), सुश्री फेलोमिना संफ्राँसिस्को (कोंकणी), डॉ. साधन कामत (सदस्य कोंकणी परामर्श मंडल), सुश्री देवी नागरानी (सिंधी) ने कार्यक्रम में भाग लिया जबकि रूसी प्रतिनिधि मंडल में डेनिस कारासेव, मखोतिन सर्जी एवं मेरिना मास्कविना शामिल थे।

क्षेत्रीय सचिव कृष्णा किंबहुने ने रूसी प्रतिनिधि मंडल के लेखकों का परिचय कराया तथा स्थानीय लेखकों ने स्वयं से अपना परिचय कराया। स्थानीय लेखकों ने मेहमान प्रतिनिधि मंडल से रूस के लेखन, राजनैतिक स्थिति के बारे में चर्चा की।

अस्मिता मैथिली कथा लेखिकाओं का कहानी-पाठ

29 नवंबर 2015, भागलपुर

साहित्य अकादेमी और मारवाड़ी कॉलेज, भागलपुर (बिहार) के संयुक्त तत्त्वावधान में 29 नवंबर 2015 को भागलपुर में 'अस्मिता' कार्यक्रम शृंखला के अंतर्गत 'मैथिली कथा लेखिकाओं के कहानी-पाठ' का आयोजन किया गया। प्रख्यात मैथिली लेखिका श्रीमती इंदिरा झा की अध्यक्षता में संपन्न इस कार्यक्रम में श्रीमती पन्ना झा, श्रीमती सुस्मिता पाठक और श्रीमती मेनका मल्लिक ने क्रमशः 'विजातीय', 'बिसरल-बिसरल' और 'सिक' कहानियों का पाठ किया। श्रीमती इंदिरा झा ने भी 'चरित्र प्रमाण पत्र' शीर्षक कहानी का पाठ किया। पठित कहानियों में अपनी अस्मिता के लिए समाज में विभिन्न स्तरों पर संघर्षरत स्त्री पात्रों के माध्यम से स्त्री चेतना और विमर्श को स्वर दिया गया है। बड़ी संख्या में उपस्थित प्रबुद्ध श्रोताओं द्वारा कहानियों को पर्याप्त सराहना मिली।

संताली रचना-पाठ

5 दिसंबर 2015, जमशेदपुर

साहित्य अकादेमी और जाहेर थान कमिटि, जमशेदपुर के संयुक्त तत्त्वावधान में 5 दिसंबर 2015 को जमशेदपुर (झारखंड) में 'संताली रचना-पाठ' कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम के आरंभ में साहित्य अकादेमी के विशेष कार्याधिकारी डॉ. देवेंद्र कुमार देवेश ने औपचारिक स्वागत करते हुए अकादेमी की गतिविधियों पर संक्षेप में चर्चा की और संताली भाषा एवं संस्कृति के प्रति संताल समाज के

समर्पण एवं संलग्नता के लिए उनकी सराहना करते हुए इसे दूसरे भाषा-समाज के लिए अनुकरणीय बताया।

रचना-पाठ का यह कार्यक्रम 'कहानी-पाठ' और 'कविता-पाठ' के दो सत्रों में विभाजित था। 'कहानी-पाठ' सत्र की अध्यक्षता अकादेमी में संताली परामर्श मंडल के संयोजक और प्रसिद्ध संताली साहित्यकार श्री गंगाधर हांसदा ने की। इस सत्र में सर्वश्री मांगात मुर्मू, सलखू मुर्मू और लखीनारायण हांसदा ने क्रमशः 'गालती ताहेंनता ओकारे', 'तिरय वाक जीयन काहनी' तथा 'हारियर खन हेंदे' संताली कहानियों का पाठ किया।

'कविता-पाठ' सत्र की अध्यक्षता जाहेर थान कमिटि के महासचिव श्री सी. आर. माझी ने की। इस सत्र में सर्वश्री गोविंद चंद्र माझी, दुगाई टुडु, दुर्गा प्रसाद मुर्मू, श्याम चरण टुडु और गणेश मरांडी ने अपनी कविताओं का पाठ किया। पठित रचनाओं में संताल समाज के जनजीवन और संस्कृति का चित्रण किया गया था।

मुलाक़ात

5 दिसंबर 2015, जमशेदपुर

साहित्य अकादेमी और जाहेर थान कमिटि, जमशेदपुर के संयुक्त तत्त्वावधान में 5 दिसंबर 2015 को जमशेदपुर (झारखंड) में संताली युवा रचनाकारों के साथ 'मुलाक़ात' कार्यक्रम का आयोजन किया गया। संताली की सुपरिचित लेखिका श्रीमती जोबा मुर्मू की अध्यक्षता में संपन्न इस कार्यक्रम में सर्वश्री शंकर सोरेन और परिमल हांसदा ने अपनी कहानियों का पाठ किया, जबकि श्रीमती चिन्मयी हांसदा और सर्वश्री सतीलाल मुर्मू एवं मनोज हांसदा ने अपनी कविताओं का पाठ किया। पठित रचनाओं में बदलते समय-समाज की अभिव्यक्ति के साथ-साथ संताल-संस्कृति की झलक भी मौजूद थी। जोबा मुर्मू ने भाषा एवं साहित्य-संस्कृति के प्रति युवाओं की जागरूकता की सराहना की।

कवि-अनुवादक

5 दिसंबर 2015, जमशेदपुर

साहित्य अकादेमी और जाहेर थान कमिटि, जमशेदपुर के संयुक्त तत्त्वावधान में 5 दिसंबर 2015 को जमशेदपुर (झारखंड) में 'कवि-अनुवादक' शृंखला के अंतर्गत एक कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम में संताली के प्रतिष्ठित कवि श्री मदन मोहन सोरेन ने अपनी संताली कविताओं का पाठ किया। किन्हीं कारणों से अंग्रेज़ी अनुवादक श्री अर्जुन चरण हेम्ब्रम कार्यक्रम में शामिल नहीं हो पाए, लेकिन उनकी अनुपस्थिति में उनके द्वारा किए गए अनुवादों का पाठ मूल कविताओं की प्रस्तुति के साथ-साथ ही किया गया। अकादेमी के इस अनूठे कार्यक्रम को पर्याप्त सराहना मिली।

मैथिली कवि सम्मिलन

6 दिसंबर 2015, जमशेदपुर

साहित्य अकादेमी और मिथिला सांस्कृतिक परिषद्, जमशेदपुर (झारखंड) के संयुक्त तत्त्वावधान में 6 दिसंबर 2015 को जमशेदपुर में 'मैथिली कवि सम्मिलन' का आयोजन किया गया। मैथिली के प्रतिष्ठित एवं वरिष्ठ कवि श्री बुद्धिनाथ मिश्र की अध्यक्षता में संपन्न इस सम्मिलन में श्रीमती शांति सुमन तथा सर्वश्री विद्याधर मिश्र, सियाराम सरस, देवकांत मिश्र, अमलेंदु शेखर पाठक, शिवकुमार 'टिल्लू' और श्यामल सुमन ने अपनी कविताओं का पाठ किया। इस सत्र में विशिष्ट अतिथि के रूप में सुपरिचित लेखक एवं झारखंड सरकार में खाद्य आपूर्ति मंत्री श्री सरयू राय उपस्थित थे। कवि सम्मिलन में श्री श्यामल सुमन ने हम गीत जतैक लिखलौं, छी वेदना हमर। जीवन मे भेल बहुतै अवहेलना हमर।। कविता से श्रोताओं को मुग्ध कर दिया। श्री देवकांत मिश्र ने वीर रस से आलोड़ित कविता सुनाई, जबकि श्री अमलेंदु शेखर पाठक ने आह्वान गीत प्रस्तुत किया। डॉ. शांति सुमन ने जहिया जहिया मोन परय छी, अहां गाम सं दूरि, तहिया लगि बेलपत्र पर रखल लाल सिनूर गीत सुनाया, जबकि डॉ. बुद्धिनाथ मिश्र के गीत चारू कात विषधर, पोरे पोरे डसल छी। अहि बिखाह जंगल मे हमही, चानन गाछ बनल छी। को भी काफ़ी पसंद किया गया। कार्यक्रम का संचालन डॉ. अशोक अविचल ने किया।

अनुवाद कार्यशाला – दलित कविता

21-23 दिसंबर 2015, औरंगाबाद

साहित्य अकादेमी, नई दिल्ली द्वारा 21-23 दिसंबर 2015 को एक अनुवाद कार्यशाला का आयोजन औरंगाबाद में किया गया। कार्यशाला के निदेशक प्रसिद्ध उर्दू कवि जयंत परमार ने कार्यशाला के उद्देश्य पर प्रकाश डालते हुए कार्यशाला के लिए चुनी हुई दलित कविताओं के बारे में बताया। प्रसिद्ध उर्दू शायर श्री शीन काफ़ निज़ाम ने मौजूदा दौर में दलित शायरी के अनुवाद पर ज़ोर दिया। अकादेमी के उर्दू परामर्श मंडल के संयोजक श्री चंद्रभान ख़याल ने दलित कविताओं के अनुवाद की समस्या की ओर इंगित किया। श्री हमीद ख़ाँ ने अनुवाद को अनुभव एवं ज्ञान का कौशल बताया। इस अनुवाद कार्यशाला में मराठी, राजस्थानी, कन्नड, हिंदी, पंजाबी, तेलुगु, बाङ्ला, ओड़िया, मलयाळम् एवं गुजराती भाषा की चुनी हुई लगभग 120 दलित कविताओं का उर्दू में अनुवाद किया गया।

अनुवाद कार्यशाला में श्री जयंत परमार, श्री भूपेंद्र अज़ीज़ परिहार, श्री शीन काफ़ निज़ाम, श्री माहिर मंसूर एवं श्री हमीद ख़ाँ ने भाग लिया।

लोक : विविध स्वर

'प्रह्लाद नाटक'

14 नवंबर 2015, बरहामपुर

अकादेमी के क्षेत्रीय कार्यालय कोलकाता द्वारा 'प्रह्लाद नाटक' पर 'लोक : विभिन्न स्वर' कार्यक्रम का आयोजन कलिंग साहित्य समाज बरहामपुर के सहयोग से 14 नवंबर 2015 को उत्कल आश्रम ओपन थियेटर, बरहामपुर में किया गया। अकादेमी के कार्यक्रम अधिकारी श्री मिहिर कुमार साहू ने प्रतिभागियों एवं अतिथियों का स्वागत किया। कलिंग साहित्य समाज के सचिव प्रो. देवी प्रसन्न पटनायक ने अध्यक्षता की। डॉ. शरत कुमार जेना ने परिचय दिया। शांति निकेतन के ओड़िया विभाग के प्रमुख प्रो. मनोरंजन प्रधान, मुख्य अतिथि ने ओड़िशा के लोक संस्कृति विशेषतः दक्षिण ओड़िशा के बारे में बात की। भुवनेश्वर दूरदर्शन के कार्यक्रम अधिकारी डॉ. शांतनु कुमार रथ ने गंजम ज़िले की लोक संस्कृति, लोक नाटक के बारे में बात की। उन्होंने 'प्रह्लाद नाटक' के उद्गम कला तथा मंचन शैली के बारे में बात की। प्रह्लाद नाटक का प्रदर्शन श्री कान्हू चरण सदांगी तथा उनके सहयोगियों द्वारा किया गया। डॉ. बनमाली पाणिग्रही ने धन्यवाद ज्ञापन किया।

वक्तव्य देती कर्बी डेका हज़ारिका, प्रोबिन च. दास, के.के. डेका एवं पी. हज़ारिका

असम का कठपुतली खेल

25 नवंबर 2015, नगांव

अकादेमी के क्षेत्रीय कार्यालय कोलकाता द्वारा महापुरुष श्रीमंत संकरदेव विश्वविद्यालय नगांव के सहयोग से 25 नवंबर 2015 को लोक : विविध स्वर कार्यक्रम के अंतर्गत 'असम का कठपुतली खेल' प्रस्तुत किया गया।

कार्यक्रम का उद्घाटन अकादेमी की असमिया परामर्श मंडल की संयोजक प्रो. कर्बी डेका हज़ारिका ने किया। क्षेत्रीय सचिव डॉ. गोपाल बर्मन ने अतिथियों का स्वागत करते हुए असम के कठपुतली खेल के मूल और परंपरा का उल्लेख किया। असम कठपुतली के विकास की चर्चा प्रो. प्रोबिन दास ने की तथा महापुरुष श्रीमंत संकरदेव विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. के. के. डेका ने अध्यक्षता की। डॉ. राधाकांत बर्मन ने अपने साथियों के साथ कठपुतली का प्रदर्शन किया। महापुरुष श्रीमंत संकरदेव विश्वविद्यालय के असमिया विभाग के डॉ. पी. हज़ारिका ने धन्यवाद ज्ञापन किया।

कठपुतली खेल का एक दृश्य

नए प्रकाशन

असमिया

बिदिसा बधजय
ले. विश्वास पाटिल, अनु. पंकज ठाकुर
पृ. 472, रु. 230/-
ISBN : 978-81-260-3022-4 (पुनर्मुद्रण)

जिबनतीत
ले. राजराव, अनु. प्रफुल्ल च. बरुआ एवं सुचिव्रत राय चौधुरी
पृ. 380, रु. 220/-
ISBN : 978-81-260-2119-2 (पुनर्मुद्रण)

मतिर मानुह
ले. कालिन्दीचरण पाणिग्रही, अनु. सत्येंद्रनाथ शर्मा
पृ. 104, रु. 100/-
ISBN : 978-81-260-2442-1 (पुनर्मुद्रण)

समयक सुबली निदियान
ले. एन. गोपी, अनु. पुरबी बोरा
पृ. 80, रु. 80/-
ISBN : 978-81-260-4898-4

बाङ्ला

बानभत्तर आत्मकथा
ले. हज़ारी प्रसाद द्विवेदी, अनु. प्रियरंजन सेन
पृ. 282, रु. 150/-
ISBN : 978-81-260-2013-3 (पुनर्मुद्रण)

बाङ्ला गल्प संकलन (खंड 2)
सं. एवं सं. आसरु कुमार सकदर एवं कविता सिन्हा
पृ. 288, रु. 140/-
ISBN : 978-81-260-2519-0 (पुनर्मुद्रण)

बाङ्लार साहित्य इतिहास
सुकुमार सेन
पृ. 284, रु. 130/-
ISBN : 978-81-260-4896-0 (पुनर्मुद्रण)

भगवान बुद्ध
ले. धर्मानंद कौसाम्बी, अनु. चंद्रोदय भट्टाचार्य
पृ. 252, रु. 140/-
ISBN : 978-81-260-2504-6 (पुनर्मुद्रण)

चैतन्य भागवत
ले. बृन्दाबनदास, सं. एवं स. सुकुमार सेन
पृ. 344, रु. 270/-
ISBN : 978-81-260-1769-0 (पुनर्मुद्रण)

चिंगरी
ले. तकषी शिवशंकर पिल्लै, अनु. बोम्मना विश्वनाथन एवं निलिन अब्राहम
पृ. 256, रु. 140/-
ISBN : 978-81-260-2658-6 (पुनर्मुद्रण)

क़ाज़ी नज़रुल इस्लाम
ले. गोपाल हालदार, अनु. शिवप्रसाद समद्दार
पृ. 88, रु. 50/-
ISBN : 978-81-260-0847-6 (पुनर्मुद्रण)

कुर्ती गल्प
सत्यकी हालदार
पृ. 176, रु. 110/-
ISBN : 978-81-260-4968-4 (पुनर्मुद्रण)

कुवराय ढाका (अ. पु. हिंदी उपन्यास)
ले. गोविंद मिश्र, अनु. सुबीमल बासक
पृ. 192, रु. 140/-
ISBN : 978-81-260-4901-1

मृत्युंजय
ले. बीरेन्द्र कुमार भट्टाचार्य, अनु. यू. आर. भट्टाचार्य
पृ. 240, रु. 130/-
ISBN : 978-81-260-4969-1 (पुनर्मुद्रण)

रिज़ाउल करीम (विनिबंध)
ज़हीरुल हसन
पृ. 128, रु. 50/-
ISBN : 978-81-260-2804-7 (पुनर्मुद्रण)

समरेश बसु (विनिबंध)
सत्यजीत चौधुरी
पृ. 100, रु. 50/-
ISBN : 978-81-260-4973-8

शरदेंदु बंद्योपाध्याय
सरबनी पाल
पृ. 152, रु. 50/-
ISBN : 978-81-260-4075-9 (पुनर्मुद्रण)

अंग्रेज़ी

ए हिस्ट्री ऑफ़ इंडियन इंग्लिश लिट्रेचर
सं. एवं सं. एम. के. नायक
पृ. 344, रु. 150/-
ISBN : 978-81-260-1872-7 (पुनर्मुद्रण)

गंगापुत्र एंड अदर स्टोरीज़ (अ.पु. मैथिली कहानी संग्रह)
मनमोहन झा
पृ. 72, रु. 75/-
ISBN : 978-81-260-4753-0

मेड ऑफ़ आइस (अ.पु. सिंधी कविताएँ)
वासदेव मोही, अनु. विनोद आसुदानी एवं राम दरयानी

द टेल ऑफ़ ए प्लेस
(अ. पु. मलयाळम् उपन्यास)
ले. एस. के. पोट्टेकाट, अनु. प्रेम जयकुमार
पृ. 656, रु. 300/-
ISBN : 978-81-260-4684-8

गुजराती

सम्प्रत गुजराती कविता (1985–2010)
सं. राजेंद्र पटेल
पृ. 208, रु. 150/-
ISBN : 978-81-260-4710-9

हिंदी

सरस्वतीचंद्र खंड I (गुजराती क्लासिक)
गोवर्धन माधवराम त्रिपाठी, अनु. आलोक गुप्त
पृ. 328, रु. 250/-
ISBN : 978-81-260-4538-9

सरस्वतीचंद्र खंड II (गुजराती क्लासिक)
गोवर्धन माधवराम त्रिपाठी,
अनु. वीरेंद्रनारायण सिंह
पृ. 435, रु. 125/-
ISBN : 978-81-260-4539-6

सरस्वतीचंद्र खंड III (गुजराती क्लासिक)
गोवर्धन माधवराम त्रिपाठी,
अनु. वीरेंद्रनारायण सिंह
पृ. 324, रु. 250/-
ISBN : 978-81-260-4540-2

सरस्वतीचंद्र खंड IV (पूर्वार्द्ध)
(गुजराती क्लासिक)
गोवर्धन माधवराम त्रिपाठी, अनु. आलोक गुप्त
पृ. 436, रु. 300/-
ISBN : 978-81-260-4541-9

सरस्वतीचंद्र खंड IV (उत्तरार्द्ध)
(गुजराती क्लासिक)
गोवर्धन माधवराम त्रिपाठी, अनु. आलोक गुप्त
पृ. 364, रु. 280/-
ISBN : 978-81-260-4768-0

शांति संदेह (अ.पु. नेपाली कविताएँ)
ले. जस योज्जन प्यासी,
अनु. बिर्ख खडका डुवर्सेली
पृ. 132, रु. 100/-
ISBN : 978-81-260-4762-8

विद्यानिवास मिश्र रचना संचयन
सं. एवं संपादन गिरीश कुमार मिश्र
पृ. 939, रु. 600/-
ISBN : 978-81-260-4780-2

कन्नड

महर्षि विट्ठल रामजी शिंदे : जीवन मन्तू कार्य
(अ. पु. मराठी जीवनी)
ले. जी. एम. पवार,
अनु. चंद्रकांत पोकले
पृ. 624, रु. 340/-
ISBN : 978-81-260-4506-X

कोंकणी

दिनकराली कवनम
दिनकर देसाई
पृ. 90, रु. 75/-
ISBN : 978-81-260-3258-7

स्वप्न सारस्वत (कन्नड उपन्यास)
ले. गोपाल कृष्ण पइ,
अनु. जयश्री शानबाग
पृ. 528, रु. 250/-
ISBN : 978-81-260-4912-7

मराठी

भाऊ पाध्येय (मराठी उपन्यासकार)
राजन गवास
पृ. 160, रु. 50/-
ISBN : 978-81-260-4914-1

राम गणेश गडकरी
(मराठी कवि एवं नाटककार पर विनिबंध)
ले. जी.पी.प्रधान
अनु. नंद कुमार रोपलेकर
पृ. 80, रु. 50/-
ISBN : 978-81-260-4918-9

नेपाली

मैथिली कथा संग्रह
सं. एवं सं. कमख्या देवी,
अनु. मुक्ति प्रसाद उपाध्याय
पृ. 140, रु. 130/-
ISBN : 978-81-260-4970-7

ओड़िया

ऐ अदिमा बिना
ले. ओ. एन. वी. कुरुप, अनु. अश्वनि मिश्र
पृ. 290, रु. 220/-
ISBN : 978-81-260-4906-6

बाजी राउत ओ अनन्य कविता
सं. एवं सं. संग्राम जेना
पृ. 360, रु. 270/-
ISBN : 978-81-260-4967-7

इच्छावती (नवोदय योजना)
सुजीत कुमार सतपथी
पृ. 112, रु. 110/-
ISBN : 978-81-260-4966-0

तमिळ

ब्रह्मऋषि नारायण गुरु (विनिबंध)
टी. भास्करन
पृ. 131, रु. 50/-
ISBN : 81-260-2686-9 (पुनर्मुद्रण)

चेम्मीन (अ. पु. मलयाळम् उपन्यास)
तकषी शिवशंकर पिळ्ळै, अनु. संदर रामस्वामी
पृ. 350, रु. 150/-
ISBN : 81-260-0713-3 (पुनर्मुद्रण)

जी. नागराजन (विनिबंध)
सी. मोहन
पृ. 112, रु. 50/-
ISBN : 81-260-4823-6

कुलासेखर अज़वार (विनिबंध)
एम. पी. श्रीनिवासन
पृ. 128, रु. 50/-
ISBN : 81-260-1631-0 (पुनर्मुद्रण)

महाकवि भरथियार कट्टुरैगल
(भारती के लेख संग्रह)
सं. जयकांतन एवं सिर्पी बालसुब्रह्मण्यम
पृ. 306, रु. 150/-
ISBN : 81-260-1448-2 (पुनर्मुद्रण)

मु. व. वसकम (रीडर ऑन मु. व.)
ले. आ. मोहन
पृ. 256, रु. 190/-
ISBN : 81-260-4824-3

नम्माझवार (विनिबंध)
अनु. थंबी श्रीनिवासन
पृ. 112, रु. 50/-
ISBN : 81-720-1389-2 (पुनर्मुद्रण)

एस. राधाकृष्णन (विनिबंध)
अनु. के. राजा
पृ. 155, रु. 50/-
ISBN : 81-260-0894-6 (पुनर्मुद्रण)

थिरु वी. का. (विनिबंध)
एम. आर. पी. गुरुसामी
पृ. 82, रु. 50/-
ISBN : 81-260-0355-3 (पुनर्मुद्रण)

थुरवी वेंदार श्रीनारायण गुरु (विनिबंध)
ले. टी. भास्करन, अनु. विजय कुमार कुनेसरी
पृ. 152, रु. 50/-
ISBN : 81-260-4204-3 (पुनर्मुद्रण)

राष्ट्रीय पुस्तक सप्ताह

14-21 नवंबर 2015, बेंगळूरु

14-21 नवंबर 2015 को अकादेमी के क्षेत्रीय कार्यालय, बेंगळूरु द्वारा आयोजित पुस्तक सप्ताह के दौरान कर्नाटक सरकार में पुस्तकालय विभाग के सहयोग से 'साहित्य मंच' का आयोजन किया गया।

कार्यक्रम का उद्घाटन प्रसिद्ध कवि डॉ. सिद्धलिंगैया ने किया तथा डॉ. नरहल्ली बालसुब्रह्मण्यम ने अध्यक्षता की। पुस्तकालय अध्यक्ष श्री के. जी. वेंकटेश विशिष्ट अतिथि थे तथा लब्धप्रतिष्ठ कथाकार बोलवर मुहम्मद कुञ्ही एवं डॉ. एन. दामोदर शेट्टी विशिष्ट अतिथि के रूप में सम्मिलित थे।

डॉ. सिद्धलिंगैया ने पुस्तक संस्कृति उत्पन्न करने के लिए अकादेमी के प्रति आभार व्यक्त किया। अकादेमी के कन्नड परामर्श मंडल के संयोजक डॉ. नरहल्ली बाल सुब्रह्मण्यम ने अपने अध्यक्षीय वक्तव्य में अकादेमी की गतिविधियों के बारे में विस्तार से चर्चा की।

डॉ. ना. दामोदर शेट्टी ने आधुनिक कवियों और अन्य विधाओं के प्रतिष्ठित अनुवाद प्रकाशित करने के लिए अकादेमी को बधाई दी। श्री कुञ्ही ने अकादेमी से अपने संबंधों का उल्लेख किया।

प्रसिद्ध कहानीकार श्री के. सत्यानारायण ने कहा कि पुस्तक को एक वस्तु तथा पाठक को उपभोक्ता समझना उचित नहीं है। उन्होंने कहा कि पुस्तक एक सांस्कृतिक पहचान है और केवल शिक्षाविदों द्वारा उत्पादित नहीं होता है। प्रसिद्ध आलोचक श्री गिरीश वाघ ने कहा कि लेखकों, प्रकाशकों, पाठकों के बीच सूचनाओं के आदान-प्रदान से पुस्तक संस्कृति को बढ़ाने में मदद मिलती है।

पूर्व निदेशक पुस्तकालय श्री राजशेखर ने भी पुस्तक संस्कृति को आकार देने में पुस्तकालय की भूमिका को रेखांकित किया। अकादेमी के क्षेत्रीय सचिव एस.पी. महालिंगेश्वर ने अतिथियों का स्वागत करते हुए पुस्तक की महत्ता को रेखांकित किया।

20 नवंबर 2015 को समापन समारोह की अध्यक्षता अकादेमी के उपाध्यक्ष डॉ. चंद्रशेखर कंबार ने की तथा अपने अध्यक्षीय वक्तव्य में पुस्तक एवं पुस्तक संस्कृति को बढ़ाने पर बल दिया। पब्लिक लाइब्रेरीज़ के निदेशक डॉ. सतीश कुमार होसामनी ने पुस्तकालय आंदोलन में सक्रिय भूमिका निभाने के लिए अकादेमी को बधाई दी। मुख्य अतिथि डॉ. नरहल्ली बाल सुब्रह्मण्यम ने सप्ताह भर तक चलने वाले इस कार्यक्रम की सफलता के लिए हर व्यक्ति के प्रति आभार व्यक्त किया।

सेवानिवृत्ति

श्री ब्रजेन्द्र त्रिपाठी

साहित्य अकादेमी के प्रधान कार्यालय, दिल्ली में कार्यरत उपसचिव श्री ब्रजेन्द्र त्रिपाठी 30 अक्टूबर 2015 को सेवानिवृत्त हुए। इस अवसर पर अकादेमी द्वारा आयोजित विदाई समारोह में उपस्थित कार्यालय के सभी सहयोगियों ने उन्हें भावभीनी विदाई देते हुए उनके उज्जवल भविष्य के लिए शुभकामनाएँ दीं। अकादेमी के सचिव डॉ. के.श्रीनिवासराव ने श्री त्रिपाठी को स्मृति फलक और शॉल उढ़ाकर उनका अभिनंदन किया। सचिव महोदय ने श्री त्रिपाठी को एक सौम्य स्वभाव का मृदुभाषी व्यक्ति बताया।

श्री त्रिपाठी ने अकादेमी में बिताए हुए दिनों को याद करते हुए कहा कि उन्होंने कभी भी अपने उपर अपने अधिकारी को हावी नहीं होने दिया। इस अवसर पर अकादेमी के सहयोगियों ने श्री त्रिपाठी से जुड़ी यादों को साझा किया।

श्री त्रिपाठी ने अकादेमी में कार्यक्रम अधिकारी के रूप में 30 सितंबर 1986 को पदभार ग्रहण किया था। कुछ समय तक 'समकालीन भारतीय साहित्य' का संपादन का कार्यभार भी संभाला। उपसचिव के रूप में आपने हिंदी विभाग के लिए अपनी सेवाएँ दीं। साहित्य अकादेमी परिवार श्री त्रिपाठी के स्वस्थ, सक्रिय एवं उज्जवल भविष्य की कामना करता है।

नवंबर-दिसंबर 2015 के साहित्यिक आयोजन

11 नवंबर 2015	श्रीकाकुलम	गुरजादा एजुकेशन सोसायटी, तेळुगु विभाग, श्रीकाकुलम के सहयोग से श्रीकाकुलम, आंध्र प्रदेश में 'गुरजादा साहित्यिक आलोचना' विषयक परिसंवाद का आयोजन
1-2 नवंबर 2015	मुंबई	प्रभु 'वफा' जन्मशतवार्षिकी संगोष्ठी का आयोजन
2-3 नवंबर 2015	दिल्ली	कमला नेहरू कॉलेज, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली द्वारा कॉलेज परिसर में 'भारतीय साहित्य में दलित स्त्री का चित्रण और चिंताएँ' विषय पर आयोजित राष्ट्रीय संगोष्ठी में आंशिक प्रायोजन
3 नवंबर 2015	करैकल, तमिलनाडु	अवैयर गवर्नमेंट कॉलेज फॉर वुमेन के सहयोग से करैकल, तमिलनाडु में 'हायकु' विषय पर परिसंवाद का आयोजन
4 नवंबर 2015	चंडीगढ़	जी.जी.एस. कॉलेज फॉर वुमेन, चंडीगढ़ में युवा पंजाबी लेखकों संग 'युवा मंच' कार्यक्रम का आयोजन
4-5 नवंबर 2015	गुवाहाटी	'ऑल असम पब्लिशर्स एंड बुकसेलर्स ऐसोसिएशन' के सहयोग से 17वीं उत्तर पूर्व किताब मेला के अवसर पर गुवाहाटी में 'साहित्य मंच' कार्यक्रम का आयोजन
5 नवंबर 2015	नागपुर	गिरिश गाँधी प्रतिष्ठान, नागपुर के सहयोग से श्री भरत ससने, प्रतिष्ठित मराठी लेखक के साथ 'लेखक से भेंट' कार्यक्रम का आयोजन
6 नवंबर 2015	दिल्ली	संस्कृति मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा 1-7 नवंबर 1015 तक आयोजित भारतीय संस्कृति महोत्सव के अवसर पर 'अखिल भारतीय काव्योत्सव' का आयोजन
6 नवंबर 2015	थिरुवरुर, तमिळनाडु	विभिन्न भारतीय भाषाओं के लेखकों के साथ 'अभिव्यक्ति' कार्यक्रम का आयोजन
7 नवंबर 2015	अगरतला	मरूप के सहयोग से 'मीडिया और साहित्य' विषय पर साहित्य मंच कार्यक्रम का आयोजन
7 नवंबर 2015	अगरतला	बाङ्ला लेखिकाओं के साथ 'नारी चेतना' कार्यक्रम का आयोजन
8 नवंबर 2015	अगरतला	पूर्वी क्षेत्रीय भाषाओं के लेखकों के साथ 'उत्तरपूर्व - काव्योत्सव' का आयोजन
8 नवंबर 2015	कटक	सरला साहित्य संसद के सहयोग से 'ओड़िया उपन्यास' विषय पर कटक, उड़ीसा में संगोष्ठी का आयोजन
9 नवंबर 2015	अगरतला	मणीपुर साहित्य परिषद, त्रिपुरा के सहयोग से 'मणीपुर से इतर मणीपुरी लेखन : त्रिपुरा के विशेष संदर्भ में' विषयक परिसंवाद का आयोजन
9-10 नवंबर 2015	शिलाँग	अंग्रेज़ी विभाग, नार्थ इस्टर्न हिल यूनिवर्सिटी के सहयोग से 'कहानी वाचन तथा महिला लेखन' विषयक परिसंवाद का शिलाँग, मेघालय में आयोजन
13-14 नवंबर 2015	बरहामपुर	ओड़िया विभाग, बरहामपुर विश्वविद्यालय के सहयोग से 'ओड़िया की लोक संस्कृति' विषय पर संगोष्ठी का आयोजन
13-15 नवंबर 2015	शिलाँग	उत्तर-पूर्व लघु कथाओं का पंजाबी में अनुवाद कार्यशाला का शिलाँग, मेघालय में आयोजन
14-22 नवंबर 2015	दिल्ली	राष्ट्रीय पुस्तक सप्ताह 2015 का दिल्ली समेत अकादेमी के क्षेत्रीय कार्यालयों बंगलूरु, कोलकाता, मुंबई तथा उपकार्यालय चेन्नई में निम्न साहित्यिक कार्यक्रमों का आयोजन
	बंगलूरु	17 नवंबर 2015 को सिटी सेंट्रल लाइब्रेरी, हंपीनागरा, बंगलूरु में साहित्य मंच के अंतर्गत 'पुस्तक संस्कृतिः एक संवाद' कार्यक्रम का आयोजन
	त्रिवेंद्रम	15, 17 तथा 19 नवंबर 2015 को त्रिवेंद्रम में अकादेमी द्वारा प्रतिष्ठित लेखकों पर निर्मित वृत्त चित्र का प्रदर्शन
	त्रिवेंद्रम	16 नवंबर 2015 को मलयाळम् कवियों के साथ 'काव्य गोष्ठी' का आयोजन

	त्रिवेंद्रम	18 नवंबर 2015 को मलयाळम् महिला लेखिकाओं के साथ 'नारी चेतना' कार्यक्रम का आयोजन
	त्रिवेंद्रम	20 नवंबर 2015 को 'मैं क्यों लिखता हूँ' विषय पर पैनल चर्चा कार्यक्रम का आयोजन
14 नवंबर 2015	मुंबई	बाल साहित्य पुरस्कार 2015 अर्पण समारोह का आयोजन
14 नवंबर 2015	बरहामपुर	कलिंग साहित्य समाज, बरहामपुर के सहयोग से उत्कल आश्रम ओपेन थियेटर, बरहामपुर, जिला बंजम, ओड़िशा में 'लोक : विविध स्वर' के अंतर्गत 'प्रहलाद नाटक' कार्यक्रम का आयोजन
14 नवंबर 2015	गणपवरम	रुद्रराजु फाउंडेशन के सहयोग से 'पलगुम्मी पदमाराजु जन्मशतवार्षिकी' परिसंवाद कार्यक्रम का गणपवरम, पश्चिमी गोदावरी ज़िला, आंध्र प्रदेश में आयोजन
14 नवंबर 2015	कोलकाता	'संताली बाल साहित्य' परिसंवाद का आयोजन, इस अवसर पर एक अकादेमी द्वारा चार संताली लेखकों पर निर्मित वृत्त चित्र की प्रदर्शनी भी की गई
15 नवंबर 2015	मुंबई	बाल साहित्य पुरस्कार से अलंकृत लेखकों के साथ 'लेखक सम्मिलन' कार्यक्रम का आयोजन जिसमें पुरस्कृत लेखकों ने अपने रचनात्मक अनुभव साझा किए
15 नवंबर 2015	इलेरु	इलेरु, आंध्र प्रदेश में साहिथि मिथलुरु, इलेरु के सहयोग से 'बुची बाबू जन्मशतवार्षिकी' संगोष्ठी का आयोजन
15-16 नवंबर 2015	मुंबई	बाल साहित्य पुरस्कार अर्पण समारोह के अवसर पर 'बच्चों के लिए लेखन : नई चुनौतियाँ' विषय पर राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन
18 नवंबर 2015	नई दिल्ली	नई दिल्ली स्थिति त्रिवेणी कला संगम में 'युवा पुरस्कार अर्पण समारोह' का आयोजन
19 नवंबर 2015	नई दिल्ली	युवा पुरस्कार से अलंकृत लेखकों के साथ 'लेखक सम्मिलन' कार्यक्रम का आयोजन
19-20 नवंबर 2015	नई दिल्ली	युवा पुरस्कार अर्पण समारोह के अवसर पर 'अखिल भारतीय लेखक महोत्सव - अविष्कार' का आयोजन
19-25 नवंबर 2015		सांस्कृतिक विनिमय के अंतर्गत तीन सदस्यी रूसी लेखकों का भारत भ्रमण
20 नवंबर 2015	माहे	श्री नारायण कॉलेज ऑफ़ एजूकेशन, माहे, तमिलनाडु के सहयोग से 'आधुनिक तमिळ तथा मलयाळम् कवियों की तुलना' विषय पर परिसंवाद का आयोजन
20 नवंबर 2015	मुंबई	मुंबई स्थित क्षेत्रीय लेखकों के साथ रूसी लेखक प्रतिनिधिमंडल का साहित्यिक मिलन कार्यक्रम
21 नवंबर 2015	मुंबई	मरूई लिट्रेरी एंड कल्चरल आर्गनाइज़ेशन के सहयोग से 'आज का महिला लेखन : दिल्ली चैप्टर' विषय पर परिसंवाद कार्यक्रम का आयोजन
22 नवंबर 2015	बरहामपुर	विकासम, बरहामपुर, ओड़िशा के सहयोग से 'कलिंग आंध्र में तेलुगु साहित्य का वर्तमान रुझान' विषय पर परिसंवाद कार्यक्रम का आयोजन
23 नवंबर 2015	नई दिल्ली	दिल्ली स्थित क्षेत्रीय लेखकों के साथ रूसी लेखक प्रतिनिधिमंडल का साहित्यिक मिलन कार्यक्रम
24 नवंबर 2015	तेजपुर	'पूर्वी क्षेत्रीय भाषाओं में आलोचना की आधुनिक प्रवृत्तियाँ' विषय पर तेजपुर विश्वविद्यालय, तेजपुर, असम में संगोष्ठी का आयोजन
25 नवंबर 2015	नगाँव	महापुरूष श्रीमंत संकरादेव विश्वविद्यालय के सहयोग से 'असम का कठपुतली खेल' विषय पर 'लोक : विविध स्वर' कार्यक्रम का आयोजन
25-26 नवंबर 2015	पुरुलिया	श्रीजन उत्सव के सहयोग से पुरुलिया, पश्चिमी बंगाल में 'लोक : विविध स्वर' कार्यक्रम का आयोजन
25-29 नवंबर 2015	मारिशस	'विश्व उर्दू सम्मेलन', 26-28 नवंबर 2015, मारिशस में सम्मिलित होने के लिए 6 सदस्यीय भारतीय लेखक प्रतिनिधिमंडल की मारिशस यात्रा

27 नवंबर 2015	डिब्रूगढ़	मिलन ज्योति संघ के सहयोग से 9वें पुस्तक मेला के अवसर पर डिब्रूगढ़, असम में 'कंचन बरुआ' संगोष्ठी का आयोजन
27-28 नवंबर 2015	दिल्ली	भाई वीर सिंह साहित्य सदन, दिल्ली के सहयोग से 'बाला बलवंत जन्मशतवार्षिकी' संगोष्ठी का आयोजन
28 नवंबर 2015	भोपाल	अंग्रेज़ी विभाग, महारानी लक्ष्मीबाई गवर्नमेंट गर्ल पी.जी. ऑटोनोमस कॉलेज, भोपाल के सहयोग से 'यात्रा लेखन और भारत की अमूर्त विरासत' विषय पर परिसंवाद का आयोजन
28 नवंबर 2015	गुवाहाटी	अकादेमी द्वारा बोडो विभाग, कॉटन कॉलेज, गुवाहाटी और आलप - ए प्लेटफ़ार्म ऑफ़ टीचर्स फ़ॉर थिंकिंग के संयुक्त तत्त्वावधान में 'बोडो और असमिया : पारस्परिक प्रभाव तथा भाषा, साहित्य एवं संस्कृति के संबंध' विषय पर संगोष्ठी का आयोजन
28 नवंबर 2015	बंगळूरु	'इक्कीसवीं सदी में उर्दू नज़्म' विषय पर परिसंवाद का आयोजन
28 नवंबर 2015	मुंबई	लब्धप्रतिष्ठ सिंधी लेखक श्री लक्षमण दूबे के साथ 'लेखक से भेंट' कार्यक्रम का आयोजन
29 नवंबर 2015	शिलॉंग	मणीपुरी साहित्य परिषद, मेघालय के सहयोग से 'मणिपुर से इतर मणिपुरी भाषा की प्रवृत्तियाँ' विषय पर साहित्य मंच कार्यक्रम का आयोजन
29 नवंबर 2015	बोलगढ़	नंदीघोष के सहयोग से 'भक्तचरण दास' विषय पर बोलगढ़ (खुर्दा), ओड़िशा में संगोष्ठी का आयोजन
29 नवंबर 2015	भागलपुर	मरवाड़ी कॉलेज, भागलपुर, बिहार के सहयोग से 'मैथिली साहित्य में राज्य और आलोचना की उम्मीद' विषय पर परिसंवाद का आयोजन
29 नवंबर 2015	भागलुपुर	मरवाड़ी कॉलेज, भागलपुर, बिहार के सहयोग से मैथिली की प्रतिष्ठित लघुकथा लेखिकाओं के साथ 'अस्मिता' कार्यक्रम का आयोजन
1 दिसंबर 2015	सहरसा	एम.एल.टी. कॉलेज, सहरसा, बिहार के सहयोग से 'मैथिली संस्कार गीत' विषय पर परिसंवाद का आयोजन
1 दिसंबर 2015	सहरसा	एम.एल.टी. कॉलेज, सहरसा, बिहार के सहयोग से युवा मैथिली लेखकों के साथ 'युवा साहिति' कार्यक्रम का आयोजन
2 दिसंबर 2015	नई दिल्ली	टोकियो यूनिवर्सिटी, जापान से आए एमेरिटस प्रोफ़ेसर प्रो. तोशियो तनाका के साथ दिल्ली स्थित भारतीय लेखकों के साथ साहित्यिक मिलन कार्यक्रम का आयोजन
2 दिसंबर 2015	मुंबई	'कोंकणी काव्य में गीत का योगदान' विषय पर परिसंवाद का आयोजन
4 दिसंबर 2015	कोलकाता	लब्धप्रतिष्ठ बाङ्ला लेखक अतिन बंद्योपाध्याय के साथ 'लेखक से भेंट' कार्यक्रम का आयोजन
4 दिसंबर 2015	तुमकूर	डॉ. डी.वी. गुंडप्पा सेंटर फ़ॉर कन्नड स्टडीज़, तुमकूर यूनिवर्सिटी, तुमकूर के सहयोग से 'भारतीय काव्य मीमांसा' विषय पर साहित्य मंच कार्यक्रम का आयोजन
5 दिसंबर 2015	जमशेदपुर	जाहेर थान कमिटी, जमशेदपुर के सहयोग से युवा संताली लेखकों के साथ 'मुलाकात' कार्यक्रम का आयोजन
5 दिसंबर 2015	जमशेदपुर	जाहेर थान कमिटी, जमशेदपुर के सहयोग से 'संताली रचना पाठ' (काव्य तथा लघु कथा) कार्यक्रम का आयोजन
5 दिसंबर 2015	जमशेदपुर	जाहेर थान कमिटी, जमशेदपुर के सहयोग से प्रसिद्ध संताली लेखक श्री मदन मोहन सोरेन के साथ 'कवि अनुवादक' कार्यक्रम का आयोजन
5 दिसंबर 2015	नई दिल्ली	सरस्वतीचंद्र (पाँच खण्डों में) पुस्तक का विमोचन

6 दिसंबर 2015	कोच्चि	पूर्वोत्तर एवं दक्षिण क्षेत्र के प्रतिष्ठित कवियों के साथ 'पूर्वोत्तर एवं दक्षिण काव्योत्सव' कार्यक्रम का आयोजन
6 दिसंबर 2015	जमशेदपुर	मिथिला संस्कृत परिषद, जमशेदपुर, झारखंड के सहयोग से 'मैथिली साहित्य में बदलती सामाजिक चेतना और मानवीय मूल' विषय पर परिसंवाद कार्यक्रम का आयोजन
6 दिसंबर 2015	जमशेदपुर	मिथिला संस्कृत परिषद, जमशेदपुर, झारखंड के सहयोग से 'मैथिली कवि सम्मिलन' का आयोजन
9 दिसंबर 2015	पोलाची, तमिलनाडु	अरुतलेश्वर, डॉ. एन. महालिंगम ट्रांसलेशन इंस्टीट्यूट के सहयोग से 'अनुवाद में शिल्प एवं चुनौतियाँ' विषय पर परिसंवाद का आयोजन
12 दिसंबर 2015	करिकुडी, तमिलनाडु	करिकुडी कंबन कड्म के सहयोग से 'कम्बा रामायण की आलोचना' विषय पर साहित्य मंच कार्यक्रम का आयोजन
12 दिसंबर 2015	बेंगळूरु	अट्टा गलट्टा, बेंगळूरु के सहयोग से 'साहित्य मंच' कार्यक्रम के अधीन अमरीका से पधारे कवि डॉ. नील हाल के साथ कार्यक्रम
12-13 दिसंबर 2015	जम्मू	जम्मू एवं कश्मीर एकेडमी ऑफ़ आर्ट, कल्चर एवं लैंग्वेज़ेज़ के सहयोग से 'डोगरी कविता' विषय पर संगोष्ठी का आयोजन
14 दिसंबर 2015	नई दिल्ली	बैंगकॉक, थाइलैंड से पधारे रॉयल सोसायटी ऑफ़ थाइलैंड के 27 सदस्यीय प्रतिनिधिमंडल के साथ सांस्कृतिक विनिमय कार्यक्रम का आयोजन
15 दिसंबर 2015	बेंगळूरु	हिंदी विभाग, जैन विश्वविद्यालय के सहयोग से 'साहित्य मंच' कार्यक्रम का आयोजन
19 दिसंबर 2015	मुंबई	कन्नड विभाग, मुंबई विश्वविद्याय के सहयोग से कन्नड की प्रतिष्ठित महिलाओं के साथ 'नारी चेतना' कार्यक्रम का आयोजन
20 दिसंबर 2015	बेलगाम, महाराष्ट्र	उजवाड़ परिवार, बेलगाम के सहयोग से 'साहित्य मंच' कार्यक्रम का आयोजन
20 दिसंबर 2015	बेलगाम, महाराष्ट्र	उजवाड़ परिवार, बेलगाम के सहयोग से 'लोक : विविध स्वर' कार्यक्रम का आयोजन
21-23 दिसंबर 2015	औरंगाबाद	दलित कविता पर आधारित उर्दू अनुवाद कार्यशाला का आयोजन
23 दिसंबर 2015	औरंगाबाद	औरंगाबाद, महाराष्ट्र में उर्दू कवि गोष्ठी का आयोजन
26 दिसंबर 2015	नासिक	इंस्टीट्यूट ऑफ़ नॉलेज इंजीनियरिंग, नासिक एवं आर्ट, साईंस एंड कमर्स कॉलेज, कलवान के संयुक्त तत्त्वावधान में 'बाल साहित्य : प्रकृति एवं चुनौतियाँ' विषय पर परिसंवाद का आयोजन
27 दिसंबर 2015	गुवाहाटी	'सत्येंद्र शर्मा जन्मशतवार्षिकी' संगोष्ठी का आयोजन
29 दिसंबर 2015	बेंगळूरु	डॉ. बी.आर. अम्बेडकर स्टडी एंड रिसर्च सेंटर, बेंगळूरु विश्वविद्यालय, बेंगळूरु के सहयोग से 'दक्षिण भारत का दलित लेखन' विषय पर परिसंवाद का आयोजन
29 दिसंबर 2015	जालना, महाराष्ट्र	श्रीमती दानकुँवर महिला महाविद्यालय के सहयोग से 'मराठी में कथात्मक साहित्य' विषय पर परिसंवाद का आयोजन
25 दिसंबर 2015-5 जनवरी 2016	कोलकाता	अकादेमी द्वारा आनंद कुमार स्वामी महत्तर सदस्यता से सम्मानित प्रो. जियांग जिंगकुई का कोलकाता भ्रमण, इस अवसर पर निम्नलिखित कार्यक्रम आयोजित किए गए 29 दिसंबर 2015 को कोलकाता स्थित प्रतिष्ठित लेखकों और बुद्धिजीवियों के साथ प्रो. जियांग जिंगकुई से भेंट 30 दिसंबर 2015 को रवींद्र भारती विश्वविद्यालय, कोलकाता में प्रो. जियांग जिंगकुई के साथ साहित्यिक मिलन कार्यक्रम

प्रधान कार्यालय
रवीन्द्र भवन, 35 फ़ीरोज़शाह मार्ग
नई दिल्ली 110 001
दूरभाष : 011-23386626/27/28
फ़ैक्स : 091-11-23382428
ई-मेल : secretary@sahitya-akademi.gov.in

विक्रय कार्यालय
स्वाति, मंदिर मार्ग
नई दिल्ली 110 001
दूरभाष : 011-23745297, 23364204
फ़ैक्स : 091-11-23364207
ई-मेल : ds.sales@sahitya-akademi.gov.in

मुंबई क्षेत्रीय कार्यालय
172, मुंबई मराठी ग्रंथ संग्रहालय मार्ग
दादर, मुंबई 400 014
दूरभाष : 022-24135744, 24131948
फ़ैक्स : 091-22-24147650
ई-मेल : rs.rom@sahitya-akademi.gov.in

कोलकाता क्षेत्रीय कार्यालय
4, डी.एल. खान मार्ग
कोलकाता 700 025
दूरभाष : 033-24191683, 24191705/06
फ़ैक्स : 091-33-24191684
ई-मेल : ae.rok@sahitya-akademi.gov.in

बेंगळूरु क्षेत्रीय कार्यालय
सेंट्रल कॉलेज परिसर
डॉ बी.आर.अम्बेडकर वीथी, बेंगळूरु 560 001
दूरभाष : 080-22245152
फ़ैक्स : 091-80-22121932
ई-मेल : rs.rob@sahitya-akademi.gov.in

चेन्नै कार्यालय
मेन बिल्डिंग, गुना बिल्डिंग (द्वितीय तल), 443 (304)
अन्नासलाई, तेनामपेट, चेन्नै 600 018
दूरभाष : 044-24311741, 24354815
फ़ैक्स : 091-44-24311741
ई-मेल : po.rob@sahitya-akademi.gov.in

फेसबुक : http://www.facebook.com/SahityaAkademi
वेबसाइट : http://www.sahitya-akademi.gov.in

खुर्शीद आलम द्वारा संपादित तथा के.श्रीनिवासराव, सचिव द्वारा
साहित्य अकादेमी, रवींद्र भवन, 35 फ़ीरोज़शाह मार्ग, नई दिल्ली 110 001 के लिए प्रकाशित
एवं विकास कंप्यूटर एंड प्रिंटर्स, दिल्ली द्वारा मुद्रित